हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

अलग खबर

40 डिग्री में नंगे पांव, आसमां से बरसती आग में भी नहीं ठिठके स्कूल की ओर बढ़ते कदम

स्कूल और आंगनबाड़ी के छोटे बच्चों का उठानी पड़ रही परेशानी

सुबह 9 बजे के बाद गर्म हवा और तेज धूप से घर से बाहर निकलना मुश्किल होता जा रहा

हसन खान ▶▶| मैनपुर

अप्रैल प्रारंभ होते ही सूर्य अपना रौद्र रूप दिखाने लगा है। सुबह 9 बजे के बाद गर्म हवा और तेज धूप से घर से बाहर निकलना मुश्किल होता जा रहा है। ऐसे विकट परिस्थियों में भी मैनपुर वनांचल क्षेत्र में सैकड़ो नौनिहालों का यह हौसला ही है कि वह नंगे पांव स्कूल-आंगनबाड़ियों की ओर कूच कर रहे हैं। उनके नंगे पांव ठिठक नहीं रहे। इन दिनों प्राथमिक ▶▶| शेष पेज 4 पर

क्या कहते है अधिकारी

अभी आंगनबाड़ी का संचालन पुरानी समय सारणी केअनुसार सुबह 9.30 से 3 बजे तक किया जा रहा है। गर्मी बढ़ रही है, समय में परिवर्तन के लिए पत्र लिखा गया है। पूरे जिले मे 60 प्रतिशत आंगनबाड़ी केन्द्रों मे बिजली और पंखे की सुविधाएं हैं लेकिन वह पर्याप्त नही है बांकि जानकारी आंकड़ा देखकर बता पाउंगा।

अशोक कुमार पांडेय
जिला कार्यक्रम अधिकारी, गरियाबंद

जगदलपुर

तपती दोपहरी में नंगे पैर स्कूल जाना मजबूरी

बस्तर अंचल के ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी स्कूल के गरीब बच्चे नंगे पैर स्कूल आते-जाते हैं। परेशानी गर्मी के समय ज्यादा होती है, जब पक्की डामर सड़क से बच्चों को गुजरना पड़ता है। मंगलवार को लोहण्डीगुड़ा ब्लाक के चित्रकोट के सरकारी स्कूल से निकल रहे बच्चे नंगे पैर थे। सरकार मध्यान्ह भोजन और कापी, किताब, ड्रेस तो उपलब्ध करा रही है, लेकिन पैर में पहनने के लिए चप्पल नहीं दे रही है। बच्चों ने सकुचाते हुए हरिभूमि से कहा कि चप्पल खरीदने के लिए पैसा नहीं है।

बच्चे 10 सेकंड भी खड़े नहीं हो पाते

रसेला (गरियाबंद)। प्राइमरी व मिडिल स्कूल के बच्चे सुबह स्कूल जाते हैं, लेकिन छुट्टी होने के बाद 11:30 बजे नंगे पैर घर आते हैं। इस दौरान सड़क पर बच्चे 10 सेकंड भी खड़े नहीं हो पाते। ज्ञात हो सभी स्कूलों में 1 अप्रैल से 7:30 से 11:30 बजे तक स्कूल लग रहा है। ▶▶| शेष पेज 4 पर

INDIAN PREMIER LEAGUE 2024 स्कोर बोर्ड

लखनऊ 181/5 VS आरसीबी 153/10

आरसीबी को 28 रन से हराया

3 विकेट, मयंक यादव
प्लेयर ऑफ द मैच

आज का मैच

केकेआर VS दिल्ली

समय : शाम 7.30 बजे

खबर संक्षेप

आईपीएल के दो मैच का कार्यक्रम बदला

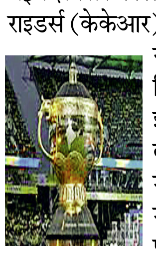

नई दिल्ली। कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के राजस्थान रॉयल्स के खिलाफ इंडियन प्रीमियर लीग के घरेलू मैच को मंगलवार को पूर्व निर्धारित कार्यक्रम से एक दिन 16 अप्रैल को कराने का फैसला किया गया। गुजरात टाइटंस और दिल्ली कैपिटल्स के बीच अहमदाबाद में होने वाला मैच अब 17 अप्रैल 2024 को होगा।

भारत के दो मुकाबलों के अतिरिक्त टिकटों की बिक्री गुरुवार से

दुबई। आयरलैंड और अमेरिका के खिलाफ भारत के मुकाबलों समेत न्यूयॉर्क में होने वाले छह टी20 विश्व कप मैचों के लिए अतिरिक्त टिकट गुरुवार से बिक्री के लिए उपलब्ध होंगे। अपने सभी ग्रुप मैच अमेरिका में खेलने वाला भारत 12 जून को मेजबान टीम से भिड़ने से पहले पांच जून को आयरलैंड के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगा। प्रशंसक न्यूयॉर्क के नासाउ काउंटी अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में छह मैचों के लिए अतिरिक्त सीमित टिकट खरीदकर विश्व कप का हिस्सा बन सकते हैं जिसमें पांच जून को भारत बनाम आयरलैंड और 12 जून को भारत के खिलाफ अमेरिका का मुकाबला भी शामिल है।

वीवीपैट पर्चियों की पूरी गिनती की मांग

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव में सभी 'वीवीपैट' पर्चियों की गिनती का अनुरोध करने वाली याचिका पर निर्वाचन आयोग और केंद्र सरकार को नोटिस जारी कर जवाब मांगा। इस समय वीवीपीएटी पर्चियों के माध्यम से किसी भी पांच चयनित ईवीएम का सत्यापन किया जाता है। वोट सत्यापन प्रणाली है। जो मतदाता को यह देखने की अनुमति देती है कि उसका वोट उसी उम्मीदवार को गया है या नहीं, जिसे उसने वोट दिया है।

7 घंटे तक चली ताबड़तोड़ कार्रवाई, अब तक शवों की शिनाख्त नहीं

गंगालूर के लेण्ड्रा जंगल में मुठभेड़ मारे गए 1 महिला समेत 10 नक्सली

छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित बीजापुर जिले में सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में 10 नक्सलियों को मार गिराया है। गंगालूर थाना क्षेत्र में नक्सली गतिविधि की सूचना मिलने के बाद सोमवार को सुरक्षाबलों को नक्सल विरोधी अभियान में रवाना किया गया था। दल में डीआरजी, एसटीएफ और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के कोबरा बटालियन के जवान शामिल थे। इस दौरान बड़ी मात्रा में हथियार और नक्सल साहित्य बरामद किया गया है।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर/बीजापुर

बीजापुर के गंगालूर थाना क्षेत्र स्थित लेण्ड्रा के जंगल में सुबह 6 बजे से मुठभेड़ शुरू हुई। इसके बाद सुरक्षा बलों ने एक महिला समेत 10 नक्सलियों के शव और भारी मात्रा में अत्याधुनिक हथियार व नक्सल सामग्री बरामद किए हैं। यह मुठभेड़ 7 घंटे से अधिक समय तक चली। मारे गए अधिकांश नक्सली पीएलजीए कंपनी नम्बर दो के मेंबर बताए जा रहे है, हालांकि देर शाम ▶▶| शेष पेज 4 पर

- ऑटोमेटिक एलएमजी, थ्री नॉट थ्री रायफल, बीजीएल सेल लांचर व अन्य हथियार बरामद

आपॅरेशन में शामिल सभी जवान सुरक्षित

बताया जा रहा है कि लेण्ड्रा मुठभेड़ में मारे गए नक्सलियों में पीएलजीए कंपनी नम्बर दो के शीर्ष लाखों के इनामी नक्सली सदस्य भी शामिल है। अब तक 10 नक्सलियों के शव बरामद कर लिया गया है और इनकी संख्या में इजाफा होने की संभावना है। मुठभेड़ में मारे गए सभी नक्सलियों के शव बरामद कर लिए हैं और उन्हें बीजापुर मुख्यालय लाने की तैयारी की जा रही है।

एक दिन पूर्व सुकमा जिले में मारे गए माओवादी की हुई शिनाख्त

इससे पूर्व सोमवार को सुकमा व तेलंगाना राज्य के सीमावर्ती क्षेत्र में डीआरजी, बस्तर फाइटर्स व 208 कोबरा की संयुक्त पार्टी ने तेलंगाना राज्य के सीमावर्ती ग्राम पेसेलपाड़ एवं दोरामंगू के मध्य जंगल पहाड़ी में माओवादियों के बीच मुठभेड़ हुई थी। इसमें एक पुरुष माओवादी के शव के अलावा बीजीएल रायफल पिट्ठू, स्केनर सेट, बीजीएल सेल, बीजीएल कॉर्ट्रिज, इलेक्ट्रिक डेटोनेटर व अन्य नक्सली सामग्री बरामद किया गया था। मुठभेड़ में मारे गए माओवादी की ▶▶| शेष पेज 4 पर

2024 में अब तक 43 नक्सली मारे गए, 181 गिरफ्तार

आईजी सुंदरराज पी ने बताया कि नक्सलियों के खिलाफ कार्रवाई में इस वर्ष अब तक 43 नक्सली को मुठभेड़ में ढेर किया जा चुका है। वहीं 181 नक्सलियों की गिरफ्तारी हुई है। प्रतिबंधित एवं गैर कानूनी सीपीआई माओवादी संगठन के विरुद्ध प्रभावी कार्रवाई करने के उद्देश्य से स्थानीय पुलिस बल तथा केन्द्रीय अर्द्धसैनिक बल द्वारा विगत दिनों में बेहतर तालमेल एवं रणनीति के साथ काम किया जा रहा है। शासन की योजनाओं व अलग अलग जिलों में अलग अलग नाम से चलाए ▶▶| शेष पेज 4 पर

22 जवानों की हुई थी शहादत

गौरतलब है कि इससे पूर्व 3 अप्रैल 2021 को बीजापुर और सुकमा की सीमा पर नक्सलियों के खिलाफ बड़ा ऑपरेशन लॉन्च किया गया था। कोबरा 210 बटालियन व जिला बल के जवान इस ऑपरेशन से वापस लौट रहे थे। इसी दौरान टेकलगुड़ा गांव में नक्सलियों ने जवानों को एम्बुश में फंसाकर ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। नक्सलियों के इस हमले में कोबरा 210 बटालियन व जिला पुलिस के 22 जवान शहीद हो गए थे। वर्ष 2021 से पहले कोबरा बटालियन को इतना बड़ा नुकसान पहले कभी बस्तर में नहीं हुआ था। जवानों की शहादत के बाद नक्सलियों का मनोबल आसमान में पहुंच गया था, क्योंकि नक्सलियों के खिलाफ कोबरा बटालियन को सबसे मजबूत फोर्स मानी जाती रही है।

इधर, मप्र में भी बड़ी सफलता

एक महिला नक्सली सहित 43 लाख के इनामी दो नक्सलियों को किया ढेर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बालाघाट

मप्र पुलिस ने नक्सल विरोधी अभियान में अंतर्गत मंगलवार को बड़ी सफलता हासिल की है। नक्सल विरोधी अभियान के तहत बालाघाट के जंगल में सर्च अभियान के दौरान एक महिला नक्सली सहित 43 लाख रुपए के दो नक्सलियों को मुठभेड़ में ढेर कर दिया। मारे गए नक्सलियों से एक एके-47 एवं एक 12 बोर राइफल बरामद की गई। वहीं बालाघाट में नक्सल गतिविधियों की शुरुआत से आज तक के इतिहास में पहली बार नक्सलियों से बीजीएल शेल बरामद किए गए। इनसे दो बीजीएल शेल, वायरलेस सेट, दो रेडियो भी बरामद किए गए। नक्सलियों से यह मुठभेड़ लांजी थाना क्षेत्र के पितकोना-केरझरी के जंगल में हुई। एनकाउंटर में मारी गई ▶▶| शेष पेज 4 पर

जवानों की मुस्तैदी से पुलिस की अपनी अलग साख बनीः सीएम

बालाघाट एनकाउंटर में 2 इनामी नक्सलियों को मार गिराने पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पुलिस जवानों को बधाई दी। उन्होंने कहा कि 29 लाख रुपए के इनामी डिवीजनल कमांडर को मारा जाना अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

चुनावी संग्राम में गरजे नेता

कांकेर में सीएम साय की चुनावी सभा, राजनांदगांव में भूपेश की नामांकन रैली

लोकसभा चुनाव को लेकर छत्तीसगढ़ में सियासी गर्मी तेज हो गई है। कांकेर में आयोजित सभा में मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने । इधर, राजनांदगांव प्रत्याशी पूर्व सीएम भूपेश बघेल की नामांकन रैली में शामिल होने पहुंचे नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरण दास महंत ने दल बदलने वाले नवीन जिंदल को आड़े हाथों लिया।

महंत बिफरे, कहा : बुरे समय में जो पार्टी छोड़ रहे उनकी न हो कभी वापसी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| राजनांदगांव

प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और राजनांदगांव लोकसभा के कांग्रेस प्रत्याशी भूपेश बघेल की नामांकन रैली में यहां शामिल होने पहुंचे नेता प्रतिपक्ष डॉ. चरण दास महंत ने कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल होने वाले नेताओं पर जमकर भड़ास निकाली। उन्होंने अपने संबोधन के दौरान कहा कि जो लोग पार्टी के बुरे समय में साथ छोड़कर दूसरे दलों में जा रहे हैं, उन्हें अच्छा समय आने पर पार्टी में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। श्री महंत ने उद्योगपति एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता रहे नवीन जिंदल को आड़े हाथों लेते कहा कि ऐसे लोगों को ....। जनसभा को संबोधित करते नेता प्रतिपक्ष डॉ. महंत ने यह भी कहा कि भाजपा के लोग ▶▶| शेष पेज 4 पर

नेता प्रतिपक्ष चरणदास ने नवीन जिंदल को भी लिया आड़े हाथ

हरिभूमि खास

ऐसी भाषा का उपयोग गलत

श्री महंत जिस पद पर हैं, उन्हें ऐसी भाषा का उपयोग करना शोभा नहीं देता। राजनीति में मर्यादा और सूचिता का ध्यान रखना चाहिए। रही बात कांग्रेस नेताओं के भाजपा प्रवेश की तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत संकल्प से प्रभावित होकर पूरा देश उनके साथ जुड़ रहा है।

-मधुसूदन यादव, पूर्व सांसद

कांग्रेसियों ने 5 साल तक प्रदेश की जनता के साथ किया धोखा

मुख्यमंत्री विष्णुदेव ने भरी हुंकार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कांकेर

कांकेर में आयोजित सभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि यह चुनाव पीएम नरेंद्र मोदी का चुनाव है। नरेंद्र मोदी 10 साल तक प्रधानमंत्री के रूप में सबका साथ सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास। इसको मूल मंत्र मानते हुए देश के गांव, गरीब, किसान, मजदूर सबका विकास किया है। सभी चाहते हैं कि मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बने। आप लोगों को कांकेर से भोजराज नाग को जिताकर भेजना होगा। भोजराज नाग सरपंच ▶▶| शेष पेज 4 पर

कांग्रेस के बड़े बड़े नेता और अधिकारी जेल में

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि शराब, रेत में भ्रष्टाचार, कांग्रेस के बड़े बड़े नेता और जो अधिकारी सहयोग किए, वो आज जेल में है। एक साल बाद भी उनकी बेल नहीं हो रही है। सब जेल में है और दुर्भाग्य की बात यह है कि 5 साल तक मुख्यमंत्री रहे भूपेश बघेल उनके ऊपर भी एफआईआर हुई है। महादेव सट्टा एप जुए की लत में प्रदेश के युवाओं को लगा दिया और ▶▶| शेष पेज 4 पर

चुनावी बॉन्ड से जुड़े एसओपी के खुलासे से एसबीआई का इंकार

नई दिल्ली। एसबीआई ने उसकी शाखाओं से जारी किए गए चुनावी बॉन्ड की बिक्री और उन्हें भुनाने के लिए अपनी मानक संचालन प्रक्रिया का खुलासा करने से इंकार कर दिया है। एसबीआई ने एक आरटीआई के जवाब में व्यावसायिक गोपनीयता के तहत दी गई छूट का हवाला देते हुए यह जानकारी देने से मना किया। सूचना के अधिकार कानून के तहत दायर एक आवेदन में अंजलि भारद्वाज ने चुनावी बॉन्ड की बिक्री और उन्हें भुनाने के लिए एसओपी का विवरण मांगा था।

एसबीआई का ऐसा जवाब

एसबीआई की तरफ से दिए गए जवाब में कहा गया है, अधिकृत शाखाओं को इलेक्टोरल बॉन्ड स्कीम 2018 की बिक्री और रिडेंप्शन के लिए समय समय पर जारी किए गए स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर इंटरनल गाइडलाइंस हैं, जो सिर्फ आंतरिक सर्कुलेशन के लिए हैं।

वाहनों की जांच के दौरान जब्ती

फ्लाइंग स्क्वाड ने गाड़ी से जब्त किए 50 लाख कैश

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रायगढ़

लोकसभा निर्वाचन-2024 हेतु प्रभावशील आदर्श आचार संहिता में रायगढ़ की फ्लाइंग स्क्वाड टीम ने मंगलवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए वाहन चेकिंग के दौरान मेडिकल कालेज रोड से एक इनोवा क्रिस्टा से 50 लाख रुपए नकद अवैध परिवहन करते हुए जब्त किया गया। वाहन में सवार लोगों से उक्त राशि के बारे में जानकारी मांगे जाने पर कोई संतोषप्रद जवाब नहीं दिया गया। मामला इनकम टैक्स डिपार्टमेंट को सौंप दिया गया है।

इस संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार 2 अप्रैल को लोकसभा निर्वाचन के उडऩदस्ता टीम दल क्रमांक 05 द्वारा चेकिंग के दौरान मेडिकल ▶▶| शेष पेज 4 पर

आयकर विभाग को सौंपा प्रकरण

बताया जा रहा है कि रकम के बारे में पूछताछ करने पर कोई संतोषप्रद जवाब नही मिला। कार्रवाई में उडऩदस्ता दल के प्रभारी अधिकारी सहकारी निरीक्षक अविनाश कश्यप, सह प्रभारी अरूण कुमार साव, गौतम ठाकुर शामिल थे। प्रकरण आयकर विभाग को सौंपा गया है।

विस्तारा को नागर विमानन महानिदेशालय ने दिए निर्देश

उड़ान रद्द हो या देरी, हर दिन देनी होगी जानकारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने विस्तारा को उड़ान रद्द होने के साथ-साथ देरी पर दैनिक रूप से जानकारी देने को कहा है। साथ ही नियामक ने यात्रियों की सुविधा के लिए स्थिति पर करीबी नजर रखने की बात भी कही। डीजीसीए ने कहा कि यात्रियों को कम से कम असुविधा हो, यह सुनिश्चित करने के लिए वह विस्तारा के उड़ान रद्द करने के मामलों पर करीबी नजर रख रहा है। एक सूत्र के अनुसार, एयरलाइन ने मंगलवार को 50 से अधिक उड़ानें रद्द की हैं।

सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि कुछ कमांडर के साथ-साथ इसके ए320 बेड़े के प्रथम अधिकारी भी नए अनुबंधों में वेतन संशोधन की मांग को लेकर विरोध जताते ▶▶| शेष पेज 4 पर

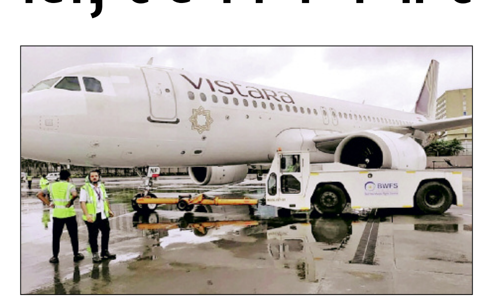

विस्तारा और एयर इंडिया का विलय

विस्तारा की एयर इंडिया के साथ विलय की प्रक्रिया जारी है। विस्तारा और एयर इंडिया के पायलट के बीच समानता लाने वाले नए अनुबंध मौजूदा विलय प्रक्रिया के हिस्से के रूप में पेश किए गए हैं। विस्तारा, टाटा समूह और सिंगापुर एयरलाइंस का संयुक्त उद्यम है। विस्तारा के ए320 बेड़े के कई प्रथम अधिकारी पिछले कुछ सप्ताह में बीमार होने की सूचना दे रहे हैं। केवल सोमवार को करीब 50 उड़ानें रद्द कर दी गईं।

15 पायलट दे चुके हैं इस्तीफा

वेतन पैकेज में संशोधन का विरोध कर रहे विस्तारा एयरलाइन के 15 पायलटों ने पिछले कुछ दिन में एयरलाइन से इस्तीफा दे दिया है। सूत्रों के मुताबिक, विस्तारा के कम-से-कम 15 पायलटों ने इस्तीफा दे दिया है और एक घरेलू किफायती एयरलाइन से जुड़ गए हैं। यह एयरलाइन प्रतिदिन 300 से कुछ अधिक उड़ानों का परिचालन करती है और इसके पास 70 विमानों का बेड़ा है। टाटा समूह की एयरलाइन विस्तारा पिछले कुछ सप्ताह से पायलटों के बीच बढ़ते असंतोष से जूझ रही है। इस दौरान एयरलाइन के ए320 विमानों के कई पायलट खुद को अस्वस्थ बताते हुए अनुपस्थित हो गए।

हरिभूमि रण भूमि
लोकसभा
सत्ता संग्राम-2024

प्रदेश की सबसे हाईप्रोफाइल लोकसभा सीट राजनांदगांव का इतिहास भी गजब का रहा है। 1962 में पहली दफा इस सीट के लिए हुए लोकसभा चुनाव से लेकर अब तक यहां कई सांसद रहे, बावजूद इसके इस लोकसभा क्षेत्र में आने वाली चार विधानसभाओं का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई नेता सांसद नहीं बन पाया है। जबकि इस सीट से मुंबई और दुर्ग में रहने वाले नेताओं ने भी जीत हासिल की है। इस बार भी उन चारों विधानसभाओं से कांग्रेस और भाजपा ने उम्मीदवार नहीं बनाया है।

प्रदेश की हाई प्रोफाइल लोकसभा सीट राजनांदगांव का इतिहास रहा है गजब

मुंबई और दुर्ग से आकर भी जीते नेता, लेकिन अब तक चार विस का कोई नहीं पहुंचा संसद

निर्दलीय रूप से भी कई नेताओं ने किस्मत आजमाया पर वे जीत नहीं सके

सत्यम शर्मा ▶▶| राजनांदगांव

राजनांदगांव लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत कुल आठ विधानसभाएं आती हैं। इनमें पंडरिया, कवर्धा, खैरागढ़, राजनांदगांव, डोंगरगढ़, डोंगरगांव, खुज्जी और मोहला-मानपुर की सीटें शामिल है। इनमें से राजनांदगांव, कवर्धा, खैरागढ़ और डोंगरगांव से तो अब तक सांसद चुने गए हैं, लेकिन शेष चार सीट पंडरिया, डोंगरगढ़, खुज्जी और मोहला-मानपुर विधानसभा से कोई नेता दिल्ली की राजनीति तक यहां से जीतकर नहीं पहुंच पाया है। ऐसा भी नहीं है कि कभी यहां के नेता ने चुनावी मैदान में नहीं उतरे हों, पिछले ही चुनाव में खुज्जी के मौजूदा विधायक भोलाराम साहू को मैदान में उतारा गया था, परन्तु वे चुनाव हार गए थे। निर्दलीय रूप से भी कई नेताओं ने किस्मत आजमाया पर वे जीत नहीं सके।

राजनांदगांव लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत आती हैं कुल आठ विधानसभाएं

कभी निर्दलीय को नहीं मिली सफलता

देश में कई दफा देखने को मिला है कि राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पार्टियों के उम्मीदवारों से नाखुश होकर जनता निर्दलीय उम्मीदवारों को जिता देती है, लेकिन राजनांदगांव लोकसभा क्षेत्र से अब तक कोई भी निर्दलीय प्रत्याशी जीत हासिल नहीं कर पाया है, बल्कि इस सीट से हुए अब तक के सभी चुनाव में एक चुनाव को छोड़ दिया जाए तो बाकी में किसी निर्दलीय की जमानत तक नहीं बची है। सिर्फ एक बार 1984 के चुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी रहे किशोरी लाल शुक्ला ने 19 फीसदी वोट हासिल कर अपनी जमानत बचाई थी।

इन विस से रहे अब तक सांसद

राजनांदगांव लोकसभा के पहले चुनाव में 1962 में बिरेंद्र बहादुर सिंह जीते थे, जो खैरागढ़ निवासी थे। इसके बाद 1967 में खैरागढ़ निवासी पद्मावती देवी, 1971 में मुंबई निवासी रामसहाय पांडे, 1977 में राजनांदगांव निवासी मदन तिवारी, 1980 व 1984 में खैरागढ़ निवासी शिवेंद्र बहादुर सिंह, 1989 में दुर्ग निवासी धर्मपाल गुप्ता, 1991 में खैरागढ़ निवासी शिवेंद्र बहादुर सिंह, 1996 में राजनांदगांव निवासी अशोक शर्मा, 1998 में दुर्ग निवासी मोतीलाल वोरा, 1999 में कवर्धा निवासी डॉ. रमन सिंह, 2004 में डोंगरगांव निवासी प्रदीप गांधी, 2009 में राजनांदगांव निवासी मधुसूदन यादव, 2014 में कवर्धा निवासी अभिषेक सिंह और 2019 में कवर्धा निवासी संतोष पांडे सांसद बने। इस बार भी कांग्रेस ने दुर्ग के पाटन निवासी पूर्व सीएम भूपेश बघेल और भाजपा ने कवर्धा निवासी संतोष पांडे को मैदान में उतारा है।

आमने/सामने

सभी के मन में संदेह, वीवीपैट की गिनती हो- भूपेश

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल ने एक बार फिर ईवीएम की विश्वसनीयता पर सवाल उठाते हुए कहा, वीवीपैट की गिनती हो। अभी सुप्रीम कोर्ट ने चुनाव आयोग को नोटिस दिया है। वह बुहत महत्वपूर्ण है। यदि इसमें कुछ फैसला आता है, तो बड़ी बात होगी। वीवीपैट मतदाता के हाथ में आए और वे खुद डिब्बे में डालें और उसकी गिनती हो, ये सभी चाहते हैं। राहुल गांधी ने भी रामलीला मैदान पर मैच फिक्सिंग की बात कही। संदेह सभी के मन में है।

ईवीएम को पूरी दुनिया मान रही विजय शर्मा

उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने पूर्व सीएम भूपेश बघेल के बैलेट पेपर से चुनाव वाले बयान पर पलटवार करते हुए कहा, वह जनता के विरोध पर अपनी बात वापस ले रहे हैं। उन्होंने एक बार नहीं, अनेक बार इस बात को कहा है। ईवीएम मशीन को दुनिया मान रही है। इलेक्शन कमीशन ने तो यह तक कहा है कि ईवीएम हैक करके दिखाएं। विरोध करने के उद्देश्य से अगर वह ऐसा कह रहे हैं, तो गलत है। तोड़-मरोड़ कर बातों को पेश करने की बात पर उन्हें माफी मांगनी चाहिए।

मेरठ में 'राम'

यूपी के मेरठ लोकसभा सीट से उम्मीदवार बनाए गए अरुण गोविल (रामायण सीरियल के भगवान राम) ने मंगलवार को मेरठ में रोड शो किया। इस दौरान, उनके साथ यूपी के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य भी थे।

कांग्रेस की नई लिस्ट तारिक, शर्मिला का नाम शामिल

नईदिल्ली। कांग्रेस ने लोकसभा चुनाव के लिए 17 उम्मीदवारों की एक और लिस्ट जारी कर दी है। जिसमें आंध्र प्रदेश के कडप्पा से वाईएस शर्मिला रेड्डी, बिहार के कटिहार से तारिक अनवर, भागलपुर से अजित शर्मा को मैदान में उतारा है। बिहार में महागठबंधन के साथ सीट-बंटवारे के समझौते के तहत कांग्रेस को जो नौ सीटें मिली हैं उनमें किशनगंज, कटिहार और भागलपुर के अलावा किशनगंज लोकसभा सीट से कांग्रेस सांसद मोहम्मद जावेद को मैदान में उतारा गया है। कांग्रेस ने आंध्र प्रदेश के काकीनाडा से पूर्व शिक्षा मंत्री एम.एम. पल्लम राजू को मैदान में उतारने का फैसला किया है।

अनंतनाग-राजौरी से लड़ेंगे चुनाव गुलाम नबी आजाद

लोकसभा चुनाव का बिगुल बज चुका है। इसी बीच डीपीएपी के अध्यक्ष गुलाम नबी आजाद ने भी अपनी उम्मीदवारी वाली लोकसभा सीट का ऐलान कर दिया है। गुलाब नबी आजाद अनंतनाग-राजौरी लोकसभा सीट से चुनावी मैदान में उतरेंगे। इस क्षेत्र से नेशनल कॉन्फ्रेंस की तरफ से मियां अल्ताफ मैदान में हैं। बता दें कि अब तक केवल दो दलों ने 7 चरण के लोकसभा चुनावों के लिए अनंतनाग-राजौरी सीट से अपने उम्मीदवारों की घोषणा की है। नेशनल कॉन्फ्रेंस की तरफ से पूर्व मंत्री और कंगन से पूर्व विधायक मियां अल्ताफ इस निर्वाचन क्षेत्र से पार्टी के उम्मीदवार होंगे।

रवि किशन की चुनावी चाय

गोरखपुर। चुनावी सरगर्मियों के बीच गोरखपुर लोकसभा सीट से बीजेपी उम्मीदवार रवि किशन का अलग अंदाज देखने को मिला। चुनाव प्रचार के दौरान रवि चौराहे पर स्थित एक चाय की दुकान पर पहुंच गए, जहां वह अदरक कूटते और चाय बनाते नजर आए।

इस बार बृजमोहन अग्रवाल के सामने विकास उपाध्याय

1996 से रायपुर लोकसभा पर भाजपा का कब्जा, कांग्रेस के कई दिग्गज हार चुके हैं चुनाव

राजकुमार ग्वालानी ▶▶| रायपुर

रायपुर लोकसभा भारतीय जनता पार्टी का अभेद गढ़ है। 1996 से इस सीट पर हमेशा भाजपा को जीत मिली है। भाजपा ने जहां अब तक सात बार विधानसभा का चुनाव जीतने वाले बृजमोहन अग्रवाल को मैदान पर उतारा है, वहीं कांग्रेस ने रायपुर पश्चिम से विधानसभा का चुनाव हारने वाले विकास उपाध्याय पर दांव खेला है। एक तरफ जहां भाजपा रिकॉर्ड मतों से जीत का दावा कर रही है, वहीं कांग्रेस भी जीत का भरोसा जता रही है। रायपुर लोकसभा की सीट कांग्रेस के लिए 1996 के बाद सपना ही बनकर रह गई है। वैसे 1952 से 1971 तक इस सीट पर कांग्रेस का कब्जा रहा है, लेकिन 1996 के बाद कांग्रेस इस सीट पर वापसी नहीं कर सकी। रायपुर की सीट से कांग्रेस के कई दिग्गज नेता हार चुके हैं। वैसे पहले जीते भी हैं। लोकसभा चुनाव में रायपुर की सीट का अपना बड़ा महत्व है। छत्तीसगढ़ के अलग राज्य बनने के बाद इस राजधानी की सीट का महत्व और बढ़ गया है। यह सीट हमेशा से चर्चा में रही है। इस पर कांग्रेस के कई दिग्गज नेता अपनी किस्मत आजमा चुके हैं। रायपुर लोकसभा में पहली बार 1952 में चुनाव हुआ था। तब इस सीट पर पहली बार कांग्रेस के भूपेंद्र नाथ मिश्रा जीते थे। इसके बाद से 1971 तक इस सीट पर पांच बार कांग्रेस का कब्जा रहा। पहली बार इस सीट 1977 में जनता पार्टी के पुरुषोत्तम कौशिक ने इस सीट से विद्याचरण शुक्ल को मात देकर कांग्रेस से यह जीत छीनी थी। 1980 के मध्यावधि चुनाव में कांग्रेस के केयर भूषण ने यह सीट जीतकर फिर से कांग्रेस के पाले में डाल दी। 1984 के चुनाव में एक बार फिर से केयर भूषण की जीत हुई। यह रमेश बैस का पहला लोकसभा चुनाव था, इसमें उनको मात मिली।

नहीं टिक पाए कांग्रेस के दिग्गज

रायपुर की लोकसभा सीट ऐसी रही है जिस पर कांग्रेस के दिग्गज नेता विद्याचरण शुक्ल, पंडित श्यामा चरण शुक्ल से लेकर भूपेश बघेल तक नहीं टिक सके हैं। रमेश बैस से अपने दौर में कांग्रेस से सभी दिग्गज नेताओं को मात दी। रमेश बैस ने धनेंद्र साहू, जुगल किशोर साहू, सत्यनारायण शर्मा को भी हराया। छत्तीसगढ़ राज्य अलग बनने के बाद 2004 में हुए चुनाव में रमेश बैस ने पंडित श्यामा चरण शुक्ल को हराया। इसके बाद 2009 के चुनाव में कांग्रेस ने रमेश बैस के सामने भूपेश बेघल को मैदान में उतारा। भूपेश बघेल को भी हार का सामना करना पड़ा। 2014 का चुनाव रमेश बैस का आखिर चुनाव था। इसमें रमेश बैस ने सत्यनारायण शर्मा को मात दी।

जब कटा बैस का टिकट

2019 के चुनाव में भाजपा ने एक अलग तरह का फैसला किया और छत्तीसगढ़ के सभी सांसदों का टिकट काट दिया। इसके पीछे का एक बड़ा कारण यह रहा कि 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को कांग्रेस से करारी हार का सामना करना पड़ा। जब सभी सांसदों का टिकट कटा, तो रमेश बैस का भी टिकट कट गया। सबको भरोसा था कि लगातार छह बार जीतने वाले रमेश बैस को जरूर मैदान पर उतारा जाएगा, लेकिन भाजपा ने उनका भी टिकट काट दिया और सुनील सोनी को मैदान पर उतारा। कांग्रेस ने एक बार फिर से अपनी परंपरा के मुताबिक नए चेहरे के रूप में प्रमोद दुबे को मैदान पर उतारा। कांग्रेस को भरोसा था कि 1996 के बाद इस बार तो जरूर उनको इस सीट पर जीत मिल जाएगी, लेकिन भाजपा ने नरेंद्र मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ा और भाजपा के सुनील सोनी जीत गए।

1989 में पहली बार जीते रमेश बैस

रायपुर लोकसभा से रमेश बैस ने 1989 में पहली जीत केयर भूषण को मात देकर प्राप्त की, लेकिन दो साल बाद हुए मध्यावधि चुनाव में रमेश बैस कांग्रेस के विद्याचरण शुक्ल से हार गए। तब श्री बैस महज 959 मतों से हारे थे। इस हार के बाद रमेश बैस ने 1996 के चुनाव से जीत का जो सिलसिला प्रारंभ किया, वह 2014 तक चला। उन्होंने लगातार छह बार यह सीट जीती।

बिहार, झारखंड से कर्नाटक तक भाजपा को झटके ही झटके

सांसद ने थामा कांग्रेस का हाथ तो दिग्गज आरजेडी में शामिल

मुजफ्फरपुर सांसद अजय निषाद बीजेपी छोड़ कांग्रेस में शामिल

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव 2024 से ठीक पहले बिहार में बीजेपी को बड़ा झटका लगा है। टिकट कटने से नाराज बिहार के मुजफ्फरपुर से सांसद अजय निषाद ने बीजेपी छोड़ दी है। उन्होंने सोशल मीडिया पर इसकी घोषणा की। इसके कुछ देर बाद ही दिल्ली में उन्होंने कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण कर ली। अब कांग्रेस उन्हें मुजफ्फरपुर से लोकसभा का उम्मीदवार बना सकती है। बता दें कि बीजेपी ने इस चुनाव में अजय निषाद का टिकट काट दिया था। उनकी जगह मुजफ्फरपुर से राम भूषण निषाद को प्रत्याशी बनाया गया है।

झारखंड में गिरिनाथ सिंह ने छोड़ा बीजेपी का दामन

रांची। झारखंड में भाजपा को इंडिया गठबंधन की तरफ से लगातार झटका मिल रहा है। अब खबर है कि बीजेपी के एक और दिग्गज नेता गिरिनाथ सिंह ने पार्टी छोड़कर राजद का दामन थाम लिया है। मंगलवार को पटना स्थित राजद कार्यलय में बिहार राजद के प्रदेश अध्यक्ष जगतानंद सिंह और महासचिव भोला प्रसाद यादव की मौजूदगी में उन्होंने पार्टी की सदस्यता ली। गौरतलब है कि कुछ दिनों पहले ही उन्होंने लालू यादव से उनके आवास पर मुलाकात की थी। इसके बाद से ही चर्चा थी कि वह फिर घर वापसी कर सकते हैं।

शाह के फोन से भी राजी नहीं नाराज ईश्वरप्पा लड़ेंगे चुनाव

बंगलुरू। बीजेपी के वरिष्ठ नेता केएस ईश्वरप्पा ने मंगलवार को कहा कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने उन्हें फोन किया और इस लोकसभा क्षेत्र से उम्मीदवारी वापस लेने के लिए कहा, लेकिन वह चुनाव लड़ने के अपने फैसले पर अडिग हैं। निकटवर्ती हावेरी जिले से अपने बेटे केई कांतेश को टिकट नहीं दिए जाने से नाराज पूर्व उप मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि वह शिवमोगा से चुनाव लड़ेंगे जहां से भारतीय जनता पार्टी ने पूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा के बेटे बीवाई राघवेंद्र को दोबारा टिकट दिया है।

उत्तराखंड के रुद्रपुर में चुनावी सभा

कांग्रेसी अब देश में आग लगाने की बात कर रहे : पीएम मोदी

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को राहुल गांधी पर हमला बोला। पीएम मोदी ने मंगलवार को उत्तराखंड के रुद्रपुर में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा कहा कि कांग्रेस और इंडी गठबंधन ने अपने इरादे दिखे दिए हैं। कांग्रेस शाही परिवार के शहजादा ने ऐलान किया है कि अगर देश ने तीसरी बार बीजेपी सरकार को चुनी तो आग लग जाएगी। साठ साल तक देश पर राज करने वाले, 10 साल सत्ता से बाहर क्या रह गए अब देश में आग लगाने की बात कर रहे हैं।

'गरीबों का हक नहीं मारने दूंगा'

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इस चुनाव में दो खेमों के बीच चुनाव है। एक हम हैं जो कहते हैं कि भ्रष्टाचारी हटाओ और एक वे लोग हैं जो कहते हैं कि भ्रष्टाचारी बचाओ। तीसरे टर्म में अब बस कुछ महीनों का समय बचा रहा है। तीवसरे टर्म में भ्रष्टाचार पर और तेज प्रहार करेंगे। भ्रष्टाचारियों पर और सख्ती से कार्रवाई होगी, क्यों भ्रष्टाचार गरीबों और मध्यम वर्ग के परिवारों का हक मारता है। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा। यह मोदी की गारंटी है।

खट्टा-मीठा रहा है मथुरा लोकसभा सीट का मिजाज

अटल की हो गई थी जमानत जब्त... हेमा दो बार से सांसद

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली का मिजाज भी उन्हीं की तरह रहा है चंचल

एजेंसी ▶▶| लखनऊ

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मस्थली मथुरा की लोकसभा सीट का मिजाज भी उन्हीं की तरह चंचल रहा है। कभी यह धारा के साथ चली तो कभी धारा के विपरीत बही। बड़े नामों को संसद भेजा लेकिन कई बार ऐसे लोगों को निराश भी किया। मथुरा सीट दिलदार रही है। बाहरियों को भी मौका दिया अपना प्रतिनिधित्व करने का। चाहे वह मौजूदा सांसद हेमामालिनी हों या उनसे पहले जयंत चौधरी। मनीराम बागड़ी तो इतिहास में दर्ज हैं। आजाद भारत में जब पहली बार लोकसभा चुनाव हुए तो इस सीट ने धारा के विपरीत चलने का अपना परिचय दिया। देश में कांग्रेस ही कांग्रेस थी, लेकिन जब चुनाव हुए तो यहां से कांग्रेस नहीं बल्कि निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर राजा गिरराज शरण सिंह जीते। इसके अगले चुनाव में भी यही हुआ। उसका किस्सा तो और भी दिलचस्प है। पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी ने यहां से पर्चा भरा था। जनसंघ के टिकट पर वह दावेदारी कर रहे थे। लोगों को उम्मीद थी कि कांग्रेस नहीं तो जनसंघ के लिए लोग अपना प्यार दिखाएंगे। लेकिन हुआ उल्टा। एक बार फिर सीट निर्दलीय उम्मीदवार राजा महेंद्र प्रताप के खाते में गई। अटल बिहारी वाजपेयी की जमानत जब्त हो गई। उन्हें कुल जमा दस प्रतिशत वोट मिले थे।

जाट बहुल लेकिन आरएलडी का किला नहीं

मथुरा को शुरुआती दौर से ही जाट बहुल सीट माना जाता है। अब तक चुने गए 17 सांसदों में से 14 जाट समुदाय से आते हैं। हालांकि एक सच्चाई यह भी है कि जाट बिरादरी का प्रतिनिधित्व करने वाली आरएलडी कभी इसे अपना किला नहीं बना सकी। यहां से 2009 में जयंत चौधरी सांसद चुने गए थे हालांकि, तब आरएलडी भाजपा के साथ गठबंधन में थी। । इस सीट से चौधरी चरण सिंह की बेटी ज्ञानवती भी चुनाव लड़ चुकी हैं, लेकिन जनता ने उन्हें नकार दिया था।

सबसे बड़ी जीत का रिकॉर्ड बाहरी के नाम

1977 में मथुरा लोकसभा सीट पर भारतीय लोकदल उम्मीदवार मनीराम बागड़ी जीते थे। यह जीत इस सीट पर सबसे बड़ी जीत का रिकॉर्ड है। बागड़ी हरियाणा के हिसार के रहने वाले थे। तब चुनाव में 3,92,137 वोट पड़े थे, जिनमें से 76.79 % यानी 2,96,518 वोट मनीराम के हिस्से आए थे। यह रिकॉर्ड 42 वर्षों से कायम है।

तीन बार कांग्रेस तो चार बार लगातार जीती बीजेपी

पहले दो चुनावों में भले ही यहां से निर्दलीय उम्मीदवारों पर जनता ने भरोसा जताया लेकिन उसके बाद 1962, 1967 और 1971 के चुनावों में कांग्रेस को लगातार तीन बार जीत मिली। वहीं, 90 के दशक में बीजेपी लगातार चार बार जीत दर्ज करवाने में सफल रही है। 1991, 1996, 1998 और 1999 के चुनावों में एक बार साक्षी महाराज और तीन बार चौधरी तेजवीर सिंह भाजपा के टिकट पर जीते थे। इसके अलावा अगर इस सीट पर दलबदल की स्थिति देखें तो यहां यह कोई मसला नहीं दिखता है। पार्टी बदल-बदल कर उम्मीदवारों ने दावेदारी की और चुनाव उनकी झोली में आया भी। जनता पार्टी से चुने जाने से पहले चौधरी दिगंबर सिंह दो बार कांग्रेस के टिकट पर सांसद रहे थे। मानवेंद्र सिंह पहले कांग्रेस फिर जनता दल और उसके बाद फिर कांग्रेस के टिकट पर सांसद रहे थे।

बीजेपी ने उतारा हेमा मालिनी को : 75 साल की अघोषित कटऑफ को शिथिल करते हुए भाजपा ने एक बार फिर इस सीट से हेमा मालिनी को प्रत्याशी घोषित कर दिया है। कांग्रेस और सपा के गठबंधन में यह सीट कांग्रेस के खाते में गई है। हालांकि अभी इसपर पत्ते खुलना बाकी हैं।

रायपुर

बुधवार, 3 अप्रैल 2024

चैत्र कृष्ण पक्ष नवमीं

वर्ष : 22, अंक : 255

पृष्ठ : 10+4+4 = 18 मूल्य : 5.00**

मौसम

अधि. 40.5

न्यून. 26.4

हरिभूमि

छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से एक साथ प्रकाशित

समाचार ही नहीं, विचार भी

haribhoomi.com

03 एटली की अपकमिंग मूवी में एंट्री

विचार पेज

02 चुनावों में फिजूल खर्ची रुकेगी

हाईकोर्ट का बड़ा फैसला: बीएड डिग्रीधारी सहायक शिक्षकों की सभी नियुक्तियां निरस्त

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बिलासपुर

अलग खबर

प्रदेश में बीएड डिग्री-धारी टीचर भर्ती उम्मीदवारों को हाईकोर्ट से बड़ा झटका लगा है। कोर्ट ने सहायक शिक्षक भर्ती प्रक्रिया में बीएड उम्मीदवारों की सभी नियुक्तियां निरस्त कर दी हैं। साथ ही राज्य सरकार को 6 सप्ताह में पुनरीक्षित (रिवाइज्ड) चयन सूची जारी कर डीएलएड पास उम्मीदवारों को मौका देने का आदेश दिया है। मामले की सुनवाई चीफ जस्टिस रमेश कुमार सिन्हा और जस्टिस एनके चंद्रवंशी की डिवीजन बेंच में हुई है। ज्ञात हो कि इस केस में बेंच ▶▶|शेष पेज 4 पर

मापदंड का भर्ती प्रक्रिया में पालन नहीं

याचिका में याचिकाकर्ताओं की ओर से यह भी तर्क दिया गया कि भर्ती में सुप्रीम कोर्ट के फैसले का राज्य शासन ने उल्लंघन किया है। राज्य शासन ने अपने ही बनाए मापदंड का भर्ती प्रक्रिया में पालन नहीं किया। प्राइमरी स्कूल में पढ़ाने के लिए डीएलएड पाठ्यक्रम में विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। वहीं हाईस्कूल और हायर सेकेंडरी स्कूल के बच्चों को पढ़ाने के लिए बीएड प्रशिक्षार्थियों को विशेष तौर पर ट्रेनिंग दी जाती है। इस आधार पर कक्षा पहली से पाचवीं तक के बच्चों को पढ़ाने वाले सहायक शिक्षक के लिए डीएलएड अभ्यर्थी ही पात्र होंगे। सुप्रीम कोर्ट ने भी शिक्षकों की भर्ती पर यही आदेश जारी किया है।

छह सप्ताह से पहले नई चयन सूची जारी करने के आदेश

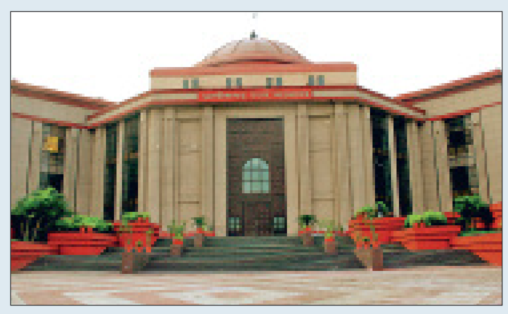

बीएड प्रशिक्षितों को शामिल करना अवैधानिक

याचिका में कहा गया कि स्कूल शिक्षा विभाग ने नियमों में संशोधन भी किया है। इसके अनुसार, सहायक शिक्षक की भर्ती में स्नातक और बीएड या डीएलएड को अनिवार्य योग्यता के रूप में शामिल किया गया है जबकि बीएड प्रशिक्षितों को भर्ती में शामिल करना अवैधानिक है। याचिका में कहा गया कि बीएड ट्रेनिंग धारकों को प्राइमरी स्कूल के बच्चों को पढ़ाने की कोई ट्रेनिंग नहीं दी गई है। याचिकाकर्ताओं ने सहायक शिक्षक की अनिवार्य योग्यता से बीएड को अवैधानिक घोषित कर इसे हटाने की मांग की थी। साथ ही भर्ती प्रक्रिया पर रोक लगाने की मांग याचिका में थी।

जिनकी ज्वाइनिंग, उनकी नियुक्ति भी निरस्त

सुनवाई के बाद चीफ जस्टिस रमेश कुमार सिन्हा और जस्टिस एनके चंद्रवंशी की डिवीजन बेंच ने बीएड अभ्यर्थियों की काउंसिलिंग और अंतिम चयन सूची पर अंतरिम रोक लगा दी थी। साथ ही राज्य शासन से जवाब मांगा था। अब इस पर फैसला आ गया है। याचिकाकर्ताओं के वकीलों ने बताया कि हाईकोर्ट ने फैसले में बीएड पास उम्मीदवारों की दावेदारी खत्म कर दी है। डिवीजन बेंच ने स्पष्ट किया है कि प्राइमरी स्कूल के शिक्षकों के लिए केवल डीएलएड पास उम्मीदवार ही मान्य होंगे। कोर्ट ने यह भी कहा है कि बीएड पास असिस्टेंट टीचर जिनकी ज्वाइनिंग हो चुकी है, उनकी नियुक्ति राज्य सरकार निरस्त करे। साथ ही 6 सप्ताह के भीतर डीएलएड पास उम्मीदवारों की ही नियुक्ति करे। इसके लिए पुनरीक्षित चयन सूची बनाने के लिए कोर्ट ने कहा है।

inh

छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश का सर्वाधिक लोकप्रिय चैनल देखें

TATA PLAY चैनल नं. 1155 | airtel चैनल नं. 366

खबर संक्षेप

एआईएफएफ ने दीपक शर्मा को किया सस्पेंड

नई दिल्ली। गोवा में इंडियन वुमेंस लीग 2 के दौरान एक क्लब की दो महिला फुटबॉलर्स के साथ कथित तौर पर मारपीट और दुर्व्यवहार करने के आरोप में दीपक शर्मा को निलंबित कर दिया है। दीपक, महासंघ की कार्यकारी समिति के सदस्य हैं। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) ने मंगलवार को कार्रवाई की।

ट्रक पुल से नीचे उतरा 10 पुलिसकर्मी घायल

छतरपुर। जिले में पुलिस बल का एक ट्रक हादसे का शिकार हो गया। हादसे में 10 पुलिसकर्मी घायल हो गए, तो वहीं एक पुलिसकर्मी की हालत गंभीर बनी हुई है। पुलिस बल का यह ट्रक बागेश्वर धाम ड्यूटी के लिए जा रहा था, तभी ट्रक का पहिया फट गया और ट्रक हादसे का शिकार हो गया।

ट्रक में आग, झुलसे चालक परिचालक की मौत

बाराबंकी। देवा क्षेत्र में एक ट्रक में आगे गन्ना लादकर जा रहे दूसरे ट्रक को पीछे से टक्कर मार देने के बाद आग लग गई। इसमें झुलसकर उसके चालक और परिचालक की मौत हो गई। देवा कोतवाली क्षेत्र के माती चौकी इलाके में स्थित किसान पथ पर जबरीकलां गांव के पास रात करीब 11 बजे गन्ना लादकर एक ट्रक लखनऊ की ओर से आ रहा था।

बस पलटने से 40 यात्री घायल

मुरैना। मध्य प्रदेश के मुरैना शहर के पास निजी बस पलट जाने से लगभग 40 यात्री घायल हो गये। यह घटना देर रात एक बजे से दो बजे के बीच हुई। उस समय यात्री मध्यप्रदेश के ग्वालियर से राजस्थान स्थित मेहंदीपुर बालाजी मंदिर जा रहे थे। ऐसा लगता है कि बस चालक ने नियंत्रण खो दिया।

'आप' के संस्थापक सदस्य वाघेला का निधन

पणजी। आम आदमी पार्टी के संस्थापक सदस्य दिनेश वाघेला का गोवा में निधन हो गया। वह कुछ वक्त से बीमार थे। 'आप' की गोवा इकाई के उपाध्यक्ष वाल्मीकि नाइक ने कहा कि 73 वर्षीय वाघेला का सोमवार की रात पणजी में उनके आवास पर निधन हो गया। वाघेला आम आदमी पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य थे।

दिल्ली आबकारी नीति घोटाले से जुड़े धनशोधन का मामला

शराब घोटाले में 'आप' के सांसद को छह महीने बाद मिली राहत, जेल से आए बाहर

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई के बाद न्यायमूर्ति संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति पी बी वराले की पीठ ने छह महीने से जेल में बंद संजय सिंह को रिहा करने का आदेश दिया। पीठ ने कहा कि आप नेता अपनी राजनीतिक गतिविधियां जारी रख सकते हैं लेकिन इस मामले के संबंध में कोई बयान नहीं दे सकते। सिंह की रिहाई ऐसे समय में हो रही है जब आम आदमी पार्टी के सामने 19 अप्रैल से शुरू होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले नेतृत्व का संकट है। दिल्ली के मुख्यमंत्री और आप संयोजक अरविंद केजरीवाल तथा पूर्व उप मुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया इस मामले के सिलसिले में तिहाड़ जेल में बंद हैं। पीठ ने कहा कि सिंह पूरे मुकदमे के दौरान जमानत पर बाहर रहेंगे और उनकी जमानत की शर्तें विशेष अदालत तय करेगी। भोजनावकाश के बाद के सत्र में, ईडी की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने कहा कि उन्होंने जांच एजेंसी से निर्देश ले लिए हैं और अगर सिंह को जमानत दी जाती है तो उसे कोई आपत्ति नहीं है। उन्होंने कहा, मैं मामले के गुण-दोषों में गए बिना बयान दे रहा हूं।

पीठ ने बयान पर संज्ञान लेते हुए आदेश दिया, एएसजी एसवी राजू को सुबह के सत्र में निर्देश लेने के लिए कहा गया था। उन्होंने कहा है कि अगर संजय सिंह को प्राथमिकी से जुड़ी कार्यवाही में जमानत पर रिहा किया जाता है तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं है।

ईडी ने जमानत पर कोई आपत्ति नहीं की, तब जेल से आए बाहर

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली आबकारी नीति घोटाले से जुड़े धनशोधन मामले में आप के नेता और राज्यसभा सदस्य संजय सिंह को मंगलवार को जमानत दे दी। इससे पहले प्रवर्तन निदेशालय ने कहा था कि अगर सिंह को मामले में जमानत दी जाती है तो उसे कोई आपत्ति नहीं है। इधर, केजरीवाल की तिहाड़ जेल में पहली राहत टहलते हुए बीती।

कोर्ट ने ईडी से पूछा- क्या और हिरासत में रखने की आवश्यकता है

सुप्रीम कोर्ट ने ईडी से मंगलवार को पूछा कि क्या उसे दिल्ली आबकारी नीति संबंधी कथित घोटाले के सिलसिले में गिरफ्तार आप के नेता संजय सिंह को और अधिक समय तक हिरासत में रखने की आवश्यकता है। पीठ ने प्रवर्तन निदेशालय की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एस वी राजू से कहा कि वह निर्देश लें।

आतिशी ने कहा - सत्यमेव जयते

आप की नेता आतिशी ने सुप्रीम के फैसले का मंगलवार को स्वागत किया। दिल्ली की मंत्री ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर सिंह की जमानत की खबर साझा की और लिखा, सत्यमेव जयते। प्रवर्तन निदेशालय ने सिंह को दिल्ली सरकार की अब रद्द हो चुकी आबकारी नीति से जुड़े धनशोधन मामले में पिछले साल चार अक्टूबर को गिरफ्तार किया था।

संजय की पत्नी बोलीं-

खुशियां अधूरी हैं, क्योंकि मेरे 3 भाई अब भी सलाखों के पीछे

संजय सिंह को जमानत दिए जाने के बाद उनकी पत्नी अनीता सिंह ने कहा कि उनके तीन "भाइयों" अरविंद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन के अब भी सलाखों के पीछे होने के कारण खुशियां अधूरी हैं। सिंह की जमानत को "सच्चाई की जीत" करार देते हुए उनकी पत्नी ने कहा कि आप तब जश्न मनाएगी, जब उसके सभी नेता मामले में रिहा होंगे। अनिता सिंह ने कहा, जब तक मेरे तीनों भाई अरविंद जी, मनीष सिसोदिया और सत्येंद्र जैन हिरासत से बाहर नहीं आ जाते, ये खुशी अधूरी है। ये सत्य की जीत है।

केजरीवाल का शुगर लेवल गिरा

इधर, दिल्ली शराब नीति केस में तिहाड़ जेल में बंद मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पहली रात घूमते-टहलते बीती। जेल अधिकारी के हवाले से जानकारी दी है कि केजरीवाल कोठरी में रातभर घूमते रहे। वे सिर्फ कुछ देर के लिए ही सीमेंट की फर्श पर सोए। मंगलवार सुबह केजरीवाल का शुगर लेवल कम था। वह डॉक्टरों की निगरानी में हैं। उन्हें सोमवार शाम 4 बजे तिहाड़ जेल लाया गया था। बैरक में भेजने से पहले मेडिकल में भी उनका शुगर लेवल 50 दर्ज हुआ था। डॉक्टरों की सलाह पर उन्हें दवाएं दी गईं थीं। सोमवार को जेल पहुंचने पर केजरीवाल को चाय दी गई थी। रात के खाने में उन्हें घर का बना खाना परोसा गया। सोने के लिए उन्हें एक गद्दा, कंबल और दो तकिए दिए गए। केजरीवाल को दोपहर और रात में घर का बना खाना खाने की अनुमति है। जब तक उनका शुगर लेवल सामान्य नहीं हो जाता, तब तक उन्हें घर का खाना दिया जाएगा।

एक्शन में निर्वाचन आयोग

पांच राज्यों में बदले 8 डीएम, 12 एसपी

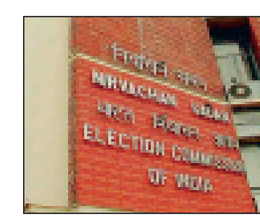

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

निर्वाचन आयोग ने मंगलवार को पांच राज्यों में आठ जिलाधिकारियों और 12 पुलिस अधीक्षकों के तबादले का आदेश जारी किया। आयोग ने कहा कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार की अध्यक्षता में निर्वाचन आयुक्तों ज्ञानेश कुमार और सुखबीर सिंह संधू की अध्यक्षता में हुई बैठक में आयोग द्वारा की गई नियमित समीक्षा के तहत यह फैसला किया गया। स्थानांतरित किए गए सभी अधिकारियों को तत्काल अपने कनिष्ठ अधिकारी को प्रभार सौंपने के लिए कहा गया है। आयोग ने साथ ही कहा कि जिन अधिकारियों ने इस्तीफा दे दिया है, उन्हें लोकसभा चुनावों के पूरा होने तक कोई चुनाव ड्यूटी नहीं दी जाएगी।

कोई चुनावी ड्यूटी नहीं मिलेगी

अधिकारियों के ट्रांसफर का ये फैसला मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार की अध्यक्षता में ज्ञानेश कुमार और सुखबीर सिंह संधू की नियमित समीक्षा बैठक में किया गया है। आयोग के निर्देश के तहत सभी स्थानांतरित अधिकारियों को उन्हें अपना काम जूनियर अधिकारियों को सौंपने के लिए कहा गया है। इन अधिकारियों को आम चुनाव 2024 के पूरा होने तक कोई चुनावी ड्यूटी नहीं सौंपी जाएगी। संबंधित राज्य सरकारों को आयोग को आईएएस और आईपीएस अधिकारियों के नामों का एक पैनल भेजने का निर्देश भी दिया गया है।

चुनाव से पहले ओडिशा में हुए कई तबादले

चुनाव आयोग ने मंगलवार को ओडिशा सरकार को 2 जिलाधिकारियों, 5 पुलिस अधीक्षकों और एक पुलिस महानिरीक्षक समेत 8 अधिकारियों का तबादला करने का आदेश दिया। आयोग के सचिव राकेश कुमार ने ओडिशा के मुख्य सचिव प्रदीप कुमार जेना को लिखे पत्र में कहा कि उक्त अधिकारियों का तबादला चुनाव से अतिरिक्त कार्यों के लिए किया जाए। पत्र में कहा गया, 'मुझे यह बताने का निर्देश दिया गया है कि आयोग ने निर्णय लिया है कि 8 अधिकारियों को तत्काल प्रभाव से गैर-चुनाव संबंधी पदों पर स्थानांतरित किया जाए।

रिश्वत के बदले सवाल

महुआ की मुश्किलें बढ़ीं ईडी ने दर्ज किया केस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

तृणमूल कांग्रेस की नेता महुआ मोइत्रा की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रहीं। सीबीआई के बाद अब प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने उनके खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। गौरतलब है कि महुआ मोइत्रा के खिलाफ पहले ही रिश्वत के बदले संसद में सवाल पूछने के मामले में सीबीआई की जांच जारी है। तृणमूल कांग्रेस की सांसद महुआ मोइत्रा पर कारोबारी दर्शन हीरानंदानी के कहने पर संसद में सवाल पूछने का आरोप है। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने उनके खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने दावा किया था कि ये सबूत वकील जय अनंत देहादराई द्वारा प्रदान किए गए थे।

लोकसभा में पैसे लेकर सवाल

दरअसल, पिछले साल 2023 में भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने मोइत्रा पर महंगे गिफ्ट्स और पैसे लेने के बदले में कारोबारी दर्शन हीरानंदानी के इशारे पर अडाणी ग्रुप और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को निशाना बनाने के लिए लोकसभा में सवाल पूछने का आरोप लगाया था। महुआ पर राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता करने का भी आरोप लगा था। इसके बाद यह मामला लोकसभा की एथिक्स कमेटी में भेज दिया गया था, जहां पर महुआ दोषी पाई गई थीं। इसके बाद महुआ को लोकसभा से निष्कासित कर दिया गया था।

सीबीआई भी जांच कर रही

केंद्रीय जांच एजेंसी सीबीआई भी टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा के खिलाफ प्रारंभिक जांच कर रही है। मामला कैश फॉर क्वेरी केस से ही जुड़ा है। सीबीआई ने लोकपाल के निर्देश के बाद जांच शुरू की है। एजेंसी इस जांच के आधार पर ही तय करेगी कि मोइत्रा के खिलाफ क्रिमिनल केस दर्ज किया जाए या नहीं। प्रारंभिक जांच के तहत सीबीआई किसी आरोपी को गिरफ्तार नहीं कर सकती या तलाशी नहीं ले सकती है, लेकिन वह जानकारी मांग सकती है।

लोकतंत्र की खूबसूरत तस्वीर!

महासमुंद। महासमुंद में लोकसभा चुनाव के लिए नामांकन दाखिले के दौरान एक तस्वीर ने सबका ध्यान खींचा है। दरअसल, कांग्रेस प्रत्याशी ताम्रध्वज साहू रैली के साथ नामांकन दाखिल करने पहुंचे। ठीक उसी समय मुहूर्त के अनुसार नामांकन दाखिल करने भाजपा प्रत्याशी रूपकुमारी चौधरी से आमना-सामना हो गया। रूपकुमारी चौधरी ने ताम्रध्वज साहू से मुलाकात की और उनके पैर छूकर प्रणाम किया। उन्होंने कहा कि ताम्रध्वज साहू वरिष्ठ नेता हैं, इसलिए पैर छूकर उनसे जीत का आशीर्वाद मांगा है।

भाजपा प्रत्याशी रूपकुमारी ने कांग्रेस प्रत्याशी ताम्रध्वज के छुए पैर

ओवरटेक के चक्कर में हादसा

डंपर-ऑटो की टक्कर सात श्रद्धालुओं की मौत

एजेंसी ▶▶| चित्रकूट

चित्रकूट जिले के कर्वी क्षेत्र में मंगलवार को सुबह तेज रफ्तार से जा रहे एक डंपर की टक्कर लगने से ऑटोरिक्शा सवार सात श्रद्धालुओं की मौत हो गई तथा तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। कर्वी कोतवाली क्षेत्र के अमानपुर मार्ग पर कपसेठी गांव के नजदीक डंपर ने एक ऑटोरिक्शा को जोरदार टक्कर मार दी। अनिरुद्ध (30), अतर सिंह (50) और अखिलेश सिंह (22) तथा हमीरपुर जिले के रहने वाले धर्मेंद्र सोनी (30) और निधि सोनी (19) समेत दो अन्य की मौत हो गई।

रामघाट जा रहे थे श्रद्धालु

त्रिपाठी ने बताया कि सभी श्रद्धालु कर्वी रेलवे स्टेशन से ऑटोरिक्शा में सवार होकर रामघाट जा रहे थे। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिये भेजा है। उन्होंने बताया कि हादसे के बाद डंपर चालक अपना वाहन छोड़कर भाग गया है। उसकी तलाश की जा रही है।

दो मृतकों की शिनाख्त नहीं

इनमें कन्नौज निवासी अखिलेश व अनिरुद्ध और हमीरपुर निवासी निधि शामिल हैं। फिलहाल, अभी दो और मृतकों की शिनाख्त नहीं हो पाई। बताया जा रहा है कि मृतक चित्रकूट दर्शन करने के लिए आए थे, जो हादसे का शिकार हो गए है। पुलिस ने जांच-पड़ताल शुरू की है।

सात मंत्री भी रिटायर, पांच लड़ रहे लोकसभा चुनाव

रास से 54 सांसदों का पूरा हो गया कार्यकाल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नई दिल्ली

लोकसभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के बाद से ही राजनीतिक दल निर्वाचन क्षेत्रों में ताबड़तोड़ रैली कर रही है। इस बीच, संसद के उच्च सदन राज्यसभा से कई सदस्य सेवानिवृत्त होने वाले हैं, जिनमें से कुछ दोबारा इस सदन में नहीं लौटेंगे। मंगलवार को 49 राज्यसभा के सदस्य सेवानिवृत्त हुए हैं।

राज्यसभा से 3 अप्रैल को रिटायर होने वाले सांसदों में पूर्व पीएम मनमोहन सिंह भी शामिल हैं। गौरतलब है कि ▶▶|शेष पेज 4 पर

अनिल बलूनी भी हुए सेवानिवृत्त

सेवानिवृत्त होने वाले अन्य लोगों में भाजपा के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी अनिल बलूनी भी शामिल हैं, जो उत्तराखंड की गढ़वाल सीट से लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं। इसके अलावा, भाजपा के पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रकाश जावड़ेकर और बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी भी राज्यसभा से सेवानिवृत्त हो रहे हैं और उन्हें पार्टी ने दोबारा नामांकित नहीं किया है।

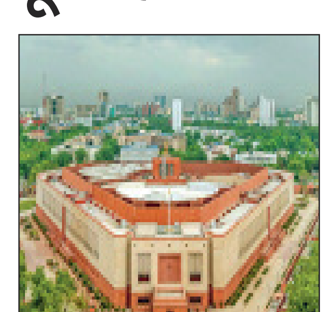

सरोज पांडेय भी उच्च सदन से रिटायर

भाजपा के अनिल जैन भी मंगलवार को सेवानिवृत्त हो गए, क्योंकि उन्हें पार्टी ने दूसरा कार्यकाल नहीं दिया है। इसी तरह छत्तीसगढ़ से सरोज पांडेय भी हैं, जो राज्य में लोकसभा चुनाव लड़ रही हैं।

राज्यसभा से 49 सदस्य हुए सेवानिवृत्त

बता दें मंगलवार को 49 राज्यसभा के सदस्य सेवानिवृत्त हुए, जबकि पांच बुधवार 3 अप्रैल को रिटायर होंगे। उच्च सदन से सेवानिवृत्त होने वालों में समाजवादी पार्टी की जया बच्चन भी शामिल हैं, जिन्हें उनकी पार्टी ने एक और कार्यकाल के लिए राज्यसभा के लिए फिर से नामित किया है। कांग्रेस पार्टी के अभिषेक सिंघवी, जिनका राज्यसभा में कार्यकाल आज समाप्त हो रहा है, उच्च सदन में नहीं होंगे क्योंकि वह हिमाचल प्रदेश से अपना चुनाव हार गए हैं।

जम्मू कश्मीर में बड़ी कामयाबी

आतंकियों ने गुफा को बना रखा था अपना ठिकाना

एजेंसी ▶▶| मेंढर/जम्मू

जम्मू कश्मीर में सुरक्षा बलों ने पुंछ जिले में एक आतंकी ठिकाने का पता लगाया। अभियान में एक गुफा में आतंकी ठिकाने का पता चला जहां से कुछ कपड़े और खाने का सामान बरामद हुआ। हालांकि, कोई हथियार और गोला-बारूद नहीं मिला। अभी तक कोई गिरफ्तारी नहीं हुई है।

पाकिस्तानी ड्रोन संदिग्ध

एक अन्य घटना में, जम्मू के अरनिया सेक्टर में अंतरराष्ट्रीय सीमा के पास त्रेवा गांव के स्थानीय लोगों ने सोमवार देर रात एक संदिग्ध पाकिस्तानी ड्रोन की आवाजाही की सूचना दी। उन्होंने कहा कि इसके बाद पुलिस और बीएसएफ के जवानों ने तलाशी अभियान चलाया।

चिंतन

चीन को 'चीनी अंदाज' में कड़ा जवाब दे भारत

अरुणाचल प्रदेश के शहरों, गांवों, नदियों, झीलों, वन क्षेत्र आदि के बार बार नाम बदलने की चीनी हिमाकत का करारा जवाब दिया जाना जरूरी है। पहली बार 2017 में जब पहली बार चीन ने यह हिमाकत की थी, तभी भारत को कठोर एक्शन लेना चाहिए था। इस बार अरुणाचल प्रदेश के 30 जगहों के चीनी नाम चीन ने रख दिया है, इससे पहले तीन बार ऐसा कर चुका है। हर बार भारत ने कड़ी प्रतिक्रिया दी और चीनी करतूतों को खारिज किया, पर इससे बात नहीं बन रही है। चीन बार बार भारत को उकसावे वाली गतिविधियां करता रहा है। नाम रखने के अलावा, कभी अरुणाचल के लोगों को वीजा से इनकार तो कभी नेताओं के अरुणाचल दौरे पर आपत्ति जताता है। भारत व चीन सीमा क्षेत्र के बीच 1914 से मैकमोहन रेखा निर्धारित है, इसके बावजूद, चीन कभी लद्दाख में, कभी अरुणाचल प्रदेश में, कभी उत्तराखंड में सीमा पर विवाद खड़ा करता रहता है। गलवान की हिसंक झड़प के बावजूद चीन अपनी हरकतों से बाज नहीं आ रहा है। चीन अरुणाचल प्रदेश के पास सीमा पार अपने इन्फ्रास्ट्रक्चर को मजबूत कर रहा है। चीन कभी भी भरोसेमंद पड़ोसी नहीं रहा है, भारत के भरोसा जताने के बावजूद चीन ने धोखा ही दिया है। भारत और चीन के बीच हिमालय पर्वत क्षेत्र है, जो भौगोलिक रूप से दोनों देशों को विभाजित करता है, लेकिन हिमालय क्षेत्र में भारत की ओर के क्षेत्र पर चीन की हमेशा बुरी नजर रही है। कभी चीनी दीवार तक सिमटा चीन ने अपनी विस्तारवादी नीति के तहत पड़ोस के कई क्षेत्र पर अवैध कब्जा कर चुका है। शिनझियांग, मकाऊ, तिब्बत आदि क्षेत्र कभी भी चीन का हिस्सा नहीं रहे, भारत से युद्ध के बाद भारत के क्षेत्र अक्साई चिन पर अवैध कब्जा जमाए हुए है। भारत को अरुणाचल में स्थानों का नाम बदलने के चीन के ''मूर्खतापूर्ण प्रयासों'' को सदा के लिए बंद करने के उपाय करने होंगे। पूर्व पीएम पंडित जवाहरलाल नेहरू की गलतियों को ठीक करते हुए, भारत को तिब्बत को लेकर नया मोर्चा खोलना चाहिए। चीन बेशक मजबूत है, लेकिन अभेद्य नहीं है। भारत को सामरिक और कूटनीतिक दोनों स्तर पर चीन को घेरना चाहिए। केवल चेतावनी देने से बात नहीं बन रही है। भारत के मजबूत नेता को चीन के दुस्साहस के खिलाफ मजबूत फैसले लेने होंगे। चीन की करतूतों को हर वैश्विक मंच पर बेनकाब करना होगा। चाणक्य के देश भारत को चीन के खिलाफ सतत कूटनीतिक माइंडगेम के हथियार का इस्तेमाल करते रहना पड़ेगा। सामरिक व सीमा विवाद मामले पर देश में राजनीति नहीं होनी चाहिए, जैसा अक्सर कांग्रेस करती रहती है। चीन के साथ विवाद कांग्रेस सरकार की गतलियों की वजह से ही बढ़ी है। 'हिंदी चीनी भाई भाई' नारे की कितनी भारी कीमत भारत ने उठाई, यह कांग्रेस की ही पंचशील नीति का खामियाजा थी। यह वास्तविकता जरूर है कि किसी के नाम बदलने या नया नाम रख देने से वह उसका नहीं हो जाएगा, लेकिन यह हिमाकत करना ही दूसरे राष्ट्र को उकसाना है। चीन यही कर रहा है। चीन भारत के साथ सीमा विवाद जानबूझ कर नहीं सुलझाना चाहता है, ऐसे में भारत को भी चीनी अंदाज में ही जवाब देना चाहिए। तिब्बत पर मोर्चा खोलना चाहिए, अक्साई चिन लेने का प्रयास करना चाहिए, कैलाश मानसरोवर समेत सभी भारतीय ऐतिहासिक-सांस्कृतिक महत्व के क्षेत्र तक पहुंच भारतीय क्षेत्र से सुनिश्चित करनी चाहिए, पीओके और गिलगित-बाल्टिस्तान को भारतीय क्षेत्र में मिलाने के प्रयास से भी चीन के सीपेक को धक्का लगेगा। चीन के साथ ट्रेड को धीरे-धीरे जीरो स्तर पर लाना होगा।

सवाल
आर.के. सिन्हा

बांग्लादेश में भारत के दुश्मन कौन

जिस भारत ने 1970 तक के पूर्वी पाकिस्तान, की प्रताड़ित और पीड़ित आम जनता के हितों की रक्षा के लिए पाकिस्तान से युद्ध मोल लिया, उस बांग्लादेश का प्रमुख विपक्षी दल बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) लगातार भारत के खिलाफ जहर उगलता रहता है। उसके जहरीले अभियान से पड़ोसी मुल्क के कठमुल्लों को भी भारत और अपने ही बांग्लादेश के हिन्दुओं के खिलाफ हिंसा करने का मौका मिल जाता है। बांग्लादेश में बीएनपी ने हाल ही में भारत के उत्पादों के बॉयकाट का आह्वान भी किया हुआ है। इसके चलते वहां प्रधानमंत्री शेख हसीना सरकार और विपक्ष आमने-सामने हैं। मुस्लिम बहुल बांग्लादेश में भारत विरोधी भावना कोई नई बात नहीं है। पिछले साल क्रिकेट विश्व कप में भारत की हार के बाद ढाका और कई शहरों में जश्न मना था। मैं स्वयं 1970 के भारत -पाक युद्ध में 'युद्ध संवाददाता'के हैसियत से बांग्लादेश में भारतीय सेना के साथ रहा था। युद्ध के दौरान भारतीय सेना ने लाखों बांग्लाभाषी मुसलमानों को क़त्लेआम से बचाया। इन सभी अत्याचारों का मैं प्रत्यक्षदर्शी गवाह हूं,लेकिन बांग्लादेश की आज़ादी के बाद जब बंगबंधु शेख़ मुज़ीबुर रहमान ने सभी युद्ध संवाददाताओं के साथ वरिष्ठ संपादकों को एक विशेष ट्रेन भेजकर बुलाया, तभी जगह-जगह 'इंडियाज़ जिनीस-पत्तर भालो नेई' के वाल पेंटिंग देखने को मिले। जब मैंने शेख़ मुजीब के पीआरओ से पूछा कि भारत ने तो युद्ध के बाद लाखों बांग्लादेशियों को भुखमरी से बचाया, हज़ारों मकान बनवाए, फिर यह क्या चल रहा है?' तब पीआरओ ने कहा 'आप चिंता मत कीजिए। कुछ हिंदू विरोधी कट्टरपंथी हैं, उन्हें ठीक करने में सरकार लगी हुई है।' लेकिन वे तो आज भी बने हुए हैं, बल्कि कई गुना बढ़ गए हैं। बांग्लादेश में भारत के कथित हस्तक्षेप को लेकर विरोध और असहमति 1990 के दशक से देखी जा रही है, लेकिन हाल के वर्षों में विरोध के ये सुर कहीं ज़्यादा मुखर हुए हैं। बीएनपी और उसकी सहयोगी पार्टियों ने देश में बीती जनवरी में हुए आम चुनाव का बहिष्कार किया था। इस चुनाव में जीत के बाद शेख़ हसीना चौथी बार बांग्लादेश की प्रधानमंत्री बनी थीं। आम चुनाव के बाद से बीएनपी के अधिकांश नेता ये माहौल बनाने में जुटे हुए हैं कि बांग्लादेश के एकतरफ़ा चुनाव को सिर्फ़ भारत की वजह से वैधता मिली है और इसलिए लोगों को भारत और उसके उत्पादों का बहिष्कार करना चाहिए। संकेत बहुत साफ है कि बीएनपी भारत से नफरत करती है। हालांकि उसकी नफरत की वजह समझ से परे है। भारत का 1947 में बंटवारा हुआ। पंजाब और बंगाल सूबों के कुछ हिस्से पाकिस्तान में चले गए। आगे चलकर पाकिस्तान का वह भाग, जिसे पूर्वी पाकिस्तान कहते थे, 1971 में एक स्वतंत्र देश के रूप में विश्व मानचित्र पर उभरा। नए देश का नाम बांग्लादेश के रूप में जाना गया। उसकी स्थापना में भारत का योगदान रहा। वहां कट्टरता की एक तस्वीर लगातार देखने को मिलती रहती है। हिन्दुओं और प्राचीन हिन्दू मंदिरों पर हमले लगातार होते रहते हैं। कुछ साल पहले बांग्लादेश में अमेरिकी ब्लॉगर अविजित रॉय की निर्मम हत्या और उनकी पत्नी के ऊपर हुए जानलेवा हमले से वहां पर कट्टरता की बढ़ती ताकत का पता चलता है। वहां पर धर्मनिरपेक्ष ताकतों के लिए स्पेस जीवन के सभी क्षेत्रों में घट रहा है। अविजित रॉय बांग्लादेश मूल के अमेरिकी थे। वे हिन्दू थे। वे और उनकी पत्नी बांग्लादेश में कट्टरपंथी ताकतों के खिलाफ आवाज बुलंद कर रहे थे। अविजित की हत्या से बांग्लादेश में हिन्दुओं की भयावह होती स्थिति पर पूरी दुनिया का ध्यान गया था। यह अफसोसजनक बात है कि बांग्लादेश में हिन्दू सुरक्षित नहीं हैं। जिस बांग्लादेश में 'हिफ़ाज़त-ए-इस्लाम' जैसा जहरीला संगठन सक्रिय होगा उसका भगवान ही मालिक है। यह अपने देश के लोगों को यह समझाने में सफल रहा कि इस्लाम खतरे में है। कैसे खतरे में है? यह कोई नहीं बता सकता। बांग्लादेश में 90 फीसदी से अधिक मुसलमान हैं। तस्लीमा नसरीन ने भी अपने उपन्यास लज्जा में बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों की दर्दनाक स्थिति पर विश्तार से लिखा है, इसलिए ही उनकी जान के दुश्मन हो गए यह कट्टरपंथी। उसी विरोध के कारण तसलीमा को बांग्लादेश छोड़ना पड़ा था। तसलीमा लसरीन का उपन्यास 1993 में पहली बार प्रकाशित हुआ था। वह लज्जा में साम्प्रदायिक उन्माद के नृशंस रूप को सामने लाती हैं। लज्जा के आने के बाद कट्टरपंथियों ने उनके खिलाफ फतवा जारी किया था। बांग्लादेश की स्थापना के बाद लग रहा था कि वहां पर हिन्दुओं की स्थिति सुधर जाएगी। भारत की चाहत रही है कि बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना सत्तासीन रहें। निश्चित रूप से बांग्लादेश में शेख हसीना का सत्ता पर काबिज होना भारत और वहां के हिन्दुओं के हित में है।

(लेखक पूर्व सांसद हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

एक देश, एक चुनाव
डॉ. रमेश ठाकुर

चुनावों में फिजूल खर्ची रुकेगी

देश में चुनाव पर बहुत ज्यादा पैसा फिजूल खर्च होता है। सवाल ये है आखिर ये समस्या रुके कैसे, हालांकि इसको लेकर एक चुनाव एक देश की मुहिम कारगर साबित हो सकती है। वन नेशन, वन इलेक्शन की मांग लंबे समय से उठती रही है। अब तो परिस्थितियां ऐसी हो गई हैं कि हर एक-दो साल के अंतराल पर किसी न किसी बड़ी विधानसभा के चुनाव करने पड़ते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ न होने से चुनावों में लगने वाले लंबे-चौड़े अमले, नेताओं और जनता के बहुमूल्य समय के साथ-साथ अकूत धन का क्षरण होता है। साथ ही बार-बार होने वाले चुनावों से विकास की गति बाधित होती है।

चुनाव बहुत खर्चीले हो गए हैं, बिना पैसों के लड़ना अब संभव नहीं? सवाल ये है आखिर ये समस्या रुके कैसे, हालांकि इसको लेकर एक चुनाव एक देश की मुहिम कारगर साबित हो सकती है, क्योंकि हमारे यहां हर वक़्त चुनावी मौसम रहता है। इनमें काफी समय, धन और संसाधन बर्बाद होता है। यही वजह है कि वन नेशन, वन इलेक्शन की मांग लंबे समय से उठती रही है। प्रधानमंत्री मोदी की भी यही तमन्ना रही है, इसलिए गाहे-बगाहे वह अपनी इच्छा जताते रहे हैं। हाल ही में उनकी सरकार ने पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में एक राष्ट्र, एक चुनाव की संभावनाओं की समीक्षा के लिए एक उच्चस्तरीय कमेटी गठित कर इस मुद्दे को फिर से छेड़ दिया है।

गौरतलब है कि देश में एक साथ चुनाव की अवधारणा नई नहीं है। आजादी के बाद 1951-52 में पहले चुनाव से लेकर 1967 तक एक लोकसभा और विधानसभाओं के चुनाव एक साथ होते रहे, लेकिन 1968 और 1969 में कुछ विधानसभाओं के समय से पूर्व भंग होने के कारण यह चलन जारी नहीं रह सका। अब तो परिस्थितियां ऐसी हो गई हैं कि हर एक-दो साल के अंतराल पर किसी न किसी बड़ी विधानसभा के चुनाव करने पड़ते हैं। इसमें कोई दो राय नहीं कि लोकसभा और विधानसभा चुनाव एक साथ न होने से चुनावों में लगने वाले लंबे-चौड़े अमले, नेताओं और जनता के बहुमूल्य समय के साथ-साथ अकूत धन का क्षरण होता है। साथ ही बार-बार होने वाले चुनावों से विकास की गति बाधित होती है, क्योंकि हर चुनाव की घोषणा के साथ ही आचार संहिता से लागू हो जाती है। फिर आचार संहिता इतनी लंबी चलती है कि अगले दो-ढाई महीने तक तरक्की पर ब्रेक लग जाता है। निःसंदेह एक साथ चुनाव से इन तमाम विसंगतियों पर काबू पाया जा सकता है। गौर फरमाएं तो प्रधानमंत्री मोदी भी यही तर्क देकर कभी लाल किला की प्राचीर से तो कभी पीठासीन अधिकारियों की सम्मलेन में इसकी पुरजोर वकालत करते रहे हैं। उनके कार्यकाल में ही लॉ कमीशन, नीति आयोग और संसद की स्थायी समिति के जरिये इसकी समीक्षा की जा चुकी है। इस तरह मोदी सरकार द्वारा रामनाथ कोविंद की अध्यक्षता में गठित यह चौथी समिति है। हालांकि इससे पूर्व की समितियों की सिफारिशों पर अब तक वर्तमान सरकार ने कोई निर्णय लिया है। इसकी वजह यह है कि यह कहने-सुनने में जितना व्यावहारिक और उचित लगता है, उतना शायद भारत जैसे संघीय और संवैधानिक ढांचे वाले मुल्क में आसान नहीं है। वैसे, मकसद और उद्देश्य अगर केवल समय और धन की बचत है तो फिर यह भी दलील दी जा सकती है कि हर पांच वर्ष में ही चुनाव क्यों कराए जाएं? उनकी समयावधि बढ़ाकर छह-सात वर्ष क्यों न कर दी जाए? इससे समय और धन की बचत तो हो जाएगी, लेकिन कई और समस्याएं खड़ी हो जाएंगी। मसलन अगर इनमें जीत दर्ज करने वाली कोई सियासी पार्टी अच्छा काम नहीं कर रही है और जन अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतर रही है तो उसे फिर जनता को पांच से अधिक वर्षों तक बर्दाश्त करने के लिए विवश होना पड़ेगा। हमारे देश में वैसे ही इसकी संभावनाएं प्रबल हैं

क्योंकि चुनावी वादे करके भूलना हमारे नेताओं और राजनीति दलों की आदत में शुमार है। चुनाव सुधारों के तौर पर मतदाताओं को अक्षम जनप्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार देने की मांग बेमानी हो जाएगी।

देश में लोकसभा और विधानसभा चुनाव फिलहाल अलग-अलग होने के बावजूद इसे शांतिपूर्वक सम्पन्न कराना निर्वाचन आयोग और सुरक्षा बलों के लिए बड़ी चुनौती होती है। इसमें काफी समय लगता है। मसलन 2019 के आम चुनाव सात चरणों में संपन्न हुए और इसमें 39 दिन अर्थात सवा महीने का समय लगा। इस दौरान कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए लगभग 2.7 लाख अर्द्धसैनिक बलों और 20 लाख पुलिस फोर्स का सहारा लेना पड़ा। इसी तरह बड़े राज्यों के विधानसभा चुनावों को कई फेज में कराना पड़ता है जिनके लिए काफी सुरक्षा बलों की तैनाती करनी पड़ती है। ऐसे में एक साथ लोकसभा और विधानसभा चुनाव करवाने में लगने वाले समय और संसाधन का अंदाजा बखूबी लगाया जा सकता है। बात केवल इतनी भर नहीं है। असल में विविधता वाले हमारे देश में राजनीतिक परिस्थितियां इसके अनुकूल नहीं हैं। बहु-दलीय राजनीतिक व्यवस्था वाले हमारे देश में जनता के चुनावी मुद्दे एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र, एक राज्य से दूसरे राज्य और फिर राज्य से राष्ट्रीय स्तर तक अलग-अलग हैं। मुद्दों के साथ-साथ उनकी चुनावी प्राथमिकताएं अलग-अलग हैं। किसी राज्य में लोग अपने यहां के क्षेत्रीय दलों को पसंद करते हैं तो किसी राज्य के राष्ट्रीय दलों को तरजीह देते हैं। भू-सामाजिक और राजनीतिक वैविधता से लोगों के सामने बहुत से विकल्प खुले होते हैं और जन-मानस अपनी आवश्यकताओं के अनुसार ही अलग-अलग प्रशासनिक स्तर पर दलों का चयन करते हैं। ऐसे में एक साथ चुनाव कराने से क्षेत्रीय दलों को काफी नुकसान होगा और उनकी संभावनाएं क्षीण होती जाएंगी, क्योंकि बदली हुई निर्वाचन प्रणाली में राष्ट्रीय मुद्दों और जनभावनाओं का प्रभुत्व होगा। हमारे देश में वैसे ही गठबंधन सरकारों का एक लंबा दौर रहा है। कई बार किसी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने और फिर आपस में गठबंधन की सहमति नहीं बन पाने से त्रिशंकु जैसे हालात पैदा हो जाते हैं। एक साथ चुनाव कराने की स्थिति में अगर केंद्र में किसी दल या गठबंधन की सरकार बन जाती है और किसी राज्य में त्रिशंकु परिस्थितियां उत्पन्न हो गईं, ऐसे में हालात बड़े विचित्र हो जाएंगे। फिर यही बात केंद्र के लिए भी लागू होती है। ऐसी परिस्थितियों में क्या त्रिशंकु लोकसभा या विधानसभाओं को अगले पांच वर्षों तक फिर से एक साथ चुनाव होने की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी या फिर से फौरन चुनाव करवा कर समय, धन और संसाधनों की बर्बादी की जाएगी?

भारतीय संविधान में लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं के अपने-अपने अधिकार प्रदत्त हैं। इनके अनुसार ही यह कार्य करती हैं और जनहित वाली योजनाओं का सृजन करती हैं। इसके अतिरिक्त शासन का तीसरा स्तर भी है जो स्थानीय निकायों के जरिये चलता है। इसका मकसद स्थानीय सतह पर योजनाओं को सुचारू रूप से क्रियान्वित करना है। लोकसभा और विधानसभाओं के एक साथ चुनाव करवाने से स्थानीय निकायों में भी इसका प्रयोग किए जाने की मांग उठने लगेगी। सबसे बड़ी दिक्कत तो संसद के उच्च सदन राज्यसभा के सामने पेश आएगी जिसके सदस्यों का कार्यकाल 6 साल का होता है और इसमें से हर दो वर्ष पर एक-तिहाई सदस्यों का कार्यकाल समाप्त होता है।

ऐसे में जाहिर तौर पर तो चुनाव संबंधी धन-संसाधन एवं समय की बर्बादी को कम करने, स्थिर शासन और बार-बार चुनाव से होने वाले अवरोधों को कम करने के लिए एक साथ चुनाव प्रासंगिक लगते हैं, लेकिन क्या यह व्यावहारिक भी हैं। इसका जवाब तलाश करने के लिए इस पर व्यापक चर्चा जरूरी है।

(लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं, ये उनके अपने विचार हैं।)

लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **edit@haribhoomi.com** पर दे सकते हैं।

सुख की चाह के लिए तप की साधना ज़रूरी है...

संकलित
दर्शन

तप संकल्प की प्राप्ति का एकमात्र उपाय है। जिसे सत्य संकल्प द्वारा सुख की चाह है, उसे तप की साधना अवश्य करनी चाहिए। संकल्प के दृढ़ एवं सत्य न होने का सबसे बड़ा कारण तप की कमी होता है। जो व्यक्ति अपने स्थूल और सूक्ष्म शरीर के द्वारा तप नहीं करता, वह अपने संकल्पों को कभी प्राप्त नहीं कर सकता। तप से हमें अपने मन और तन, दोनों को पक्का बनाना होता है। जैसे मिट्टी का कच्चा घड़ा पानी डालने पर गल जाता है। वह अग्नि में बिना तपे कभी जल नहीं ला सकता। इसी प्रकार जब तक मनुष्य अपने जीवन को तप द्वारा पक्का नहीं बनाता, तब तक वह कभी भी अपने संकल्पों की सिद्धि को धारण नहीं कर सकता। तप से जीवन की समस्त अशुद्धियां दूर होती हैं। अशुद्धियों के दूर होने से शरीर और इंद्रियों को विशेष सिद्धि मिलती। तभी कहा जाता है कि तप से सभी कुछ साध्य है। वेदों में भी तप की महिमा और आवश्यकता का अनेक स्थानों पर वर्णन किया गया है। कल्याण की कामना करने वाले ऋषिगण भी प्रथम तप और दीक्षा का ही अनुष्ठान करते हैं। श्रीमद्भागवत कथा के द्वितीय स्कंध में श्री भगवान ब्रह्मजी से कहते हैं कि 'मैं इस दृश्यमान अखिल प्रपंच को तप द्वारा रचता हूं और पुनः तप द्वारा ही ग्रसित कर लेता हूं। मैं तप द्वारा ही इस विश्व का भरण-पोषण करता हूं और मेरा अत्यंत तेजस्वी पराक्रम तप ही है। तप द्वारा वह तेज और वह शक्ति प्राप्त की जा सकती है, जो किसी भी संकल्प की प्रतिपूर्ति का आधार बनती है।'

बहरूपियों से हमेशा सतर्क एवं सावधान रहें

संकलित
प्रेरणा

एक कबूतर और एक कबूतरी एक पेड़ की डाल पर बैठे थे। उन्हें बहुत दूर से एक आदमी आता दिखाई दिया। कबूतरी के मन में कुछ शंका हुई और उसने कबूतर से कहा कि चलो जल्दी उड़ चले नहीं तो ये आदमी हमें मार डालेगा। कबूतर ने लंबी सांस लेते हुए आराम के साथ कबूतरी से कहाः भला उसे ध्यान से देखो तो सही, उसके कपड़े देखो, चेहरे से भोलापन टपक रहा है, ये हमें क्या मारेगा, बिलकुल सज्जन पुरुष लग रहा है। कबूतर की बात सुनकर कबूतरी चुप हो गई। जब वह आदमी उनके पास आया तो अचानक उसने अपने वस्त्र के अंदर से तीर कमान निकाला और झट से कबूतर को मार दिया। और बेचारे उस कबूतर के वहीं प्राण पखेरू उड़ गए। असहाय कबूतरी ने किसी तरह भाग कर अपनी जान बचाई और बिलखने लगी। उसके बाद वह कबूतरी रोती हुई अपनी फरियाद लेकर राजा के पास गई और राजा को उसने पूरी घटना बताई। तुरंत शिकारी को पकड़ कर दरबार में लाया गया। शिकारी ने डर के कारण अपना जुर्म स्वीकार कर लिया। उसके बाद राजा ने कबूतरी को ही उस शिकारी को सजा देने का अधिकार दे दिया। कबूतरी ने बहुत दुःखी मन से कहा किः मेरे विचार से इस क्रूर शिकारी को बस इतनी ही सजा दी जानी चाहिए कि अगर वो शिकारी है तो उसे हर समय शिकारी वाले कपड़े पहनना चाहिए। ये अच्छे व्यक्ति वाले कपड़े उतार दे क्योंकि अच्छे व्यक्ति वाले कपड़े पहन कर धोखे से घिनौने कर्म करने वाले सबसे बड़े नीच होते हैं।

अंतर्मन

आज की पाती

नया वित्त वर्ष मंगलमय हो

हमारे देश में हर वर्ष वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च तक होता है। देश में वर्ष 1867 में अंग्रेजों ने पहली बार बजट प्रस्तुत किया था। उन्होंने 1 अप्रैल से 31 मार्च को वित्तीय वर्ष घोषित करके इसे अपनी सुविधा के लिए रखा था। तब से ही हमारे देश में वित्तीय वर्ष की परंपरा 1 अप्रैल से 31 मार्च तक चलती आ रही है। उम्मीद है कि हमारे देश के लिए वित्तीय वर्ष 2024-25 महत्वपूर्ण रहेगा और केंद्र में जो भी सरकार सत्ता में आएगी, वो देश के आर्थिक विकास के लिए काम करेगी। कुछ अर्थशास्त्री यह भी अनुमान लगाए हुए हैं कि यह वर्ष देश की जीडीपी अर्थात सकल घरेलू उत्पाद के लिए बेहतर हो सकता है। इस वित्त वर्ष में सभी का कारोबार खूब फले-फूले, यह कामना करनी होगी। - **विकास परसाई**, रायगढ़

ट्रेंड

एकजुट होने का क्षण

ऑटिस्टिक लोग शिक्षा, रोजगार और सामाजिक समावेशन के अपने मौलिक अधिकारों में बाधाओं का सामना करना जारी रखते हैं। विश्व ऑटिज्म जागरूकता दिवस उनके महत्वपूर्ण योगदान का जश्न मनाने, अपने अधिकारों को समझने के लिए एकजुट होने का एक क्षण है।
-एंटोनियो गुतरेस, यूएन महासचिव

दुनिया अलग जगह होगी

यदि हम इस दुनिया में पर्याप्त संख्या में ऐसे लोगों का निर्माण कर सकें जिनका जीवन का अनुभव शारीरिक और मानसिक से परे हो, तो यह दुनिया एक बहुत अलग जगह होगी।
-सदगुरु, आध्यात्मिक गुरु

चीन का नाम नहीं लेते

प्रधानमंत्री चीन का नाम नहीं लेते, विदेश मंत्री ना जाने क्यों चीन से घबराते हैं? चीन ने हमारे अरुणाचल की 30 जगहों के नाम बदल दिए-जयशंकर जी कहते हैं, क्या फ़र्क पड़ता है- मैं आपके घर का नाम बदल दूं, तो वह घर मेरा थोड़े ही हो जाएगा
-सुप्रिया श्रीनेत, कांग्रेस नेता

नवाचार बढ़ने के प्रमाण

पूरे भारत में तकनीकी नवाचार के बढ़ने के प्रमाण। एक इंजीनियर जो अभी तक कोई अन्य डिलीवरी ऐप नहीं बना रहा है। संजीव आईआईटीआर स्तर 5 की स्वायत्तता को लक्षित करने के लिए जटिल गणित का उपयोग कर रहा है।
-आनंद महिंद्रा, उद्योगपति

करंट अफेयर

इजराइल अल जजीरा का संचालन बंद करेगा

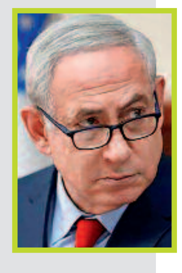

इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने संसद द्वारा अल जजीरा चैनल को बंद करने जैसे फैसले के लिए कानून पारित किए जाने के बाद सोमवार को संकल्प जताया कि देश में इस चैनल का परिचालन बंद कर दिया जाएगा। उन्होंने यह आरोप भी लगाया कि यह 'आंतकवादी चैनल' है जो उकसाता है। प्रसारक ने नेतन्याहू के उकसाने वाले दावे की निंदा करते हुए इसे 'खतरनाक, हास्यास्पद झूठ' बताया। अल जजीरा ने सोमवार देर रात एक बयान में कहा कि वह नेतन्याहू को अपने कर्मचारियों और कार्यालयों की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार मानता है। चैनल के मुताबिक, उसके पत्रकार अपने साहसिक और पेशेवर कवरेज को जारी रखेंगे, और वह ''हर कानूनी कदम उठाने का अधिकार सुरक्षित रखता है।'' इजराइल के अल जजीरा के साथ लंबे समय से खराब संबंध रहे हैं। इजराइल चैनल पर उसके प्रति पूर्वाग्रह रखने का आरोप लगाता है। लगभग दो साल पहले दोनों के संबंध तब और बिगड़ गए जब इजराइली कब्जे वाले वेस्ट बैंक में इजराइली सैन्य हमले के दौरान अल जजीरा की संवाददाता शिरीन अबू अकलेह की हत्या कर दी गई थी। अल जजीरा उन कुछ अंतरराष्ट्रीय मीडिया घरानों में से एक है जिसने पूरे युद्ध के दौरान गाजा से खबरें दीं।

ऑफ बीट

जीवित पक्षियों के लिए नए 'जीवन वृक्ष' का पता चला

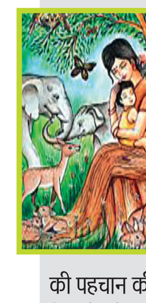

पक्षी जीनोम के अब तक के सबसे बड़े अध्ययन से पक्षी परिवार के पेड़ की उल्लेखनीय रूप से स्पष्ट तस्वीर सामने आई है। अध्ययन से पता चलता है कि पक्षियों के अधिकांश आधुनिक समूह डायनासोर के विलुप्त होने के 50 लाख वर्षों के भीतर पहली बार दिखाई दिए। पक्षी हमारे जीवन का एक बड़ा हिस्सा हैं, शहरों में भी यह प्रकृति का प्रतीक हैं। वे आम जनता के बीच लोकप्रिय हैं और वैज्ञानिकों द्वारा उनपर काफी अध्ययन किया गया है। लेकिन इन सभी पक्षियों को एक पारिवारिक वृक्ष में रखना निराशाजनक रूप से कठिन रहा है। 360 से अधिक पक्षी प्रजातियों के जीनोम का विश्लेषण करके, हमारे अध्ययन ने जीवित पक्षियों के प्रमुख समूहों के बीच मौलिक संबंधों की पहचान की है। नया पारिवारिक वृक्ष पक्षी संबंधों के बारे में कुछ पिछले विचारों को उलट देता है, साथ ही कुछ नए समूहों का भी खुलासा करता है। पक्षी परिवार के पेड़ की तीन प्रमुख शाखाएँ हैं। पहली शाखा में टिनमस और रैटाइट्स शामिल हैं, जिनमें एमु, कीवी और शुतुरमुर्ग जैसे बिना उड़ने वाले पक्षी शामिल हैं। दूसरी शाखा में भूमिपक्षी और जलपक्षी – मुर्गियाँ, बत्तखें इत्यादि हैं। अन्य सभी पक्षी तीसरी शाखा में आते हैं, जिसे निओवेस के नाम से जाना जाता है, जिसमें 95% पक्षी प्रजातियाँ शामिल हैं।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय
टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-42422221 पर या सीधे मेल से **aapkepatra.haribhoomi@gmail.com** पर भेज सकते हैं।

सच्ची सहेली®
कठिन समस्याओं के लिए भरोसेमंद टॉनिक
पूरे माह रहें एक्टिव, फिट एवं स्वस्थ
Clinically Tested*
24x7 Helpline: 77106 44444 • www.sachisaheli.in
67 दुर्लभ प्राकृतिक जड़ी-बूटियों से बना 'सच्ची सहेली' आयुर्वेदिक टॉनिक एवं टेबलेट्स
पहले महीने असर देखें
SACHI SAHELI
• कठिन दर्द
• चिड़चिड़ापन
• थकान
• कमजोरी
• कमर कटना
• इम्यूनिटी

अल्लू के बर्थडे पर आउट होगा पुष्पा 2 का टीजर

मुंबई। साउथ सुपरस्टार अल्लू अर्जुन कुछ दिनों बाद अपना 42वां बर्थडे सेलिब्रेट करने जा रहे हैं। इस मौके को और खास बनाने के लिए पुष्पा 2 की टीम फिल्म का दूसरा टीजर रिलीज करने जा रही है। मंगलवार को पुष्पा 2 के टीजर रिलीज की आधिकारिक घोषणा की गई है। फिल्म का नया पोस्टर रिलीज करने हुए मेकर्स ने फिल्म के टीजर रिलीज डेट से पर्दा उठा दिया है। पुष्पा 2 का टीजर अल्लू अर्जुन के बर्थडे यानी 8 अप्रैल को रिलीज किया जाएगा। वहीं, फिल्म के नए पोस्ट की बात करें, तो इसमें पैर में घुंघरू बांधे एक पैर को दिखाया गया है, जो पुष्पा राज का हो सकता है।

लाइफ Style

सामंथा

एटली की अपकमिंग मूवी में एंट्री

क्या आप साउथ के तीन जाने-माने चेहरों की तिकड़ी को साथ में देखना चाहते हैं? ये तिकड़ी है शाहरुख खान की 'जवान' फिल्म के डायरेक्टर एटली, 'पुष्पा' स्टार अल्लू अर्जुन और फेमस एक्ट्रेस सामंथा रुथ प्रभु की। सामंथा ने पहले अल्लू अर्जुन और एटली दोनों के साथ ही काम किया है।

एजेंसी ⏭ मुंबई

एटली अपनी अपकमिंग मूवी के लिए अल्लू अर्जुन का नाम फाइनल कर चुके हैं और अब वो हीरोइन के रूप में सामंथा को बोर्ड में लेना चाह रहे हैं। दोनों के बीच बातचीत चल रही है। अभी ऑफिशियल अनाउंसमेंट आना बाकी है। रिपोर्ट के मुताबिक, एटली अब अल्लू अर्जुन के साथ धमाका करने के लिए तैयार हैं। दोनों अक्टूबर 2024 से इस फिल्म पर काम शुरू करेंगे। दोनों ने सब्जेक्ट को फाइनल कर लिया है और एटली ने इस प्रोजेक्ट के लिए कास्टिंग का प्रोसेस शुरू कर दिया है। प्रोडक्शन से जुड़े सूत्रों का कहना है कि एटली अपनी फिल्म की हीरोइन के लिए सामंथा रुथ प्रभु से बातचीत कर रहे हैं। अगर ये खबर सही साबित होती है तो सामंथा और अल्लू एक बार फिर से साथ में स्क्रीन शेयर करते नजर आएंगे। 'पुष्पा: द राइज' फिल्म में सामंथा का आइटम सॉन्ग था, जो खूब पॉप्युलर हुआ था। सूत्र का कहना है कि सामंथा और एटली के बीच पुराने समय से ही बहुत अच्छा रिश्ता रहा है। दोनों पहले 'थेरी' फिल्म में साथ काम कर चुके हैं।

टॉक्सिक में नजर आएंगी करीना और कियारा

मुंबई। साउथ के सुपरस्टार यश इन दिनों अपकमिंग मूवी 'टॉक्सिक' को लेकर चर्चा में हैं। फिल्म का प्री-प्रोडक्शन का काम जारी है। अब कास्टिंग को लेकर बड़ा खुलासा हुआ है। बताया जा रहा है कि फिल्म में एक नहीं, बल्कि तीन-तीन हसीनाएं होंगी, जिनमें से दो का नाम भी फाइनल हो गया है। ये दो हसीनाएं बॉलीवुड से चुनी गई हैं। इनका नाम करीना कपूर खान और कियारा आडवाणी बताया जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक, टॉक्सिक में तीन-तीन लीडिंग एक्ट्रेसेस होंगी। बोर्ड में करीना कपूर खान और कियारा आडवाणी को शामिल कर लिया गया है। मेकर्स जल्द ही इसको लेकर ऑफिशियल अनाउंसमेंट भी करने वाले हैं। सूत्र ने ये भी खुलासा किया है कि करीना फिल्म में यश की बहन का रोल करने वाली हैं। अगर ऐसा होता है तो करीना इस फिल्म से साउथ फिल्म इंडस्ट्री में डेब्यू करेंगी। बताया जा रहा है कि ये फिल्म ड्रग कार्टेल पर बेस्ड है, जो गोवा में समंदर के किनारे धड़ल्ले से चल रहा है। हाल ही में फिल्म के सेट से एक फोटो और वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें यश डायरेक्टर के साथ शूटिंग और लोकेशन को लेकर प्लानिंग बना रहे थे। इस फिल्म को रिलीज होने में अभी काफी वक्त है। कहा जा रहा है कि ये अगले साल 2025 में रिलीज हो सकती है।

क्रू ने किया 30 करोड़ का आंकड़ा पार

मुंबई। फिल्म 'क्रू' ने 29 मार्च को सिनेमाघरों में दस्तक दी है। इस फिल्म को रिलीज के साथ ही बेहतरीन रिस्पॉन्स मिल रहा है। मूवी में तीनों हसीनाओं ने अपनी एक्टिंग का ऐसा जादू बिखेरा की फिल्म ने महज तीन दिनों में ही शानदार कमाई कर डाला। ऐसे में अब 'क्रू' के चौथे दिन के शुरुआती आंकड़े सामने आ चुके हैं। 'क्रू' में करीना, तब्बू और कृति ने एयर होस्टेस का रोल निभाया है। तीनों की तिकड़ी ने ऑडियंस को जमकर एंटरटेन तो किया ही है साथ ही खूब हंसाया भी है। चार दिन में फिल्म की कुल कमाई 30.78 करोड़ रुपए हो गई है। क्रू भले ही बॉक्स ऑफिस पर अपना कब्जा जमा रही है, लेकिन इसके सामने कई बड़ी फिल्में मुकाबले के लिए खड़ी हैं। अजय देवगन और आर माधवन की फिल्म 'शैतान' लगातार बॉक्स ऑफिस पर कमाई के रिकॉर्ड बना रही है तो वहीं दूसरी तरफ सिद्धार्थ मल्होत्रा की फिल्म 'योद्धा' भी सामने खड़ी है।

मोस्ट अवेटेड फिल्म मैदान का ट्रेलर रिलीज

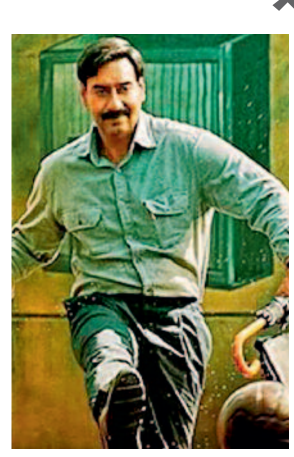

मुंबई। अजय देवगन की मोस्ट अवेटेड फिल्म मैदान का ट्रेलर रिलीज हो गया है। काफी समय से इस फिल्म की रिलीज का इंतजार कर रहे फैंस ट्रेलर देखकर काफी खुश हैं और अब फिल्म की रिलीज का इंतजार कर रहे हैं। ट्रेलर की शुरुआत होती है प्रियमणि से, जो कहती हैं वैसे पूरी इंडिया में किसी को नहीं लगता कि हम जीते हैं पर आपको लगता है। कब? इसके बाद दिखाया जाता है कि अजय भारत के लिए एक फुटबॉल की टीम तैयार कर रहे हैं। वह चुन-चुनकर खिलाड़ी लेकर आते हैं जहां मैनेजमेंट से भी उन्हें काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। देश का नाम रोशन करने के बीच अजय के खिलाफ जब पूरी दुनिया हो जाती है तो कैसे वह लड़ते हैं यही मैदान की कहानी है।

जैन चुस्की चाय के 10रू. वाले 1 पैक से बनायें 25 कप कड़क चाय
जैन चुस्की® चाय
50g
एक कप और हो जाये!
जैन चुस्की चाय एक कप और हो जाए
भारतवर्ष के सभी प्रमुख स्टोर्स पर उपलब्ध
For Trade Inquiry
JAIN TRADERS 94242-05071
fssai Lic No.: 10519016000001
www.chuskitea.com
डुप्लिकेट से सावधान जैन चुस्की ट्रेडमार्क देखकर ही खरीदें

मोहिना कुमारी के घर गूंजी नन्हीं शहजादी की किलकारी

मुंबई। टीवी शो ये रिश्ता क्या कहलाता फेम मोहिना कुमारी सिंह के घर हाल ही खुशियों ने दस्तक दी है। मोहिना कुमारी का घर आखिरकार किलकारियां गूंज उठी है। एक्ट्रेस ने एक प्यारी सी बेटी को जन्म दिया। बता दें कि अभी तक खुद मोहिना ने सोशल मीडिया के जरिए ये जानकारी अपने फैंस को नहीं दी है। इस बारे में हालांकि अभी और जानकारी सामने नहीं आ पाई है हालांकि उनके फैन पेज ने मोहिना के दूसरी बार मां बनने की खबरों को लेकर कई पोस्ट किए हैं। देखना

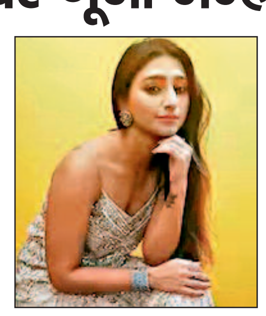

होगा कि अदाकारा के परिवार से ये न्यूज कब तक कंफर्म हो पाती है। मोहिना ने 14 अक्टूबर 2019 को उत्तराखंड के कैबिनेट मंत्री व आध्यात्मिक गुरु सतपाल महाराज के छोटे बेटे सुयश रावत के साथ शादी रचाई थी। उस समय इस शाही शादी की चर्चा पूरे देश में हुई थी। शादी के करीब ढाई साल बाद कपल ने 15 अप्रैल 2022 एक प्यारे से बेटे का स्वागत किया, जिसका नाम उन्होंने रेयांश रखा है। वहीं अब कपल दूसरी बार पेरेंट्स बना। फिलहाल हमें एक्ट्रेस की बेटी की तस्वीर का इंतजार है। हम मोहिना और सुयश रावत को बच्चे को ढेर सारी बधाई देते हैं।

JHAIGO झाईगो 5+1 Cream
चेहरे को दागों से मुक्त कर सुंदरता बढ़ाये...
तो फिर क्या.. बस इस बार झाईगो क्रीम उपयोग कर देखें।
क्या आपके... चेहरे पर झाईयां है? आंखो पर काले घेरे हैं?
चेहरे पर मुहाँसे के काले निशान हैं? या जले या चोट के निशान हैं?
वैदेही तुलसी कफ सीरप
नई एवं पुरानी खांसी, एलर्जी खांसी, श्वास, निमोनिया, कुकुरखांसी, टान्सिल, ब्रानकाटिस, सर्दी आदि में तेज असर कारक
2 वर्ष से बड़े बच्चों के लिए हानिरहित कफ सिरप
HMS देखकर खरीदें
एक बार उपयोग कर देखें 94060-21769

पूजा की लाइफ में प्यार की एंट्री रोहन मेहरा संग स्पॉट हुई एक्ट्रेस

मुंबई। एक्ट्रेस पूजा हेगड़े अपनी निजी जिंदगी के मामले में लो प्रोफाइल रहती हैं। लेकिन वो इस बार कथित बॉयफ्रेंड रोहन मेहरा के साथ स्पॉट की गईं। दोनों की तस्वीरें मुंबई के बांद्रा में पपाराज़ी ने लीं। पूजा और रोहन को

एक ही कार में साथ जाते हुए भी देखा गया। पूजा कथित तौर पर पिछले कुछ समय से रोहन को डेट कर रही हैं। वह दिवंगत एक्टर विनोद मेहरा के बेटे हैं। रोहन ने 2018 में सैफ अली खान के साथ 'बाजार' से बॉलीवुड में डेब्यू किया। रोहन का नाम पहले 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर 2' स्टार तारा सुतारिया के साथ जोड़ा गया था। हालांकि, मई 2019 में दोनों के अलग होने की खबरें आने लगीं। 2023 में पूजा तब सुर्खियों में आईं जब कई रिपोर्ट्स में दावा किया गया कि वह मुंबई के एक क्रिकेटर को डेट कर रही हैं और जल्द ही उनके साथ शादी के बंधन में बंधेंगी। एक्ट्रेस ने इन अफवाहों को झूठ बताते हुए खारिज कर दिया। पिछले महीने पूजा मिस वर्ल्ड 2024 के ग्रैंड फिनाले में जजों में से एक थीं। पपाराज़ी के साथ बातचीत करते हुए उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि लाइफ सर्कल पूरा हो गया है क्योंकि मैं कॉम्पटिशन में रनर अप रही थी, लेकिन आज मैं इसे जज कर रही हूं। वर्कफ्रंट पर, पूजा को आखिरी बार सलमान खान के साथ 'किसी का भाई किसी की जान' में देखा गया था।

हरिभूमि HEALTH CARE
छत्तीसगढ़ के मेडिकल विशेषज्ञ

सभी प्रकार के स्किन एवं बाल संबंधी समस्याओं का निदान, मुंहासे, झांई, झुर्रियों का इलाज, अनचाहे बालों हेतु लेजर ट्रीटमेंट
सिंघानिया स्किन केयर
36, प्रथम तल, गुरूकुल कॉम्प्लेक्स कालीबाड़ी, रायपुर 0771-4053311
Email:bsinghania111@yahoo.co.in
Makeover Skin, Hair & Aesthetic Centre
रानी सती मंदिर के पास, केनाल लिंकिंग रोड, रवीनगर, राजातालाब, रायपुर
मो. 94252-14479
0771-4020411
www.makeoverraipur.com
त्वचा व बाल संबंधी समस्याओं का इलाज

सुविधाएं : पी.एफ.टी. ब्रांकोस्कोपी स्लीप स्टडी
डॉ. राठौर चेस्ट क्लिनिक
दमा, टी.बी., छाती एवं एलर्जी रोग विशेषज्ञ
स्पेशलिस्ट : खासी, श्वॉस, दमा, टी.बी., निमोनिया, एलर्जी फेफड़े का कैंसर, खर्राटे व नींद
गरचा कॉम्प्लेक्स, कचहरी चौक, जेल रोड, रायपुर
मो. 7999450384, 7042974029
समय : दोपहर 2.00 बजे से शाम 7.00 बजे तक (रविवार अवकाश)

कान, नाक, गला, एलर्जी एवं वर्टिगो (चक्कर) कोअब्लेशन एवं लेजर सर्जरी हॉस्पिटल
डॉ. जाऊलकर
ई.एन.टी. हॉस्पिटल (ISO 9001-2000 Certified)
सेन्ट्रल एवेन्यू चौबे कालोनी प्रगति कॉलेज रायपुर (छ.ग.)
फोन: 0771-4044551
समय: सुबह 9.30 से 4.30 तक

मनोरोग नशा उन्मूलन एवं यौन रोग विशेषज्ञ
प्रभा मनोचिकित्सा क्लिनिक
मो. 9977247553
नया पता : शॉप नं. 119, प्रथम तल, लालगंगा मिडास, फाफाडीह, रायपुर
समय : सुबह 11.00 से शाम 5.00 बजे तक
सिरदर्द, मिर्गी, मानसिक तनाव, घबराहट, असामान्य व्यवहार, डिप्रेशन, शीर्ध पतन, आदि, हर माह के प्रथम रविवार को कवर्धा में 12.00 से 4.00 एवं 8.30 से 10.30 बेमेतरा में

उपलब्ध विशेषताएं
• लेप्रोस्कोपिक एवं जनरल सर्जरी
• जनरल मेडीसीन • ऑर्थोपेडिक्स
• जोड़ प्रत्यारोपण सर्जरी
• ऑन्कोलॉजी (सर्जिकल)
• गायनेकोलॉजी
अग्रवाल हॉस्पिटल (मल्टीस्पेशियेलिटी सेन्टर)
जी.ईरोड, आर.के.सी. कॉम्प्लेक्स के सामने, रायपुर (छ.ग. 492001)
फोन: +91-0771-4088107/108, ईमरजेंसी नंबर 9109187755, डॉ. सजन अग्रवाल - 9329101037
लेप्रोस्कोपिक सर्जरी में सभी प्रकार की हार्निया, अपेन्डिक्स, पित की थैली, बच्चादानी आदि से संबंधित ऑपरेशन सभी तरह की कैंसर सर्जरी एवं कीमोथेरेपी की सुविधा उपलब्ध
OPD समय - शाम 4 से 6 बजे

डायबिटीज / शुगर संबंधी सभी समस्याएं, थायराइड, मोटापा, प्रेग्नेंसी डायबिटिस, फुलबॉडी चेकअप, डायबिटिक सेक्स रोग, नसों की सुन्नता।
डायबिटिक क्लीनिक
Dr. Satyajeet Sahu Advance Dibetes & Thyroid care centre
Diabetic Clinic
Appointments No. 7724035770 9329004557 9303724304
17, गुरूकुल कॉम्पलेक्स, कालीबाड़ी रायपुर, समय - सुबह 10 से 5, शाम 6 से रात 9 बजे तक

अष्टविनायक हॉस्पिटल
बच्चों के सभी ऑपरेशन किये जाते हैं।
* आयुष्मान कार्ड / राशन कार्ड द्वारा ऑपरेशन संभव *
बच्चों के विशेषज्ञ सर्जन
डॉ. रितेश रंजन (MCH, पीडियाट्रिक सर्जन)
आमा सिवनी, विधानसभा रोड, रायपुर (छ.ग.) 7987225800, 9301744425

राज-राजेश्वरी आयुर्वेदिक वेलनेस सेंटर
(राज्य और शहर के प्रसिद्ध 22 सालों से क्षेत्र में अनुभवी)
डॉ. के.बी. श्रीनिवास राव
(राज्य अलंकरण अवार्ड से सम्मानित)
विशेषज्ञ- वात, स्पाइन एवं पाइल्स केयर
मो. 9179455561, 9039050422
अशोक विहार, स्ट्रीट नं 5, सरस्वती दाल मिल के सामने, मंडी गेट सामने, पंडरी, रायपुर; मनसा चैम्बर्स, कल्याण हॉस्पिटल के पीछे, बिलासपुर रोड, फाफाडीह रायपुर

मोतियाबिंद
आयुष्मान कार्ड सुविधा
छोटी लाईन ब्रिज के पास, फाफाडीह, रायपुर 9644099925
SBH साईं बाबा नेत्र हॉस्पिटल

विज्ञापन हेतु संपर्क करें : 7987119756, 9303508133

जैकेट के शेष

40 डिग्री में .....

एवं मिडिल स्कूलों में परीक्षाओं के कारण सुबह स्कूल संचालित हो रहा है लेकिन स्कूल से छुटटी होने और मध्यान भोजन कर घर लौटते बच्चों को दोपहर 12 बजे की कड़ी धूप का सामना करना पड़ रहा है। मैनपुर विकासखंड क्षेत्र में कई ग्रामों से प्राथमिक शाला और मिडिल स्कूलो की दूरी 2 से 3 किमी दूर होने के कारण बच्चो को नंगे पैर तवे जैसे गर्म तपती दोपहरी में सड़क व पगडंडी मार्गो से घर लौटना पड़ रहा है। यह तस्वीर देहारगुड़ा जिड़ार, तुहामेटा मार्ग पर लिया है। जानकारी के अनुसार हालांकि शासन ने स्कूलों के समय सारणी में बदलाव कर दिया गया है। सुबह 7.30 बजे से 11.30 बजे तक स्कूल संचालित हो रहा है लेकिन स्कूलो में बच्चो को मध्यान भोजन कर वापिस घर लौटने में दोपहर का समय लग रहा है।

15 हजार से अधिक आंगनबाड़ी के बच्चों का गर्मी से सबसे ज्यादा हाल खराब : सबसे ज्यादा परेशानी आंगनबाड़ी जाने वाले बच्चो को उठाना पड़ रहा है। छोटे छोटे बच्चो के प्रति राज्य में महिला एवं बाल विकास विभाग कितना गंभीर है इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि इस गर्मी में आंगनबाड़ी का संचालन सुबह 9.30 बजे से दोपहर 3 बजे तक किया जा रहा है। तपतपाती धूप और गर्मी के बीच बगैर पंखा कूलर के आंगनबाड़ी आने वाले बच्चे परेशान और बेहाल हो रहे हैं। मैनपुर विकासखंड क्षेत्र मे कुल 342 आंगनबाड़ी केन्द्रों का संचालन हो रहा है। इनमें लगभग 15 हजार के आसपास 0 से 5 वर्ष तक के बच्चे अध्ययन करते हैं। और तो और 50 से ज्यादा आंगनबाड़ी भवन ही नही है।

स्कूल का संचालन दोपहर 12 बजे तक किया जा रहा है। स्कूली बच्चों को जूता चप्पल देने की योजना नही है। समय अभी परिवर्तित नही हुआ है।15 अप्रैल के बाद समय में परिवर्तन होगा।

- **चन्द्रशेखर मिश्रा**
विकासखंड शिक्षा अधिकारी मैनपुर

बच्चे 10 सेकंड भी ....

तेज गर्मी के मद्देनजर स्कूल का समय सुबह करके बच्चों को राहत देने की कोशिश भी 36 डिग्री पर पहुंचे तापमान के कारण कारगर सिद्ध नहीं हो पा रही है। रसेला के पारा बेलडीही, कारीमाटी, टेम्पापारा, लादनपारा में मिडिल स्कूल नहीं होने से यहां के बच्चे आधा या एक किलोमीटर पैदल चलकर आना-जाना करते हैं। बच्चों की असली परीक्षा स्कूल की छुट्टी के समय होती है, जब 11:30 बजे बच्चे स्कूल से छूटते हैं। उस समय समय धूप तेज होती है, गर्म हवाएं भी खूब चलती है।

गंगालूर के लेण्ड्रा ....

तक मारे गए नक्सलियों की शिनाख्त नहीं हो सकी है। आईजी सुंदरराज पी ने बताया कि थाना गंगालूर क्षेत्र में डीआरजी, एसटीएफ, कोबरा व सीआरपीएफ की संयुक्त पार्टी सर्चिंग के लिए रवाना हुई थी। इसी दौरान सुबह लगभग 6 बजे लेण्ड्रा के जंगल में पुलिस पार्टी और माओवादियों के बीच मुठभेड़ शुरू हुई, जो लगभग 7 घंटे तक जारी रही। सुबह मुठभेड़ के बाद 4 नक्सलियों के मारे जाने की खबर आ रही थी, जो शाम होते तक 10 हो गई। मुठभेड़ स्थल से भारी मात्रा में हथियार व गोला बारूद के अलावा दैनिक उपयोग की सामग्री जब्त की गई है। वहीं मुठभेड में कई नक्सलियों के घायल होने की संभावना पुलिस ने व्यक्त की है और इलाके में सर्चिंग अभियान जारी है।

आईजी ने बताया कि मुठभेड़ स्थल से एक महिला समेत दस नक्सलियों के शव बरामद किए गए है, जिनकी पहचान का प्रयास किया जा रहा है। इसके अलावा घटनास्थल से एलएमजी ऑटोमेटिक हथियार के अलावा 303 रायफल, 12 बोर रायफल, भारी मात्रा में बीजीएल सेल, लांचर हथियार, गोला बारूद व नक्सलियों की दैनिक उपयोग की सामग्री बरामद हुई है। मुठभेड़ के बाद सुरक्षाबलों के बीजापुर जिला मुख्यालय पहुंचने के बाद घटना की विस्तृत जानकारी मिलने की बात कही जा रही है।

इतने खुले नए कैम्प : बीजापुर - 8, सुकमा - 6, नारायणपुर - 3, दंतेवाड़ा -1, कांकेर - 1, कुल 19 नए कैम्प

एक दिन पूर्व ....

शिनाख्त दिरदो हिड़मा लगभग 25 वर्ष निवासी पेसलपाड़ थाना किस्टाराम जिला सुकमा के रूप में की गई है, जो नक्सल संगठन में टेटेमड़गू आरपीसी मिलिशिया कमाण्डर के रूप में सक्रिय था और तेलंगाना के सीमावर्ती क्षेत्र में घटित विभिन्न नक्सली घटनाओं में शामिल रहा है।

2024 में अब ....

जा रहे अभियान से प्रभावित होकर 120 माओवादियों ने आत्मसमर्पण किया है। इस वर्ष अब तक हुए मुठभेड़ में बीजापुर जिले में सर्वाधिक 27 माओवादियों को ढेर किया जा चुका है। इसके अलावा दंतेवाड़ा जिले में 5, कांकेर में 5, सुकमा में 4 तथा नारायणपुर जिले में 2 माओवादियों को ढेर किया जा चुका है।

एक महिला नक्सली .....

महिला नक्सली कान्हा-भोरमदेव डिवीजन के विस्तार प्लाटून-02 की डिविजनल कमेटी की सदस्य थी। वहीं दूसरा नक्सली मलाजखंड एरिया कमेटी का सदस्य था। दोनों ही नक्सली मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र में कई नक्सली वारदातों को अंजाम दे चुके थे। हॉकफोर्स और सीआरपीएफ की टीम द्वारा मुठभेड़ के बाद जंगल में सघन सर्चिंग अभियान चलाया जा रहा है।

फ्लाइंग स्क्वाड ने ....

कालेज रोड रायगढ़ के आगे एकताल रोड में बंजारी मंदिर के पास ईनोवा क्रिस्टा वाहन क्रमांक जे एच 05 डी.सी.-5705 को चेक करने पर वाहन में दो व्यक्ति बैठे मिले। जिन्हें पूछताछ कर चेक करने पर एक कपड़ा के थैले में 500-500 रुपए के नोट के 100 बंडल कुल 50 लाख रुपए ले जाते मिला।

महंत बिफरे, कहा ....

प्रदेश के कांग्रेसियों को फोन कर अपने दल में आने का खेल कर रहे हैं। राजनांदगांव लोकसभा के मौजूदा एवं पूर्व विधायकों से भी दल बदलने के लिए संपर्क किया जा रहा है। कुछ पैसे वालों को भी पार्टी में शामिल कराने का दबाव बनाया जा रहा है। उन्होंने नवीन जिंदल द्वारा भाजपा प्रवेश किए जाने को लेकर कहा कि श्री जिंदल ने रायगढ़ इलाके में नान और खदान को लूटने का काम किया है। उन्होंने कहा कि हम लोगों ने श्री जिंदल को चढ़ाकर रखा हुआ था। संबोधन के दौरान श्री महंत ने पूर्व सीएम भूपेश बघेल से यह आग्रह भी किया कि वे अगली बार सीएम रहे या न रहे अपितु कोई और रहे, लेकिन बुरे समय में पार्टी का साथ छोड़ने वाले नेताओं की घर वापसी नहीं होना चाहिए। यदि ऐसा हुआ तो लोग कांग्रेस को वोट नहीं देंगे।

लोकतंत्र बचाने के लिए भाजपा को हराना जरूरी : बघेल : राजनांदगांव लोकसभा से अपना नामांकन दाखिल करने बाद सभा को संबोधित करते पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि देश में संविधान को बचाना है तो भाजपा को हराना जरूरी है। उन्होंने कहा कि भाजपा की मोदी सरकार क्षेत्रीय पार्टियों और विपक्षी दलों को समाप्त करने के लिए उनके खिलाफ एफआईआर कर जेल में डालने का काम कर रही है। प्रदेश की भाजपा सरकार को घेरते हुए कहा कि चार महीने में ही जनता त्रस्त हो गई है। जितने वादे किए उनको पूरा नहीं किया, गरीब परिवारों को मिलने वाले राशन में भी कटौती कर दी। उन्होंने कहा कि नमक, चना मिलना भी साय-साय बंद हो जाएगा।

कांग्रेसियों ने 5 ....

से जन सेवा शुरू किए और जनपद अध्यक्ष व विधायक के रूप मे सेवा कर चुके हैं। अब सासंद के रूप में क्षेत्र का विकास करेंगे। आप सबका बहुमूल्य वोट 26 को कमल छाप में बटन दबाकर मिलेगा। कांग्रेसियों को मजा चखाना है। पिछले 5 साल तक छग के जनता के साथ धोखा किया। बड़े विश्वास छग के जनता ने किया था, बहुंत बड़ा जनादेश दिया था, लेकिन 5 साल में एक भी वादा को पूरा नहीं किया। पूरे छग को लूटने का काम किया। छग को नक्सल का गढ़ बना दिया, अपराध का गढ़ बना दिया।

कांग्रेस के बड़े ....

प्रोटेक्शन मनी लेकर सट्टा खिलवाया। छत्तीसगढ़ में भाजपा सभी 11 सीटे जीत रही है। कांग्रेस अपने अस्तित्व पर आए संकट के लिए चुनाव लड़ रही है। पूरे प्रदेश में कांग्रेस को कहीं कोई जन समर्थन नहीं मिल रहा है।

उड़ान रद्द हो ....

हुए बीमार होने की सूचना दे रहे हैं। चालक दल की अनुपलब्धता और अन्य परिचालन कारणों के कारण एयरलाइन द्वारा परिचालन कम करने की घोषणा के एक दिन बाद यह बात सामने आई है। डीजीसीए ने मंगलवार को बयान में कहा कि विस्तारा की विभिन्न उड़ान बाधाओं के मद्देनजर उसने एयरलाइन को रद्द की जा रही और विलंबित उड़ानों की दैनिक जानकारी तथा विवरण देने को कहा है। डीजीसीए के अधिकारी उड़ान रद्द होने और देरी की स्थिति में यात्रियों को सुविधाएं प्रदान करने के लिए जरूरी आवश्यकताओं का अनुपालन सुनिश्चित करने को स्थिति की निगरानी कर रहे हैं। नियामक ने कहा, यह यात्रियों की असुविधा को कम करने के लिए है।

नागर विमानन मंत्रालय ने मंगलवार को कहा कि वह विस्तारा की उड़ानें रद्द होने की स्थिति पर नजर रख रहा है। मंत्रालय ने मंगलवार को सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, उड़ान संचालन का प्रबंधन एयरलाइन द्वारा स्वयं किया जाता है, लेकिन उड़ानों के रद्द होने या देरी की स्थिति में यात्रियों की सुविधा सुनिश्चित करने के लिए एयरलाइन को डीजीसीए मानदंडों का पालन करना होगा। कई यात्रियों ने सोशल मीडिया मंचों पर विमान सेवाओं में विलंब और उनके रद्द होने की शिकायत की है।

70 विमानों का बेड़ा : विस्तारा के पास 70 विमानों का बेड़ा है जिसमें ए320 बेड़े के 63 विमान और बोइंग 787 के सात बड़े आकार शामिल हैं। 31 मार्च से शुरू हुए ग्रीष्मकालीन कार्यक्रम के अनुसार एयरलाइन को प्रतिदिन 300 से अधिक उड़ानें संचालित करनी हैं। विस्तारा ने सोमवार को बयान में कहा था, पिछले कुछ दिनों में चालक दल की अनुपलब्धता सहित विभिन्न कारणों से बड़ी संख्या में उड़ानें रद्द की गईं या उनमें देरी हुई है।

भीषण आग... धुएं का गुबार

ठाणे। महाराष्ट्र के ठाणे जिले के नवी मुंबई के एक औद्योगिक क्षेत्र में मंगलवार को एक रासायनिक संयंत्र में आग लग गयी, जिससे आसपास की दो अन्य फैक्ट्रियां जलकर खाक हो गईं। आग को बुझाने का प्रयास करते अग्निशामक।

यूएस के लिए खतरा बने कमांडर जाहेदी को इजरायल ने मिसाइल से मार गिराया

सीरिया में ऑपरेशन, ईरान पर चोट

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

सीरिया में ईरानी दूतावास के नजदीक बड़ा इजरायली हवाई हमला हुआ है। इजरायली सेना ने सीरिया और लेबनान में आईआरजी फोर्स के एक वरिष्ठ कमांडर मोहम्मद रजा जाहेदी की हवाई हमले में हत्या कर दी. हालांकि इजरायल ने हमले पर कोई टिप्पणी नहीं की है। इजरायली सेना ने ईरानी दूतावास के कांसुलर अनुभाग पर स्टील्थ एफ-35 लड़ाकू जेट के माध्यम से छह मिसाइलें दागीं जिसमें जाहिदी की मौत हो गई। इस बीच हमले के बाद सीरिया में ईरान के राजदूत ने चेतावनी देते हुए कहा है कि इस हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। ईरान के विदेश मंत्री होसैन अमीराब्दुल्लाहियन ने हमले के बाद अपने सीरियाई समकक्ष के साथ फोन पर बात की और कहा कि इस हमले के लिए इजरायल जिम्मेदार है। रॉयटर्स की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि हमला इतना भीषण था कि दूतावास परिसर में एक इमारत "समतल" हो गई है। कहा जा रहा है कि इस हमले के बाद मध्य पूर्व में टकराव बढ़ेगा जो इजरायल को ईरान और उसके सहयोगियों के खिलाफ खड़ा कर देगा।

गाजा में इस्राइली हमलों के चलते सात कर्मचारियों की मौत

पिछले साल सात अक्तूबर को गाजा स्थित आतंकी संगठन ने इस्राइल पर पांच हजार रॉकेट दागे, जिसके बाद इस्राइल लगातार गाजा पर जवाबी कार्रवाई कर रहा है। गाजा में मौजूद आतंकी संगठन हमास के ठिकानों को इस्राइली सेना निशाना बना रही है। हालांकि इस्राइल की ताबड़तोड़ जवाबी हमलों को लेकर कई देश इस्राइल की आलोचना कर रहे हैं। इस बीच, गाजा में हताहत लोगों को सहायता पहुंचे वाले समूह भी इस्राइली हमले का शिकार हो गया है। जिसमें तकरीबन सात विदेशी कर्मचारी मारे गए। इस घटना के बाद इस्राइली सेना ने सहायता कर्मियों की मौत पर दुख व्यक्त किया है। गाजा में लोगों को राहत देने वाले अंतरराष्ट्रीय सहायता समूह ने कहा कि सोमवार देर रात मध्य गाजा में इस्राइली हमले में सात विदेशी कर्मचारी मारे गए, जिनमें ऑस्ट्रेलिया, पोलैंड और ब्रिटेन के नागरिक शामिल थे।

मुख्तार अंसारी की मौत कोर्ट ने किया जेल अधिकारी को तलब

बाराबंकी। माफिया मुख्तार अंसारी मौत मामले में बाराबंकी की कोर्ट ने बांदा जेल के अधिकारी को तलब किया है। जेल अधिकारी कोर्ट को ये बताएंगे कि न्यायिक अभिरक्षा में मुख्तार अंसारी की मौत कैसे हुई। दरअसल, आज चर्चित फर्जी एंबुलेंस मामले में सरकार बनाम डॉ. अलका राय केस में मुख्तार की पेशी होनी थी। जिसमें वकील रणधीर सिंह ने कोर्ट से मुख्तार अंसारी की मौत की वजह जानने के लिए जेल अधिकारियों को तलब करने के मांग की।

आम सूचना

सर्वसाधारण को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि विक्रेता- बिरजू साहू पिता फेरू साहू, निवासी- 8/541, डी.डी. नगर, नया तालाब, रायपुर छ.ग. द्वारा मुख्यार आम मनोहर पाल पिता श्री रिखीराम पाल, निवासी-40/229, वार्ड नं. 54, पुजा किराना स्टोर्स के पास, संजय नगर, रायपुर छ.ग. के स्वामित्व एवं आधिपत्य की भूमि जो कि वाके मौजा- ग्राम- अमलेश्वर, प.ह.नं. 03, रा.नि.मं. अमलेश्वर तहसील पाटन जिला-दुर्ग छ.ग. में स्थित भूमि ख.नं. 555/29 रकबा 0.020 हेक्टेयर अर्थात 1650 वर्गफीट है, जिसे मेरे पक्षकारगण / क्रेतागण 1. कौशल कुमार साहू पिता हरि राम साहू, 2. परमेश साहू पिता हरिराम साहू, दोनों निवासी - 366, ए-ब्लॉक, लाईन नं. - 25, तुलाडुंगरी, गुरुद्वारा के पास, पोस्ट-गोलमुरी, जमशेदपुर (झारखण्ड) द्वारा क्रय करने का पक्का सौदा कर कर लिये है तथा पंजीयन की कार्यवाही शेष है।

अतः उपरोक्त वर्णित संव्यवहार से या उक्त सौदे पर किसी भी व्यक्ति संस्था, निकाय, बैंक बीमा, वित्तीय संस्था, आर. डी. ए शासन, प्रशासन निगम इत्यादि अन्य को किसी भी प्रकार की उजर या आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 07 दिन के अंदर मेरे समक्ष लिखित मय दस्तावेज के अपने आपत्ति दर्ज करावें बाद म्याद उपरोक्त संपत्ति का बैनामा पंजीयन मेरे पक्षकार द्वारा अपने पक्ष में करवा लिया जायेगा, तथा बाद म्याद प्रस्तुत की गयी आपत्ति, उजर या दावा झूठी व विधि विरुद्ध मानी जावेगी, एवं मेरे पक्षकार पर बंधनकारी नहीं होगा।
रायपुर छ.ग.
दिनांक 02/04/2024

भवदीय
दिलीप देवांगन (अधिवक्ता)
कार्यालय पता- म.नं. ए-151, आदर्श नगर, कुशालपुर, रायपुर (छ.ग.)
मो. नं. - 99771-00085

पेज एक के शेष

हाईकोर्ट का बड़ा...

ने 29 फरवरी को फैसला सुरक्षित रखा था। इस पर अब सोमवार को फैसला आया है। हाईकोर्ट के इस आदेश के बाद अब असिस्टेंट टीचर की भर्ती में बीएड पास उम्मीदवारों की दावेदारी खत्म हो गई है। ज्ञात हो कि डीएलएड प्रशिक्षित अभ्यर्थी विकास सिंह, युवराज सिंह सहित अन्य ने हाईकोर्ट में अलग-अलग याचिकाएं दायर की थीं। इसमें बताया था कि 4 मई 2023 को सहायक शिक्षकों के तकरीबन 6500 पदों पर भर्ती के लिए विज्ञापन जारी किया गया था। 10 जून को परीक्षा हुई थी। इसमें बीएड और डीएलएड प्रशिक्षित दोनों अभ्यर्थी शामिल हुए थे।

याचिका में बताया गया है कि प्राइमरी स्कूल में अध्यापन के लिए डीएलएड पाठ्यक्रम में विशेष ट्रेनिंग दी जाती है। जबकि बीएड पाठ्यक्रम में उच्चतर कक्षाओं में पढ़ाने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

रास से 54 सांसदों...

उन्हें अर्थव्यवस्था में कई सुधारों की शुरुआत करने के लिए जाने जाते हैं। अक्तूबर 1991 में पहली बार राज्यसभा के सदस्य बने थे। वह 1991 से 1996 तक नरसिम्हा राव सरकार में वित्त मंत्री और 2004 से 2014 तक देश के प्रधानमंत्री भी रहे थे। सात केंद्रीय मंत्री जो राज्यसभा से मंगलवार को सेवानिवृत्त हो गए हैं, उनमें शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया, पशुपालन और मत्स्य पालन मंत्री पुरषोत्तम रूपाला, सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री राजीव चंद्रशेखर, विदेश राज्य मंत्री वी मुरलीधरन, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री नारायण राणे और सूचना और प्रसारण राज्य मंत्री एल. मुरुगन हैं। वहीं पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव का कार्यकाल बुधवार को समाप्त हो जाएगा। खास बात है कि रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव, मुरुगन को छोड़कर बाकी सभी केंद्रीय मंत्री लोकसभा चुनाव लड़ रहे हैं।

मुरादाबाद में बनाए जा रहे हैं पीतल के शिव पिंड

पीतल नगरी में बन रही अनोखी शिवलिंग

एजेंसी ▶▶| मुरादाबाद

यूपी का मुरादाबाद पूरी दुनिया में पीतल नगरी के नाम से जाना जाता है। यहां के पीतल के उत्पादन देश-विदेश में एक्सपोर्ट किए जाते हैं। तो वहीं इन पीतल के उत्पादों पर चार चांद लगाने का काम करते हैं यहां के शिल्पगुरु, जो अपनी सुंदर-सुंदर नक्शी से इन्हें और ज्यादा खूबसूरत और आकर्षित बनाते हैं। यही वजह है कि यहां के उत्पाद देश-विदेश में पसंद किए जाते हैं। तो वहीं पीतल नगरी में अब पीतल के उत्पादों के साथ-साथ पीतल के शिव पिंड जी भी बनाए जा रहे हैं। यह शिव पिंड विभिन्न आकार के बनाए जा रहे हैं। जिसमें छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी सभी प्रकार की शिवलिंग शामिल है। जिनकी बहुत अच्छी डिमांड सामने आ रही हैं। इसके साथ ही जमकर इनकी बिक्री भी हो रही है।

कई साइज के होते हैं शिव पिंड

पीतल कारोबारी सुरेंद्र दिवाकर ने बताया कि वैसे तो शिव पिंड कई साइज में आते हैं लेकिन मेरे पास तीन साइज उपलब्ध हैं। ज्यादातर यह होता है कि खाली शिवलिंग बिकती है। ऊपर गिलहरी नहीं होती है लेकिन मैंने यह गिलहरी लगाकर पूरा से सेट खुद तैयार किया है जिसे मैं सेल कर रहा हूं. एक दिन जब मैं पूजा कर रहा था तो शिवलिंग के ऊपर से जल इधर-उधर जा रहा था तो मैंने सोचा कि कुछ अलग किया जाए। जिसको देखते हुए मैंने यह पूरा शिव पिंड तैयार किया है जिससे जल भी इधर-उधर नहीं जाएगा।

भोजशाला में मिले अष्टवक्र कमल, शंख और हवन कुंड!

हरिभूमि न्यूज ▶▶| धार

मध्यप्रदेश के धार के भोजशाला मसले से जुड़े एक हिंदू पक्षकार ने मंगलवार को दावा किया कि भोजशाला - कमाल मौला मस्जिद परिसर में चल रहे सर्वेक्षण के दौरान हिंदुओं के धार्मिक प्रतीक चिह्नों और वस्तुओं वाला तहखाना मिला है। तिवारी ने दावा किया कि तहखाने में संस्कृत शिलालेख के साथ ही 'अष्टवक्र कमल', 'शंख' और 'हवन कुंड' के अलावा भगवान हनुमान की प्रतिमा सरीखी धार्मिक वस्तुएं और प्रतीक चिह्न पाए गए हैं जिनसे संकेत मिलता है कि भोजशाला, हिंदुओं का एक मंदिर है। मुस्लिम पक्ष ने आरोप लगाया कि यह दावा 'भ्रामक' है। मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के आदेश पर एएसआई ने भोजशाला के विवादित परिसर में 22 मार्च से सर्वेक्षण शुरू किया था। यह आदेश भोजशाला मसले में अदालत में याचिका दायर करने वाले एक हिंदू संगठन के आवेदन पर दिया गया था।

■ हिंदू पक्ष का बड़ा दावा

GENERAL CAVEAT

That, the Caveator/ (Proposed) Respondent- Rama Metals and energy Pvt. Ltd. Bilaspur (C.G.) Through its Director Shri Sanjay Agrawal apprehends that the (proposed) Petitioner's/ Public at Large may file Writ Petition before Hon'ble High Court Of Chhattisgarh Under article 226 of the constitution Of India and challenge the order dated 14.03.2024 passed by the Addl. Collector Baloda Bazar-Bhatapara (C.G.) in revision case no. 202401210900001/A-12, year 2023-24, village Mohabhatta Tahsil Simga District Baloda Bazar (C.G.). That the caveator/ Rama metals and energy Pvt. Ltd. Bilaspur apprehend that the (proposed) petitioner's/Public at Large may also file an application for grant of stay. The Caveator/ Rama Metals and energy Pvt. Ltd. Bilaspur has engaged Shri Pravin Kumar Tulsyan, Advocate and associates Advocates to appear and do oppose the application for grant of stay filed by the (Proposed) Petitioner/public at large.

s/d
Pravin Kumar Tulsyan
Advocate
02/04/2024
Counsel for Rama Metals Pvt. Ltd. Bilaspur

छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड, भाटापारा
(छत्तीसगढ़ शासन का उपक्रम)
(छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत मण्डल की एक उत्तरवर्ती कम्पनी)

// बिजली बंद की सूचना //

एतद् द्वारा निम्नदाब एवं उच्चदाब उपभोक्ताओं को सूचित किया जाता है कि दिनांक 04.04.2024 को ट्रीप ट्रांसफर योजना के क्रियान्वयन हेतु समय प्रातः 10:00 बजे से सायं 05:00 बजे तक नीचे दर्शाये गये क्षेत्रानुसार विद्युत आपूर्ति बंद रहेगी। उपभोक्ताओं को होने वाली असुविधा के लिए खेद है।

क्र.	दिनांक व समय	220/132/33 के. व्ही उपकेंद्र/ फीडर/ पॉवर ट्रांसफार्मर का नाम	प्रभावित क्षेत्र
1	04.04.2024 सुबह 10:00 बजे से 05:00 बजे तक	33 के.व्ही. निपनिया फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र कोसमंदा, निपनिया एवं बिटकुली से जुड़े समस्त सम्माननीय उपभोक्ता, (मेसर्स रियल इस्पात एण्ड एनर्जी प्रा. लि. बकुलाही)

"स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचायें"
"समयावधि में देयक का भुगतान करे, लाईन विच्छेदन से बचें।"

(एन. के. सोनी)
कार्यपालन अभियंता (सं / सं) संभाग
छ.स्टे.पा.डि.कं. लिमिटेड भाटापारा
कर्मचारी क्रमांक 91542851

राशिफल

मेष – वाणी में कठोरता के भाव रहेगा, संचित धन में कमी आ सकती है। प्रतियोगी परीक्षा व साक्षात्कार आदि कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे।

वृष – धैर्यशीलता में कमी आ सकती है, अपनी भावनाओं को वश में रखें। पारिवारिक जम्मिदारियां बढ़ सकती हैं। नौकरी में तरक्की के योग बन रहे हैं।

मिथुन – माता से धन की प्राप्ती हो सकती है। कला व संगीत के प्रति रुझान बढ़ेगा। कार्यक्षेत्र में परश्रिम की अधिकता रहेगी, आय में वृद्धि होगी।

कर्क – आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, कुटुंब परिवार में धार्मिक कार्य होंगे। उच्च शिक्षा एवं शोध आदि कार्यों के लिए विदेश प्रवास की संभावना बन रही है।

सिंह – पठन-पाठन में रुचि रहेगी। शैक्षिक कार्यों के सुखद परिणाम मिलेंगे, संतान सुख में वृद्धि होगी। आय में कमी व खर्चों में वृद्धि की स्थिति हो सकती है।

कन्या – स्वभाव में चिड़चिड़ापन हो सकता है, परंतु आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कार्यों के प्रति जोश व उत्साह रहेगा।पारिवारिक जम्मिदारियां बढ़ सकती हैं।

तुला – वाणी में कठोरता का भाव रहेगा, बातचीत में संयत रहें। वस्त्रों आदि की ओर रूझान बढ़ेगा। तरक्की के मार्ग प्रशस्त होंगे।

वृश्चिक – शैक्षिक व बौद्धिक कार्यों से यश व मान-सम्मान में वृद्धि होगी। जीवन साथी से वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। राजनैतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी।

धनु – कार्यक्षेत्र में परश्रिम की अधिकता रहेगी, संतान को कष्ट रहेगा। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। कला व संगीत के प्रति रूझान बढ़ेगा।

मकर – कार्यक्षेत्र में परिवर्तन संभव है, संतान की ओर से सुखद समाचार मिल सकता है। वस्त्रों व गहनों के प्रति रूझान रहेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

कुंभ – कुटुंब की किसी महिला से धन प्राप्ती के योग बन रहे हैं, भाइयों के साथ मनमुटाव हो सकता है। बातचीत में संयत रहें, वाणी में कठोरता के भाव रहेंगे।

मीन – दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी, किसी मत्रि के सहयोग से रोजगार के अवसर मिल सकते हैं। परिवार में मान-सम्मान बढ़ेगा।

शब्द पहेली - 5470

बाएँ से दाए
1. धरोहर, थाती-4
5. अकबर के नवरत्नों में से एक-4
8. गुणगान-3
9. प्रेम (अंग्रेजी-2)
11. भरोसा, विश्वास-3
12. दुःख, परेशानी, कष्ट-4
14. हिंदू कैलेंडर में एक माह-2
15. गागर, घड़ा-3
17. जांघ-2
19. असावधान-5
22. करतूत, होशियारी-5
25. डूबा हुआ, समाप्त-2
26. तीक्ष्ण, तेज-3
27. अधर्म, अपकृत्य-2
28. मनमौजी, चंचल-4
30. हत्या, वध-3
31. पंख-2
33. मायका-3
35. व्यापार, व्यवसाय (उर्दू-4)
36. कृपा, रहम (उर्दू-4)

ऊपर से नीचे
2. फूलों का हार-2
3. वेश्या, कोठे पर नाचनेवाली-4
4. शांति, सुख-चैन-3,2
5. अस्वस्थ, मरीज-3
6. दम, ताकत-2
7. भगवान राम के पुत्र-2,2
10. उन्मत, मदमस्त-4
13. दिलीप कुमार व वैजयंती माला की फिल्म (3)
16. बोलने का तरीका-3
17. रास्ता-2
18. पराया-2
20. परीक्षा-3
21. वचन-2
22. खेती-2
23. अभिमान-3
24. फिल्म 'मैंने प्यार किया' में सलमान खान की मां-2,2
25. बलपूर्वक उठा ले जाना-5
26. ईश्वर, राजा-4
28. मन को अच्छा लगने वाला-4
29. शाप से पीड़ित-3
32. अवकाश, मंजूरी-2
34. संध्या-2

शब्द पहेली- 5469 का हल

सूडोकु नवताल - 5481

★★★★☆ मध्यम

5					9	6		
						1	4	
			2	8				
			8				5	2
6								7
1	4				3			
				4	1			
	2	5						
		3	7					4

■ MANGAL SENACHA, BANGALORE

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल - 5480 का हल

4	6	2	3	5	8	9	1	7
8	1	7	9	2	6	3	5	4
3	5	9	1	7	4	8	2	6
6	4	1	5	3	7	2	8	9
2	7	5	8	4	9	6	3	1
9	3	8	2	6	1	4	7	5
1	2	3	6	9	5	7	4	8
5	9	4	7	8	2	1	6	3
7	8	6	4	1	3	5	9	2

लोक नाट्य

उर्मिला शुक्ल

छत्तीसगढ़ी गायन परंपरा में दसमत गाथा

छत्तीसगढ़ी गाथाओं में चर्चित दसमत कैना उल्लेखनीय है। यह आंचलिक गाथा गायन परंपरा की लुप्त प्राय गाथा लोक वार्ता की अमूल्य निधि है। यह गाथा एक स्त्री के संघर्ष, उसकी जिजीविषा और उसके आत्म सम्मान की गाथा है। दसमत की यह गाथा किसी पुरुष की गाथा न होकर एक मेहनत कश स्त्री के स्वाभिमान और उसके सम्मान की गाथा है। इस गाथा गीत के अनुसार दसमत कैना राजा की पुत्री है जो गरीब ओड़िया सुदन से ब्याह दी जाती है। उसके पिता ब्राह्मण जाति के माने जाते हैं। नाट्य का प्रारंभ ही इस परिचय के साथ होता है -

राजा भोज बाम्हन के बेटी, कुल बमनीन के जात
अपन करतम तकदीर के सेती, पाए हे ओड़िया भतार।
सुदन बिहइया लागे कईना के, लच्छन देवता तोर।
सोला के लागे भतार, बारा बछर दसमत के उमर
सब ओड़िया ताबेदार।

कला जगत

डा. अर्चना पाठक

खैरागढ़ राज के प्रमुख संगीतज्ञ रहे : दाऊ भानु

खैरागढ़ राज परिवार में राजा लाल बहादुर सिंह के काल में भानु प्रताप दास उनके कार चालक के रूप में पदस्थ थे। नाटकों के संचालन व निर्देशन में आपको महारथ हासिल थी। आपने तत्कालीन फारेस्ट ऑफिसर महापात्र की पुत्री को नृत्य एवं गायन की शिक्षा दी। आपके समकालीन अनेक संगीतज्ञों की कला का दरबार में सम्मान एवं प्रदर्शन होता रहता था। इसी कड़ी में आपके गुणों से प्रभावित होकर राजा बहादुर ने आपको प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया था।

पुस्तक समीक्षा

चिगबिगरी छत्तीसगढ़ी गीत संग्रह

कृति के नाव
चिगबिगरी

लेखक
पुसन कुमार

प्रकाशक
विक्रम प्रिंटर्स बालोद

पुस्तक समीक्षा
सीताराम ' श्याम'

मूल्य
पचास रुपए

छत्तीसगढ़ अंचल में कवियों द्वारा अपने अंचल विशेष को महत्व देने का प्रयास करते हैं ताकि उस क्षेत्र की विशेषता को पाठक कविता के माध्यम से समझ सकें। यही प्रयास इस पुस्तक में देखने में आ रहा है। इसमें बालोद अंचल के प्राकृतिक दृश्यों, धार्मिक महत्व के स्थलों, खानपान और तीज तिहार को महत्व दिया गया है। 52 कविता अपने आप में कोई न कोई संदेश देने के लिए पर्याप्त नजर आ रहे हैं। एक गुलदस्ता के रूप में सभी कविताओं को पिरोने का अच्छा प्रयास हुआ है जो शीर्षक से ही स्पष्ट हो जाता है।

बालोद जिला में स्थित गुंडरदेही से अर्जुन्दा मार्ग पर कांदुल गांव है। कंदमूल, हरी सेम और कांदा भाजी की बहुलता के कारण इस गांव का नाम 'कांदुल' पड़ा। बढ़ई द्वारा निर्मित बैलगाड़ियों के चक्कों के लिए यह गांव प्रख्यात रहा। देश की सीमा सुरक्षा बल में इस गांव के 54 नौजवान सेवारत हैं। यहां के धरती पुत्र उकेश ठाकुर देश के नाम शहीद हुए।

कंदमूल की अधिकता से गांव कहलाया कांदुल

गांव की कहानी : डॉ. राघवेंद्र

बालोद जिला में स्थित गुंडरदेही से अर्जुन्दा मार्ग पर बसा गांव 'कांदुल' स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से रचा-बसा गांव है। पूर्व में यह गांव आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र रहा। शस्य श्यामला कृषि भूमि वर्षा के लिए ईश्वराधीन रही। आज भी यह गांव सिंचाई की दृष्टि से भगवान भरोसे हैं। नामकरण की दृष्टि से देखा जाए तो कंदमूल, हरी सेम और कांदा भाजी की बहुलता के कारण इस गांव का नाम 'कांदुल' पड़ा। बढ़ई द्वारा निर्मित बैलगाड़ियों के चक्कों के लिए यह गांव प्रख्यात रहा। इस गांव की विशेषता यह भी रही कि-यहां कुएं बहुत मात्रा में थे। ब्यारे की अहातें पत्थरों से बने हुए हैं। दलहन - तिलहन के लिए यह गांव समृद्ध रहा। यहां ब्रिटिशकाल से विद्यालय संचालित रहा। सन 1962-63 में पुनर्निर्माण के पश्चात स्वामी मुक्तानंद द्वारा लोकार्पण किया गया। सर्वसमाजोत्थान को ध्यान में रखते हुए मृत्युभोज में कलेवा और मायन भोज के पश्चात बारातियों के साथ गांव वालों के लिए भोजन करना प्रतिबंधित है। रविवार और सोमवार को सारा गांव वर्ष भर सोमवारी और इतवारी त्योहार मनाता है। प्राचीन दंतेश्वरी कुंड आज दंतेश्वरी मंदिर त्रिताल (छीरसागर) के रूप में विद्यमान है। देश की सीमा सुरक्षा बल में इस गांव के 54 नौजवान सेवारत हैं। यहां के थरती पुत्र उकेश ठाकुर देश के नाम शहीद हुए। यहां की सांस्कृतिक धरोहर की कोई सानी नहीं है। सांस्कृतिक विरासत के रूप में ख्याति प्राप्त जस झांकी मंडली को प्रदर्सन के लिए दूर-दूर से आमंत्रित किए जाते हैं।

प्राकृतिक सौंदर्य के स्थलों में शिव गंगा जलप्रपात

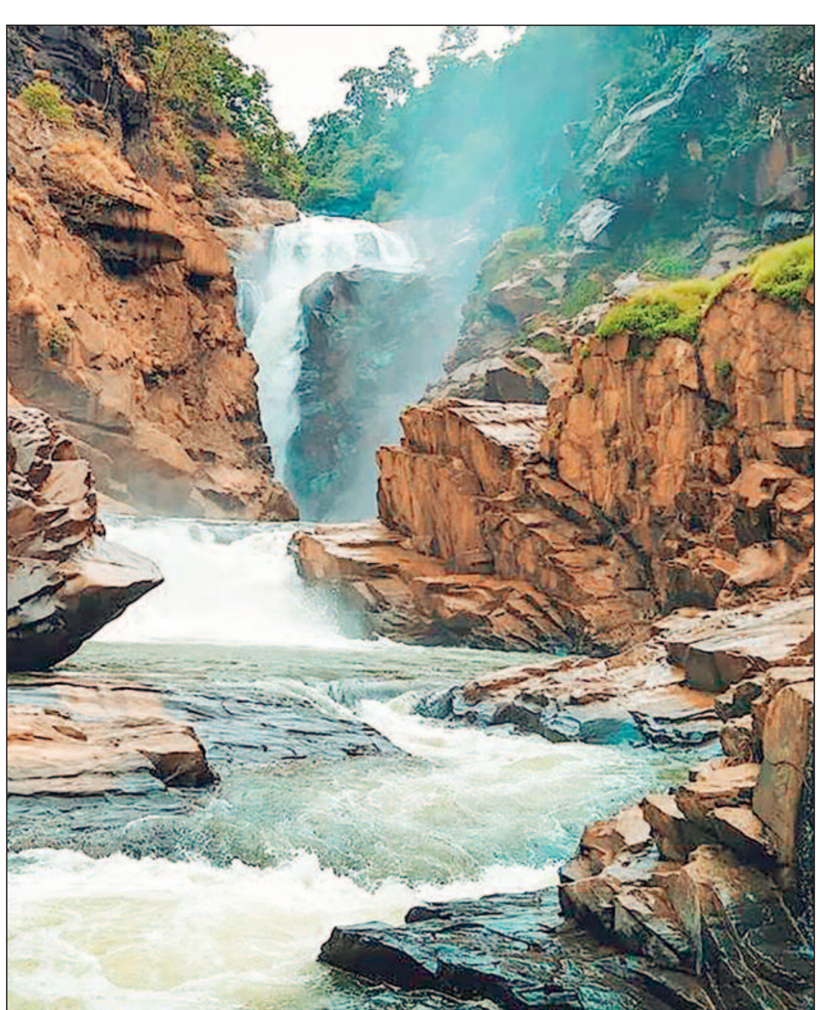

बस्तर अंचल में अनेक खूबसूरत वादियों की कमी नहीं हैं। आज भी अनेक झरने की खोज होती रहती है जो अत्यंत मनमोहक होते हैं। ऐसे ही मनमोहक सौंदर्य से भरपूर घने जंगलों के मध्य शिवगंगा जलप्रपात दो खंडों में स्थित है। यहां तक पहुंचने के लिए कोई रास्ता नहीं है। तीरथगढ़ जलप्रपात से शिवगंगा की दूरी लगभग 6 किमी है। यहां तक पहुंचने के लिए पर्यटकों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस जलप्रपात का एक खंड 40 किमी तो दूसरे खंड की ऊंचाई लगभग फीट है। इस जलप्रपात के निकट ही शिवलिंग की स्थापना ग्रामीणों द्वारा की गई है, इसलिए जलप्रपात का नाम शिवगंगा रखा गया है। शासन के नक्शे में लेकर इस स्थल को संवारने की व्यवस्था की जा रही है ताकि पर्यटक इस सौंदर्य स्थलों का भी भ्रमण कर सकें। पर्यटकों को जानकारी होने पर इस स्थल का आनंद लेने अवश्य पहुंचते हैं। बरसात के मौसम में दृश्य मनमोहक होता है, लेकिन आवागमन की उचित साधन नहीं होने के कारण पर्यटन यहां पहुंच पाने में असमर्थ हो जाते हैं।

ऐतिहासिक

राजेश पाण्डेय

मल्हार में कनकन कुंआ का महत्व

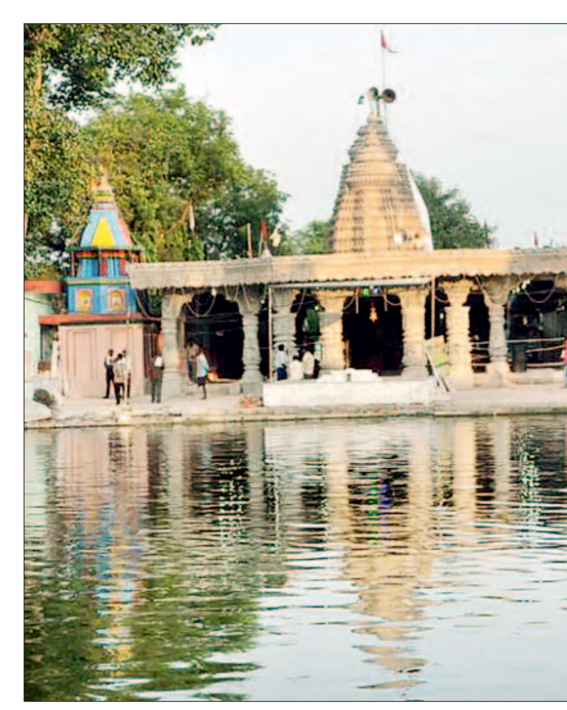

बिलासपुर अंचल में स्थित मल्हार का ऐतिहासिक, धार्मिक और पुरातात्विक महत्व है। इसी महत्व के स्थलों में मल्हार के मेला चौक के मध्य में एक विशाल कुंआ है, जिसे कनकन कुंआ के नाम से लोग जानते हैं। इसकी चौड़ाई का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हुई है। पहले मेले में दूर दूर से आए व्यापारियों तथा भक्त इस कुएं के पानी को पीने के लिए उपयोग में लाते थे। वर्तमान में भी इस कुएं का महत्व कम नहीं हुआ है। पातालेश्वर महादेव मंदिर के साथ ही आसपास के मंदिरों में पूजा पाठ के लिए इसी कुएं के जल का उपयोग किया जाता है। मान्यता है कि पूर्वज इस कुएं में कई पवित्र नदियों के जल को समाहित किए थे।

परब विशेष

डा. किरण नुरूटी

देवों को मनाने के लिए पेन करसाड़ का आयोजन

पेन करसाड़ का आयोजन कब करना है इसके लिए उस देव के कुटुंब परिवार के लोग एकत्रित होकर बैठक करते हैं तथा करसाड़ की तिथि निर्धारित की जाती है, तत्पश्चात मुखिया द्वारा कार्यों का विभाजन किया जाता है।

बस्तर में पेन करसाड़ उत्सव का आरंभ प्रति वर्ष जनवरी माह के प्रथम सप्ताह से शुरू होता है और वर्षा ऋतु के आगमन के पूर्व तक चलता रहता है। आगामी फसल के लिए बीजारोपण से पहले यह वह अवसर है जब भरपूर फसल के लिए गांव के गोत्र देवता एवं कुल देवता से प्रार्थना की जाती है और हर प्रकार से संतुष्ट किया जाता है। इसके साथ ही यह उत्सव परिवार एवं सगा समाज के मिलन का अवसर होता है। पेन करसाड़ का आयोजन कब करना है इसके लिए उस देव के कुटुंब परिवार के लोग एकत्रित होकर बैठक करते हैं तथा करसाड़ की तिथि निर्धारित की जाती है, तत्पश्चात मुखिया द्वारा कार्यों का विभाजन किया जाता है। पेन करसाड़ के मुखिया को दक्षिण बस्तर में तलापोत कहा जाता है। करसाड़ मेले को सुचारू रूप से संचालन करने हेतु विभिन्न व्यक्तियों को अलग अलग जिम्मेदारी दी जाती है।

खबर संक्षेप

ऑडी इंडिया की खुदरा बिक्री 33 प्रतिशत बढ़ी

नई दिल्ली। लक्जरी कार निर्माता ऑडी इंडिया की वित्त वर्ष 2023-24 की खुदरा बिक्री सालाना आधार पर 33 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 7,027 इकाई रही। जर्मनी वाहन विनिर्माता की वित्त वर्ष 2022-23 में बिक्री 5,275 इकाई रही थी। ऑडी इंडिया के प्रमुख बलबीर सिंह ढिल्लों ने एक बयान में कहा, 'हमने विविध खंड के दम पर वित्त वर्ष 2023-24 में 33 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि दर्ज की।

पीपलको ने शेयर निवेश ऐप 'लेमन' किया पेश

नई दिल्ली। उद्यमी आशीष सिंघल, गोविंद सोनी और विमल सागर तिवारी की कंपनी पीपलको ने एक शेयर निवेश ऐप 'लेमन' पेश की है। इसका मकसद नए निवेशकों के लिए निर्णय लेने की प्रक्रिया को सरल करना है। सोमवार को जारी एक बयान में कहा गया है कि 'लेमन' शेयर ब्रोकिंग में पीपलको के विस्तार का प्रतीक है। इसका स्वयं का प्रबंधन और संचालन दल के साथ एक अलग व्यापार प्रभाग होगा।

उत्पादन और ऑर्डर अक्टूबर 2020 के बाद सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंचे

मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर में जबरदस्त तेजी, 16 साल के उच्चतम स्तर पर पहुंचा पीएमआई

एजेंसी ⏭ नई दिल्ली

भारत का मार्च मैन्युफैक्चरिंग पीएमआई 16 साल के हाई पर पहुंच गया है। उत्पादन और ऑर्डर अक्टूबर 2020 के बाद सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गए हैं। एक निजी सर्वेक्षण से पता चला है कि मार्च में मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर ने वित्त वर्ष 2024 में शानदार प्रदर्शन किया है। इसके पीछे की वजह यह है कि कंपनियों ने मजबूत प्रोडक्शन और नए ऑर्डर के जवाब में नियुक्तियां बढ़ा दीं। एचएसबीसी इंडिया मैन्युफैक्चरिंग पीएमआई फरवरी में 56.9 से बढ़कर मार्च में 16 साल के उच्चतम 59.1 पर पहुंच गया। जबकि, यह फरवरी 2008 के बाद से सबसे अधिक है।

निवेश में तेज वृद्धि

पिछले महीने में भारत का मैन्युफैक्चरिंग आउटपुट लगातार 33वें महीने बढ़ा है। यह उपभोक्ता, मध्यवर्ती और निवेश सामान क्षेत्रों में वृद्धि तेज होने के कारण हुआ है। फर्म ने मंगलवार को एक कहा, 'अक्टूबर 2020 के बाद से आउटपुट और नए ऑर्डर में सबसे मजबूत वृद्धि के कारण था। यह सर्वेक्षण के इतिहास में इनपुट इन्वेंट्री में दूसरे सबसे तेज उछाल के समानांतर था।'

खास बातें

- पीएमआई फरवरी में 56.9 से बढ़कर मार्च में 59.1 पर पहुंचा
- पीएमआई फरवरी 2008 के बाद से सबसे अधिक है
- कंपनियों ने नए ऑर्डर के कारण नियुक्तियां भी बढ़ा दी

मुद्रास्फीति मार्च में बढ़ी

एचएसबीसी के अर्थशास्त्री लैम ने कहा, 'भारत का मार्च मैन्युफैक्चरिंग पीएमआई 2008 के बाद से अपने उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। मैन्युफैक्चरिंग कंपनियों ने मजबूत उत्पादन और नए ऑर्डर के जवाब में नियुक्तियों का विस्तार किया। हाई डिमांड और क्षमता में थोड़ी सख्ती के कारण, इनपुट लागत मुद्रास्फीति मार्च में बढ़ी।' इन्वेंट्री पर्चेज सर्वे के इतिहास में मई 2023 के बाद 'दूसरी सबसे बड़ी सीमा' तक पहुंच गई। जबकि, रोजगार सृजन की गति हल्की थी, इसके बावजूद यह सितंबर 2023 के बाद से सबसे अच्छी स्थिति है।

कंपनियां कुछ चीजों को लेकर आशावादी

सर्वे से पता चला है कि भारतीय कंपनियां कुछ चीजों को लेकर आशावादी थीं, लेकिन समग्र भावना चार महीने के निचले स्तर पर आ गई। क्योंकि महंगाई की चिंता उनके आत्मविश्वास पर भारी पड़ रही थी। लागत का दबाव पांच महीनों में सबसे अधिक हो गया। कंपनियों ने कपास, लोहा, मशीनरी उपकरण, प्लास्टिक और स्टील के लिए अधिक कीमत चुकाई।

सरकार ने निर्धारित कर लक्ष्य संग्रह हासिल किया

सरकार ने मजबूत आर्थिक गतिविधियों और बेहतर अनुपालन की मदद से वित्त वर्ष 2023-24 में 34.37 लाख करोड़ रुपये से अधिक कर संग्रह के लक्ष्य को काफी हद तक हासिल कर लिया है। एक अधिकारी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। अधिकारी ने कहा, 'वित्त वर्ष 2023-24 के लिए कर राजस्व का कुल लक्ष्य हासिल कर लिया गया है।'

संशोधित बजट में अनुमान बढ़ाया गया

सरकार ने अप्रैल 2023- मार्च 2024 के लिए संशोधित बजट अनुमान में प्रत्यक्ष कर संग्रह का लक्ष्य बढ़ाकर 19.45 लाख करोड़ रुपये कर दिया था जबकि अप्रत्यक्ष कर (जीएसटी, सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क) के लिए अनुमान को घटाकर 14.84 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया था। इस दौरान 17 मार्च तक शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह (कॉरपोरेट कर और व्यक्तिगत आयकर मिलाकर) 18.90 लाख करोड़ रुपये से अधिक हो गया था।

परिवार से मिलती है ताकत, पोतियां है सबसे बड़ी दौलत : अदाणी

हरिभूमि न्यूज ⏭ रायपुर

अदाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अदाणी ने अपनी पोती के बारे में कहा है कि कोई भी दौलत इनकी आंखों की चमक की बराबरी नहीं कर सकती। कावेरी, उनकी सबसे छोटी पोती और परिधि और करण अदाणी की तीसरी बेटी हैं। अदाणी ग्रुप के चेयरमैन ने कहा, 'इन आंखों की चमक की तुलना में दुनिया की सारी दौलत फीकी है।' ये तस्वीर नई अदाणी ग्रीन गैलरी के दौरे पर लंदन साइंस म्यूजियम में ली गई है। हाल ही में, एक कार्यक्रम में गौतम अदाणी ने कहा था कि अपनी पोतियों के साथ समय बिताना उन्हें सबसे ज्यादा खुशी देता है। अदाणी कहते है, 'मुझे अपनी पोतियों के साथ समय बिताना अच्छा लगता है। इससे सारा तनाव दूर हो जाता है। मेरी सिर्फ दो दुनिया है, काम और परिवार। मेरा परिवार ही मेरी ताकत है।'

माता-पिता से मिली प्रेरणा

शुरुआती सालों में गौतम अदाणी अपने माता-पिता से प्रभावित और प्रेरित थे। उन्होंने कहा, 'मेरी मां हमारे घर का पिलर थीं। उन्होंने हमारी ज्वॉइंट फैमिली को मजबूती से जोड़े रखा। हमारे बड़े परिवार को एक साथ रखने की उनकी प्रतिबद्धता ने मेरे अंदर पारिवारिक मूल्यों और विश्वासों की नींव रखी। मेरे पिता बिजनेसमैन थे, उन दिनों लेन-देन मौखिक रूप से होता था या फिर ज्यादातर टेलीफोन पर ही होता था। पहले लिखित दस्तावेज या कॉन्ट्रैक्ट नहीं होते थे। बहुत कम उम्र में मैंने देखा कि मौखिक प्रतिबद्धताएं कभी फेल नहीं होतीं।'

अदाणी समूह किसी एक व्यक्ति से कहीं ज्यादा बड़ा है

गौतम अदाणी भले ही अदाणी समूह के फाउंडर हैं, लेकिन आज ये समूह किसी एक व्यक्ति से कहीं ज्यादा बड़ा है। अदाणी सिर्फ एक नाम या ब्रांड से कहीं अधिक है। अदाणी एक कल्चर है। यह एक विचारधारा है। यह सोचने का एक तरीका है। समूह के बारे में गौतम अदाणी बताते है कि 'मुझे और आने वाली पीढ़ी को इसपर गर्व तो होता ही है साथ ही इससे एक बड़ी जिम्मेदारी भी आती है। इससे कर्मचारियों और प्रमोटर्स के बीच एक मजबूत रिश्ता बनता है।'

शेयर बाजार में तीन दिन से जारी तेजी पर लगा ब्रेक

मुंबई। स्थानीय शेयर बाजारों में मंगलवार को तीन कारोबारी सत्रों से जारी तेजी पर विराम लगा और बीएसई सेंसेक्स 111 अंक के नुकसान में रहा। अमेरिकी बाजारों में कमजोर रुख तथा विदेशी संस्थागत निवेशकों की पूंजी निकासी के बीच चुनिंदा निजी बैंकों और वाहन शेयरों में मुनाफावसूली से बाजार में गिरावट आई। तीस शेयरों पर आधारित सेंसेक्स 110.64 अंक गिरावट के साथ 73,903.91 अंक पर बंद हुआ।

जोमैटो को सेवा कर मांग को लेकर नोटिस

नई दिल्ली। ऑनलाइन खाने का ऑर्डर देने और उसे मंगाने की सुविधा देने वाले मंच जोमैटो को 184 करोड़ रुपये से अधिक की सेवा कर मांग और जुर्माने को लेकर नोटिस मिला है। कंपनी इस आदेश के खिलाफ उचित प्राधिकरण के समक्ष अपील दायर करेगी। जोमैटो ने सोमवार देर रात शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि यह आदेश अक्टूबर, 2014 से जून, 2017 के बीच सेवा कर का भुगतान नहीं करने को लेकर दिया गया है।

बायजू 500 कर्मियों की करेगा छंटनी

नई दिल्ली। वित्तीय संकट से घिरे शिक्षा-प्रौद्योगिकी मंच बायजू को फिर से पटरी पर लाने की कोशिशों के बीच करीब 500 कर्मचारियों की छंटनी की जा रही है। सूत्रों ने कहा कि यह छंटनी कारोबार पुनर्गठन की कोशिशों का हिस्सा है। इसकी शुरुआत 15-20 दिन पहले हुई थी और इस प्रक्रिया में करीब 500 कर्मचारी प्रभावित हो सकते हैं। नौकरी में कटौती का नवीनतम दौर बिक्री कार्यों, शिक्षकों और कुछ ट्यूशन केंद्रों को प्रभावित करेगा।

मार्च में कंपनियों की भर्तियों में चार प्रतिशत की गिरावट

मुंबई। भारतीय कंपनियों द्वारा मार्च के महीने में की गई भर्तियां पिछले साल की समान अवधि की तुलना में चार प्रतिशत घट गईं। मंगलवार को जारी एक रिपोर्ट में यह आकलन पेश किया गया है। हालांकि, फरवरी की तुलना में मार्च के महीने में भर्ती गतिविधियां तीन प्रतिशत बढ़ गईं। फाउंडइट इनसाइट्स ट्रैकर (फिट) की रिपोर्ट कहती है कि यह आंकड़ा कंपनी जगत की आशावादी कारोबारी धारणा को दर्शाता है।

epaper : www.haribhoomi.com

हरिभूमि CLASSIFIED

Email : response.haribhoomi@gmail.com

आवश्यकता आपकी सुविधा हमारी
Contact for advertisment booking :
Raipur- 79871-19756
6263818152

एजुकेशन स्पेशल

SACHDEVA NEW PT. COLLEGE
RAIPUR : 0771-4080090
BHILAI : 0788-2261637
FREE* CRASH COURSE
NEET/PAT
JEE
EFFECTIVE STUDY MATERIAL
● BEST RESULTS
● BEST FACULTY
MEDIUM : ENG./HINDI
SUMMER/REGULAR COURSE
X-XI-XII
CBSE/CG BOARD

Appointment आवश्यकता

सिक्योरिटीगार्ड

आवश्यकता है- रायपुर लिमिटेड कंपनी में सिक्योरिटी गार्ड,सुपरवाइजर हेतु हाईट 5 फीट 6 इंच, 4 फोटो, आधार कार्ड सहित मिले रहना,खाना,फ्री,वेतन 10000 से 15000 MO. 8109070600, 7869230888.(RO-1174)

वेल्डर/फिटर/हेल्पर

आवश्यकता है- ऑल छत्तीसगढ़ ऑफिस कार्य, वेल्डर, कटर, फिटर, हेल्पर, इलेक्ट्रीशियन, कंप्यूटर ऑपरेटर, ड्राइवर, चपरासी, गार्ड, स्टोर कीपर, सुपरवाइजर, इंजीनियर, सभी 5वीं से ग्रेजुएट वेतन 12000- 40000/- परमानेंट कंपनी हेतु मेडिकल +रहना फ्री व्यापार विहार बिलासपुर. 9111965184.(RO-2610)

विज्ञापन बुकिंग टाइम
सुबह 10:30 बजे से दोपहर 3:00 बजे तक

ड्रायवर

आवश्यकता है- रायपुर में 18 चक्का ट्रेलर एवं 16 चक्का हाईवा एव लोडर चलाने के लिए बाहर के ड्राइवर की आवश्यकता है। कृपया पीने वाले संपर्क न करें। 9993714953, 8839375073, 9644260856. (RO-1170)

आवश्यकता है- कचांदुर (जेवरा) प्लांट में कार्य करने हेतु पिकअप, ट्रेक्टर, जेसीबी ड्राइवर, सुपरवाइजर, मार्केटिंग बॉय एवं पद्मनाभपुर दुर्ग ऑफिस हेतु ऑफिस स्टाफ और अकाउंटेंट की आवश्यकता है संपर्क- 7441199337.(आरो न.-3410)

आवश्यकता है- अनुभवी ड्राइवर की आवश्यकता है तथा कंप्यूटर ऑपरेटर एवं महिला सफाई कर्मी की आवश्यकता है नशामुक्त व्यक्ति ही संपर्क करें। जैन गर्ल्स हॉस्टल पचपेड़ी नाका लक्ष्मी नगर रायपुर संपर्क सूत्र:- 8959906595.(RO-1447)

हरिभूमि क्लासीफाईड

आवश्यकता है- तेलीबांधा, रायपुर के पास टाटा ऐस और ऑटोमैटिक कार चलाने के लिए अनुभवी ड्राइवर की आवश्यकता है साथ ही टाटा ऐस में चलने और अन्य हमाली कार्य के लिए लड़कों की आवश्यकता है संपर्क करें:- 9754160228.(RO-1206)

आवश्यकता है- कोल्ड चेन लॉजिस्टिक्स कंपनी में कार्य करने हेतु आवश्यकता- ड्राइवर- 2 पद, (पिकअप एवं 407 चलाने हेतु) कार ड्राइवर- 1 पद, संपर्क- विशाल एंटरप्राइजेज, मोवा, रायपुर- 9165718065, 9981691919.(RO-088)

ऑफिस कार्य

आवश्यकता है- सेल्स में कस्टमर हैंडल और कंप्यूटर में कोटेशन बनाना साथ ही बिलिंग करना एवं ग्राहकों के साथ फोन पर बातचीत करने हेतु अनुभवी लड़कों की आवश्यकता है वेतन में 18000/- से शुरू कॉल करें- 99932-44000.(RO-3951)

दुकान कार्य

आवश्यकता है- दुकान मे काम करने वास्ते लड़के एवं लड़कियो कि जरूरत है, एकाउंटेंट, दुकान में काम करने पढ़े लिखे स्टाफ कि आवश्यकता है संपर्क समय सुबह 12;00 से 5:00 9827881003, 7974716022.(RO-1900)

आवश्यकता है- दुकान के सभी काम के लिए दसवीं पढ़े मेहनती लड़के की आवश्यकता है, D.D. नगर के आसपास रहने वाले को प्राथमिकता, संपर्क करें मो. न. 9098148235. (RO-30)

पैकिंग/लेबर कार्य

आवश्यकता है- चुस्की चाय में पैकिंग कार्य हेतु लेडिस/लड़कियों की और लेबर कार्य हेतु पुरुष की जरूरत है। संपर्क करें एसबीआई एटीएम के सामने आकृति विहार अमलीडीह रायपुर। मो. 7469980000, 07714075490.(RO-1173)

नोट - विज्ञापन प्रकाशन के पहले दिन ही करेक्शन मान्य होगा।

अकाउंटेंट/कम्प्युटर

आवश्यकता है- न्यू राजेंद्र नगर स्थित सेनेटरी हार्डवेयर दुकान में काम करने हेतु अनुभवी लड़कों एवं (अकाउंटेंट) कंप्यूटर कर्मी बिल बनाने हेतु की आवश्यकता है न्यू राजेंद्र नगर के आसपास रहवासी को प्राथमिकता संपर्क:- 9770417778.(RO-2621)

सेल्समेन/सेल्सगर्ल

आवश्यकता है- बिरदी साड़ी शोरूम हेतु सेल्समेन 7, सेल्सगर्ल 3, कम्प्यूटर ऑपरेटर 1, ड्राईवर 1 सभी रायपुर लोकल अनिवार्य, वेतन 6000- 20000/- + कमीशन अनुभवी को प्राथमिकता, बिरदीचंद मानकलाल कंकालीपारा संपर्क समय 10.30 - 9.30, मो.,9425522577, 9425522576 (RO-2624)

टेक्नीकल/सेल्स कार्य

आवश्यकता है- सिम्फनी कूलर मे टेक्नीकल लड़कों की सर्विस एवं सेल्स कार्य हेतु एवं वेल्डर की वेतन 20,000 श्री साईं इन्टरप्राइजेज कबीर नगर रायपुर संपर्क- 9300006401, 8319443253 (RO-3949)

हेल्पर/मैकेनिक

आवश्यकता है- रायपुर स्थित सर्विस सेंटर को फ्रिज तथा ए. सी. सुधारक चाहिए हेल्पर - 4 पद, मैकेनिक - 2 पद काम सीखने के इच्छुक भी संपर्क करें मो. 9893210882. (RO-2628)

प्रूफ रीडर/ आपरेटर

आवश्यकता है- अजय माला प्रकाशन संस्था हेतु (1) प्रूफ रीडर जिसे पुस्तक या न्यूजपेपर रीडिंग में अनुभव (2) डीटीपी ऑपरेटर जिसे हिंदी, अंग्रेजी में स्पीड टाइपिंग सहित पेजमेकर, कोरल ड्रा में अनुभव आवश्यकता है। संपर्क :- सुबह 11- 5 बजे, अजय प्रकाशन, पंजाब नेशनल बैंक के बाजू, सिविल लाइन, रायपुर , मोबाईल 7978852526, 6264301822 (RO-288)

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

टेक्नीशियन/हेल्पर

आवश्यकता है- CCTV टेक्नीशियन, कंप्यूटर ऑपरेटर एवं हेल्पर की आवश्यकता है। अनुभवी को प्राथमिकता, वेतन 8000/- से 15000/- DIGITAL WORLD DURG, 88391-50501, 98279-71445.(आरो न.-SPD/749)

टेलर

आवश्यकता है- कपड़ा दुकान में लेडिस कपड़े की सिलाई हेतु महिला टेलर की आवश्यकता है। बायोडाटा के साथ संपर्क करें। पता: सुरम्य फैब्रिक्स, गुरुद्वारे के सामने, कटोरा तालाब, रायपुर। मो.: 8767454277 (RO-4287)

फील्ड कार्य

आवश्यकता है- फील्ड में कार्य करने हेतु आदमी की आवश्यकता है गणेश सेनेटरी एंड हार्डवेयर गुढ़ियारी रायपुर छत्तीसगढ़:- 9981737499.(RO-1172)

आवश्यकता

आवश्यकता है- हेल्थ सेक्टर में करियर बनाएं , 8/10/12 वी फेल लड़के / लड़कियां ना हो निराश मेडिहब्स होम हेल्थ केयर से जुड़ कर कमाएं 8000 से 25000 प्रतिमाह + रहना फ्री रजिस्ट्रेशन हेतु संपर्क करें ऑफिस रायपुर : 7772011223. (RO-3414)

ऑफिस कार्य

आवश्यकता है- इंदौर में ऑफिस कार्य हेतु 18 से 30वर्ष, 10वीं 12वीं, ग्रेजुएट अविवाहित लड़के चाहिए। वेतन 10000+ रहना फ्री+ कमीशन+ बोनस+ गाड़ी किराया+ कोई शुल्क नहीं लगेगा सम्पर्क करें- 7415455110, 7898882634.(RO-33545)

आवश्यकता है- कानपुर झांसी में ऑफिस कार्य हेतु 10वीं 12वीं पास लड़के चाहिए सैलरी 10000+ कमीशन+ बोनस+ रेल किराया आवास फ्री ट्रेनिंग पश्चात कमाए 15000 से 20000 सम्पर्क बिलासपुर 8770508791, 7225815090, 6266578863.(RO-33512)

Business व्यापार

व्यापार- अब शुरू करें स्वयं का बिजनेस बिना किसी रिस्क, कम पूंजी लगाकर घर बैठे स्वयं का उद्योग लगाएं, 30,000- 50,000 प्रतिमाह कमाएं, आटोमेटिक मशीन द्वारा दोनापत्तल, डिस्पोजल बनायें, कच्चा माल देने तैयार माल लेने का एग्रीमेंट संपर्क:- APS इंटरप्राईजेस, रायपुर- 8602908677, 7477221345, बिलासपुर 9993444253, 8359913999, रायगढ़- 7869755871.(RO-2586)

टॉवर

टॉवर लगवाए- (Daimend ऑफर) छत्तीसगढ़ वासियों अपनी खाली जमीन छत प्लॉट पर 4G /5G टावर लगवाये एडवांस 70,00,000/- किराया 60,000/- 2 नौकरी सरकार द्वारा रेजिस्ट्रेड कंपनी संपर्क करें मोबाइल नंबर:- 06397308856, 7668628202.(RO-3619)

छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

Astrology ज्योतिष

ज्योतिष - नारायण शास्त्री घर बैठे समाधान 7347259119 प्यार में धोखा, वशीकरण, सौतन दुश्मन छुटकारा लवमैरिज, रूठे मानना, गृहकलेश, किया कराया, दवाई ना लगना, कारोबार, प्रेमी पति संतान अनबन (समस्या कैसी भी जड़ से खत्म) 7347259119. (RO-12599)

Property प्रापर्टी

भूमि

भूमि बेचना है- फार्म हाउस के लिए प्लॉट उपलब्ध है। भिलाई- दुर्ग से नजदीक बिरेझर में 11000 sqft. के साइज में फ्रेश कटिंग प्लॉट मात्र 111/- रू. psqft. मो. न. 9827423470(आरो न.-440)

सब कुछ है यहां ... पढ़ते रहिए हरिभूमि क्लासिफाईड

आवश्यक सूचना

पाठकों से अनुरोध है कि वे समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन के संबंध में किसी भी प्रकार का कदम उठाने (पैसे भेजने, कोई भी खर्च उठाने, चिकित्सकीय सलाह, विवाह संबंधित) या किसी भी वादे-दावे पर अमल करने से पहले अच्छी तरह से जांच पड़ताल कर लें। पाठक पूर्ण जानकारी लेंवे व स्वविवेक से निर्णय लेकर ही लेन देन करें। किसी भी उत्पाद या सेवाओं के संबंध में किए किसी भी विज्ञापनदाता के किसी प्रकार के दावों की हरिभूमि (प्रेस प्रबंधक व कर्मचारी) की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। प्रकाशक, संपादक कर्मचारी और हरिभूमि के स्वामी किसी विज्ञापन के संबंध में उठाए किसी कदम के नतीजे और विज्ञापन दाताओं के अपने वायदों पर खरा न उतरने के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे।

For Rent किराया

किराये से देना है- कांदुल रोड अक्षत विहार Theresian School के पास रायपुर सर्वसुविधायुक्त 2BHK, बोर, पोर्च सहित स्वतंत्र मकान किराये से देना है। संपर्क- 7987723080, 7725885584 (RO-1169)

हरिभूमि क्लासीफाईड छोटा विज्ञापन बड़ा लाभ

हरिभूमि वैवाहिकी

विज्ञापन प्रकाशन हेतु संपर्क करें
62638-18152

Healthcare

ईलाज की गारंटी पैसा ठीक होने के बाद
• गुप्त रोग नामर्दी, लिंग में छोटापन।
• शीघ्र पतन पेशाब से धातु जाना।
• लिंग में ढीलापन, शुक्राणु की कमी।
• शुगर से आयी हुई सेक्स में कमी।
• आयुर्वेदिक द्वारा खोई हुई शक्ति पुनः प्राप्त करें।
• चर्मरोग व वात रोग का ईलाज किया जाता है।
• नि:संतान दम्पति आज ही मिलें।
आज ही संपर्क करें
श्रीकांत आयुर्वेदिक जड़ीबुटी भण्डार
दुर्ग में शॉप नं. 16, पारख कॉम्पलेक्स, पेट्रोल पम्प के सामने, ग्रीन चौक
रायपुर में स्टेशन रोड, सीमन होटल के सामने
9174440077
9009330088

गुप्त रोगी स्वयं मिले
शादी से घबराहट गुप्त रोग
■ शीघ्र पतन से शारीरिक कमजोरी
■ शारीरिक एवं मानसिक नपुंसकता
■ लिंग में ढीलापन, छोटापन, पतलापन
■ लिंग में टेढ़ापन
■ वीर्य में शुक्राणु की कमी
■ बढ़ती उम्र में सेक्स की कमी
■ पेशाब में धातु जाना
■ शुगर से सेक्स में आई हुई कमजोरी
मशीनों द्वारा जांच
अचूक दवाओं का सम्पूर्ण मिश्रण आपकी परेशानी का मात्र 1 दिन में सम्पूर्ण ईलाज
संपर्क डॉ. अहमद
जे.जे. हॉस्पिटल
सरकारी आई.टी.आई. पॉवर हाउस अंबेडकर चौक, सी मार्ट के सामने, बस स्टैण्ड, भिलाई
प्रतिदिन: सुबह 9 से शाम 7 बजे
रविवार 9 से 4 बजे तक
9098889899

छोटा लिंग निराश क्यों?
जोश जगा दे धूम मचा दे।
18 से 80 वर्ष तक लाभदायक
लिंग को 8-9 ईन्च लम्बा मोटा, कठोर बनाये। सैक्स टाइम 30 से 45 मिनट बढ़ाएं।
नसों की कमजोरी नामर्दी, धातु का पतलापन, शुगर, बी.पी. में भी जबरदस्त लाभदायक।
घर बैठे मंगवाये।
लाभ नही तो पैसे वापिस।
08116592844

आईपीएल पाइंट टेबल

टीम	मैच	जीते	हारे	अंक
राजस्थान	3	3	0	6
कोलकाता	2	2	0	4
चेन्नई	3	2	1	4
लखनऊ	3	2	1	4
गुजरात	3	2	1	4
हैदराबाद	3	1	2	2
दिल्ली	3	1	2	2
पंजाब	3	1	2	2
बेंगलोर	4	1	3	2
मुंबई	3	0	3	0

ऑरेंज कैप

विराट कोहली
203 रन
बेंगलोर

पर्पल कैप

मुस्तफिजुर रहमान
07 विकेट
चेन्नई

बाउंड्री मीटर

408 चौके

270 छक्के

खबर संक्षेप

भारत के अनिरूद्ध और विजय एटीपी टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में

ह्यूस्टन। भारत के अनिरूद्ध चंद्रशेखर और विजय प्रशांत की जोड़ी अमेरिका में एटीपी टूर पर पुरूषों की क्लेकोर्ट चैम्पियनशिप के युगल क्वार्टर फाइनल में पहुंच गई। भारतीय जोड़ी ने अमेरिकी वाइल्ड कार्डधारी माइकल एममो और फ्रांसिस टियाफो को 6-3 , 6-4 से हराया। अब उनका सामना आस्ट्रेलिया के चौथी वरीयता प्राप्त एम पर्सल और जे थॉम्पसन से होगा। प्रशांत इस समय युगल रैंकिंग में 101वें और चंद्रशेखर 113वें स्थान पर है।

कोहली ने फिर खुद को निखार लिया : हसी

मुंबई। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर डेविड हसी का मानना है कि विराट कोहली 'फिर से निखर' गए हैं। उन्होंने इस भारतीय बल्लेबाज के स्ट्राइक रेट पर बहस के बीच इस चैंपियन खिलाड़ी को नजरअंदाज करने के खिलाफ चेतावनी दी।

आईपीएल के मौजूदा सत्र में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरू के लिए सर्वाधिक रन बनाने वालों की सूची में सबसे आगे होने के बावजूद कोहली को पिछले मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स के खिलाफ पर्याप्त आक्रामकता के साथ बल्लेबाजी नहीं करने के लिए कुछ आलोचना का सामना करना पड़ा। हसी से जब पूछा गया कि कोहली के स्ट्राइक रेट को लेकर चल रही बहस पर उनका क्या कहना है तो उन्होंने कहा, ''विराट कोहली सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं, क्या वह इस समय आईपीएल में नहीं हैं?'' उन्होंने कहा, ''वह काफी अच्छे खिलाड़ी हैं।

लंगड़ाते हुए मैदान से बाहर निकले धोनी, अगला मैच खेलने पर संशय

मुंबई। शुक्रवार को आईपीएल में चेन्नई सुपर किंग्स के सामने सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ खेलेगी। दोनों टीमें हैदराबाद के राजीव गांधी इंटरनेशनल स्टेडियम में आमने-सामने होंगी लेकिन महेन्द्र सिंह धोनी सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ खेलने पर संशय छाया हुआ है। बता दें कि दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मुकाबले में धोनी को लंगड़ाते हुए मैदान से बाहर जाते देखा गया। इसके बाद ऐसा माना जा रहा है कि सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ कैप्टन कूल प्लेइंग इलेवन से बाहर हो सकते हैं। मालूम हो कि दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ मुकाबले में महेन्द्र सिंह धोनी ने ताबड़तोड़ पारी खेली। कैप्टन कूल ने 16 गेंदों पर 37 रन नॉटआउट बना डाले।

आईपीएल में 200 मैच खेलने वाले 10वें खिलाड़ी बने रविचंद्रन अश्विन

एजेंसी ▸▸ मुंबई

इंडियन प्रीमियर लीग 2024 के 14वें मैच में राजस्थान रॉयल्स ने मुंबई इंडियंस (MI) को 6 विकेट से हराते हुए अपना लगातार तीसरा मैच जीता। ये मुकाबला आरआर के रविचंद्रन अश्विन के लिए भी खास रहा।

दरअसल, मुंबई के वानखेड़े स्टेडियम में खेला गया ये मुकाबला उनके आईपीएल करियर का 200वां मैच रहा। हालांकि वह इस मैच में कोई विकेट नहीं ले सके।

सबसे ज्यादा मैच का रिकॉर्ड धोनी के नाम

भारत की प्रतिष्ठित लीग में सीएसके के महेंद्र सिंह धोनी (253) ने सर्वाधिक मैच खेले हैं। उनके अलावा दिनेश कार्तिक (245), रोहित शर्मा (246), विराट कोहली (240), रविंद्र जडेजा (229), शिखर धवन (220), सुरेश रैना (205), रॉबिन उथप्पा (205) और अम्बाती रायडू (204) ऐसा कर चुके हैं। बता दें कि अश्विन ने 2009 में अपना पहला आईपीएल मैच खेला था। अश्विन आईपीएल इतिहास के 10वें ऐसे खिलाड़ी बने हैं, जिन्होंने लीग में 200 मैच खेले हैं।

5 टीमों से खेल चुके हैं अश्विन

अश्विन आरआर से पहले चेन्नई सुपरकिंग्स, दिल्ली कैपिटल्स, पंजाब किंग्स और राइजिंग पुणे सुपरजायंट्स की ओर से खेल चुके हैं। उन्होंने सीएसके की जर्सी में 24.22 की औसत के साथ 90 विकेट अपने नाम किए थे। DC की ओर से उन्होंने 36.10 की औसत से 20 विकेट चटकाए थे। इसके अलावा पीबीकेएस और आरपीएस से उन्होंने क्रमशः 25 और 10 विकेट लिए थे। आरआर की ओर से उन्होंने 27 विकेट लिए हैं।

5वें सबसे ज्यादा विकेट चटकाए

अश्विन ने 18 अप्रैल, 2009 को मुंबई इंडियंस के खिलाफ अपने आईपीएल करियर का आगाज किया था। उन्होंने 200 मैचों में 29.03 की औसत और 7.03 की इकॉनमी रेट से 172 विकेट अपने नाम किए हैं। उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 4/34 विकेट का रहा है। वह लीग में फिलहाल 5वें सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। दूसरी तरफ बल्लेबाजी में उन्होंने 1 अर्धशतक की मदद से 759 रन बनाए हैं।

आईपीएल में रिटायर आउट होने वाले पहले खिलाड़ी

आईपीएल 2022 में अश्विन ने एलएसजी के खिलाफ रिटायर आउट होने का फैसला किया था। अश्विन 19वें ओवर की 2 गेंद होने के बाद अचानक मैदान छोड़कर चले गए। नियमों के मुताबिक, वह रिटायर आउट हुए और रियान पराग बल्लेबाजी के लिए आए थे। अश्विन जानते थे कि रियान तेजी से रन बनाने में सक्षम हैं और उन्हें मौका देना टीम के हित में होगा। वह आईपीएल इतिहास में रिटायर आउट होने वाले पहले खिलाड़ी बने थे।

बेमिसाल रहा है अश्विन का टी-20 करियर

अश्विन का टी-20 क्रिकेट करियर बेमिसाल रहा है। उन्होंने 312 टी-20 मैच खेले हैं, जिसमें लगभग 26 की औसत और 7 की इकॉनमी रेट के साथ 302 विकेट लिए हैं। इस बीच उनका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 8 रन देते हुए 4 विकेट लेना रहा है। वह टी-20 प्रारूप में 4 बार 4 विकेट हॉल ले चुके हैं। वह घरेलू क्रिकेट में तमिलनाडु क्रिकेट टीम का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। बल्लेबाजी में उन्होंने 1,100 से अधिक रन बनाए हैं।

आईपीएल : मयंक यादव ने चार ओवर में 14 रन देकर झटके तीन विकेट

लखनऊ के गेंदबाजों ने किया कमाल, बेंगलुरु को 28 रनों से हराकर दर्ज की दूसरी जीत

एजेंसी ▸▸ बेंगलुरु

इंडियन प्रीमियर लीग 2024 के 15वें मैच में लखनऊ सुपर जायंट्स ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु को 28 रन से हराते हुए इस सीजन में अपनी दूसरी जीत दर्ज की है। एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में जीत के लिए मिले 182 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए आरसीबी की टीम 153 रन पर ही सिमट गई।

यह मौजूदा सीजन में आरसीबी की तीसरी हार है। आरसीबी के लिए महिपाल लोमरोर ने सबसे ज्यादा 33 रन का योगदान दिया। एलएसजी के लिए मयंक यादव ने चार ओवर में 14 रन देकर तीन विकेट लिये।

एलएसजी ने इस तरह से दर्ज की जीत

एलएसजी से क्विंटन डिकॉक ने अर्धशतक (81) लगाया। उनके अलावा निकोलस पूरन ने 21 गेंदों में 40* रन बनाते हुए टीम को 181/5 के स्कोर तक पहुंचाया। जवाब में आरसीबी ने पॉवरप्ले के बाद तक 48 रन बनाए और इस बीच विराट कोहली (22), फाफ डु प्लेसिस (9) और ग्लेन मैक्सवेल (0) के विकेट गंवाए। मुश्किल घड़ी में रजत पाटीदार (29) और महिपाल लोमरोर ने संघर्ष किया लेकिन एलएसजी की दमदार गेंदबाजी के चलते आरसीबी लक्ष्य हासिल नहीं कर सकी।

मयंक यादव

मयंक ने अपनी गति से फिर किया कमाल

आरसीबी के खिलाफ मयंक यादव ने अपनी गति का कहर बरपाया। उन्होंने मैक्सवेल को खाता भी नहीं खोलने दिया। इसके बाद उन्होंने कैमरून ग्रीन को बोल्ड करते हुए अपनी दूसरी सफलता हासिल की। उन्होंने अपने आखिरी ओवर में पाटीदार का विकेट लिया। इस 21 वर्षीय तेज गेंदबाज ने अपने 4 ओवर में सिर्फ 14 रन देते हुए 3 प्रमुख विकेट हासिल किए। उन्होंने 156.7 किमी/घंटा की रफ्तार से गेंद की, जो इस सीजन की सबसे तेज गेंद है।

16वीं बार शून्य पर आउट हुए मैक्सवेल

मैक्सवेल 16वीं बार आईपीएल में शून्य पर आउट हुए हैं। वह लीग इतिहास में दूसरे सबसे ज्यादा बार बिना खाता खोले आउट होने वाले बल्लेबाज बने हैं। उनसे आगे सिर्फ दिनेश कार्तिक और रोहित शर्मा हैं, जो 17-17 बार शून्य पर आउट हुए हैं।

चिन्नास्वामी स्टेडियम में कोहली का 100वां मैच

कोहली का यह चिन्नास्वामी स्टेडियम में 100वां टी-20 मैच रहा। वह किसी एक मैदान पर 100 टी-20 मैच खेलने वाले पहले भारतीय बने हैं। उन्होंने यहां पर 97 पारियों में 3,298 रन बनाए हैं। इस बीच वह 14 बार नाबाद भी रहे हैं। कोहली ने इस मैदान पर 4 शतक और 25 अर्धशतक लगाए हैं। वह इस मैदान पर सर्वाधिक रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं।

स्कोर बोर्ड

लखनऊ	रन	गेंद	4	6
क्विंटन डिकॉक का डागर बो टॉप्ली	81	56	8	5
लोकेश राहुल का डागर बो मैक्सवेल	20	14	0	2
देवदत्त पडिक्कल का रावत बो सिराज	06	11	0	0
स्टोइनिस का डागर बो मैक्सवेल	24	15	1	2
निकोल्स पूरन नाबाद	40	21	1	5
आयुष बडोनी का डुप्लेसिस बो दयाल	00	03	0	0
कृणाल पंड्या नाबाद	00	0	0	0

अतिरिक्त : 10, कुल योग: 20 ओवर में पांच विकेट पर 181 रन
विकेट पतन: 1-53, 2-73, 3-129, 4-143, 5-148
गेंदबाजी : टॉप्ली 4-0-39-1, दयाल 4-0-24-1, सिराज 4-0-47-1, मैक्सवेल 4-0-23-2, डागर 2-0-23-0, ग्रीन 2-0-25-0

बेंगलुरु	रन	गेंद	4	6
कोहली का पडिक्कल बो सिद्धार्थ	22	16	2	1
फाफ डु प्लेसिस रन आउट	19	13	3	0
रजत पाटीदार का पडिक्कल बो यादव	29	21	2	2
ग्लेन मैक्सवेल का पूरन बो मयंक	00	02	0	0
कैमरून ग्रीन बो मयंक	09	09	1	0
अनुज रावत का पडिक्कल बो स्टोइनिस	11	21	0	0
लोमरोर का पूरन बो यश ठाकुर	33	13	3	3
कार्तिक का राहुल बो नवीन उल हक	04	8	0	0
मयंक डागर रन आउट	00	01	0	0
रीस टॉप्ली नाबाद	03	06	0	0
सिराज का पूरन बो नवीन उल हक	12			

अतिरिक्त : 11, कुल योग: 19.4 ओवर में 153/10 रन
विकेट पतन:1-40, 2-42, 3-43, 4-58, 5-94, 6-103, 7-136 , 8-137, 9-138
गेंदबाजी : एम सिद्धार्थ 3-0-21-1, कृणाल 1-0-10-0, नवीन उल हक 3.4-0-25-2, मयंक 4-0-14-3, बिश्नोई 3-0-33-0, यश ठाकुर 4-0-38-1, सटोइनिस 1-0-9-1

छठे सबसे तेज 3,000 आईपीएल रन वाले बल्लेबाज बने डिकॉक

डिकॉक आईपीएल में 3,000 रन का आंकड़ा छूने वाले छठे सबसे तेज बल्लेबाज (पारियों में) बने हैं। उन्होंने 99 पारियों में ये मुकाम हासिल किया है। उनसे कम पारियों में क्रिस गेल (75), केएल राहुल (80), जोस बटलर (85), डेविड वार्नर (94) और डु प्लेसिस (95) ने ये मुकाम हासिल किया है। ये डिकॉक की आईपीएल 2024 में लगातार दूसरी 50+ की पारी है। उन्होंने पिछले मैच में पीबीकेएस के विरुद्ध 54 रन बनाए थे।

खास खबर

हम कभी हार नहीं मानते, संघर्ष करते रहेंगे : हार्दिक पंड्या

मुंबई। मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पंड्या ने शुक्रवार को कहा कि पूर्व चैम्पियन टीम हार नहीं मानेगी और हार की हैट्रिक के बावजूद मौजूदा आईपीएल में संघर्ष जारी रहेगा। हार्दिक ने एक्स पर पोस्ट किया इस टीम के बारे में आपको एक बात पता होनी चाहिये। हम हार नहीं मानते। हम संघर्ष जारी रखेंगे। हौसला बना रहेगा।'' बता दें कि कप्तान के तौर पर हार्दिक के कुछ फैसलों की भी आलोचना हुई है। मसलन जसप्रीत बुमराह को नयी गेंद नहीं सौंपना या खुद टिम डेविड के बाद बल्लेबाजी के लिये उतरना। रोहित शर्मा की जगह मुंबई इंडियंस का कप्तान बनाये जाने के बाद से हार्दिक को प्रशंसकों का आक्रोश झेलना पड़ रहा है। पहले दो मैचों में दर्शकों ने उनकी हूटिंग की और वानखेड़े स्टेडियम पर मुंबई के इस सत्र के पहले मैच में भी उन्हें इसका सामना करना पड़ा।

अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाजों के साथ अभ्यास शिविर की मांग

__रोहतक।__ राष्ट्रीय जूनियर महिला मुक्केबाजी कोच गीता चानू का मानना है कि भारत में खेल के विकास के लिये अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाजों के साथ एक महीने का अभ्यास शिविर लगाया जाना चाहिये। चानू ने कहा कि उजबेकिस्तान, कजाखस्तान और तुर्कमेनिस्तान जैसे देश विभिन्न आयुवर्ग के लिये साथ में अभ्यास और प्रतिस्पर्धा शिविर लगाते हैं। इससे कम उम्र में ही उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलने जैसा अनुभव मिल जाता है। उन्होंने कहा हमारे खिलाड़ी बहुराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में ही अंतरराष्ट्रीय मुक्केबाजों का सामना करते हैं।'' भारतीय मुक्केबाजी महासंघ ने यहां जूनियर लड़के और लड़कियों के लिये भारतीय खेल प्राधिकरण की जूनियर मुक्केबाजी अकादमी में शिविर का आयोजन किया था।

टी20 वर्ल्ड कप से पहले इंग्लैंड को झटका, बेन स्टोक्स नहीं खेलेंगे, खुद नाम लिया वापस

एजेंसी ▸▸ नई दिल्ली

टी20 वर्ल्ड कप से पहले ही इंग्लैंड को बड़ा झटका लगा है। बेन स्टोक्स जून-जुलाई में होने वाले टी20 विश्व कप में नहीं खेलेंगे। उन्होंने खुद सेलेक्शन के लिए अपना नाम वापस ले लिया है। इंग्लैंड क्रिकेट टीम मैनेजमेंट ने ये जानकारी दी।

आईसीसी मेंस टी20 विश्व कप 2024 वेस्टइंडीज और अमेरिका के 9 शहरों में 1 से 29 जून तक खेला जाएगा। बता दें कि स्टोक्स ने पिछले टी20 विश्व कप के बाद से सिर्फ़ दो टी20 खेले हैं और यह दोनों ही मैच उन्होंने आईपीएल 2023 में चेन्नई सुपर किंग्स के लिए खेले थे। हालांकि, स्टोक्स ने इस साल आईपीएल से भी अपना नाम वापस ले लिया था।

मैं बेहतर ऑलराउंडर बनने की कोशिश कर रहा : स्टोक्स

ईसीबी ने स्टोक्स के हवाले से उनका एक बयान जारी किया है, जिसमें स्टोक्स ने कहा है, मैं हर फॉर्मेट में ख़ुद को ऑलराउंडर के तौर पर तैयार करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा हूं। आईपीएल और टी20 विश्व कप से बाहर होना इस लक्ष्य को हासिल करने में मेरी मदद करेगा।

वर्ल्ड कप विजेता टीम के हिस्सा रहे

स्टोक्स 2022 में टी20 वर्ल्ड कप जीतने वाली इंग्लैंड क्रिकेट टीम का हिस्सा थे। उन्होंने फाइनल में पाकिस्तान के खिलाफ नाबाद 52 रन की पारी खेली थी और विनिंग रन भी उनके बल्ले से ही निकला था। तब इंग्लैंड ने मेलबर्न में पाकिस्तान को 5 विकेट से हराया था।

4 जून को अपना पहला मैच खेलेगी इंग्लिश टीम

इस साल टी-20 विश्व कप में 20 टीमें हिस्सा लेंगी, जिसकी शुरुआत 1 जून से होनी है। इंग्लिश टीम 4 जून को स्कॉटलैंड के विरुद्ध मैच के साथ अपने अभियान का आगाज करेगी। इंग्लैंड को ग्रुप-बी में रखा गया है, जहां उनके साथ ऑस्ट्रेलिया, नामीबिया, स्कॉटलैंड और ओमान हैं। जोस बटलर के नेतृत्व में इंग्लैंड की टीम अपना तीसरा खिताब जीतना चाहेगी। बता दें कि 2010 और 2022 में इंग्लिश टीम विजेता बन चुकी है।

चैम्पियंस लीग टी-20 टूर्नामेंट फिर होगा शुरू

बात कर रहे भारत, आस्ट्रेलिया और इंग्लैंड बोर्ड

मुंबई। भारत, आस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के क्रिकेट बोर्ड दस साल पहले बंद हो चुकी चैम्पियंस लीग क्लब टी20 चैम्पियनशिप को फिर शुरू करने के लिये आपस में बातचीत कर रहे हैं। आखिरी बार चैम्पियंस टी20 लीग का आयोजन 2014 में हुआ था जब चेन्नई सुपर किंग्स ने कोलकाता नाइट राइडर्स को हराकर खिताब जीता था। उस समय भारत से तीन, आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका से दो-दो और पाकिस्तान, वेस्टइंडीज और न्यूजीलैंड से एक एक टीम ने इसमें भाग लिया था।

इसके लिए विंडो बनाना बड़ी चुनौती : सीईओ
क्रिकेट विक्टोरिया के सीईओ निक कमिंस ने कहा कि अति व्यस्त क्रिकेट कैलेंडर में इसके लिये विंडो बनाना सबसे बड़ी चुनौती है। हो सकता है कि पहली चैम्पियंस लीग महिला क्रिकेट में हो जिसमें डब्ल्यूपीएल, द हंड्रेड और महिला बिग बैश लीग की टीमें खेलेंगी।

हरमनप्रीत सिंह की कप्तानी वाली टीम बोली- हम काफी उत्साहित

ओलंपिक की तैयारी के लिए पांच मैचों की सीरीज खेलने हॉकी टीम ऑस्ट्रेलिया रवाना

एजेंसी ▸▸ नई दिल्ली

भारतीय पुरूष हॉकी टीम पेरिस ओलंपिक की तैयारी के लिए 6 अप्रैल से शुरू हो रही पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला खेलने आस्ट्रेलिया रवाना हो गई है। हरमनप्रीत सिंह की कप्तानी वाली टीम सोमवार की रात रवाना हुई। बता दें कि भारतीय टीम ने हाल ही में भुवनेश्वर में एफआईएच प्रो-लीग के चार में से तीन मैच जीते थे। 6 अप्रैल को पहले मैच के बाद सात, 10, 12 और 13 अप्रैल को मैच होने हैं।

हमें मिलेगा सुधार का मौका, क्षमता पर पूरा भरोसा कप्तान हरमनप्रीत ने रवानगी से पहले कहा कि इस दौरे को लेकर हम काफी उत्साहित हैं, इससे हमें पेरिस ओलंपिक से पहली अपनी ताकत और कमजोरियों का पता चलेगा और सुधार का मौका भी मिलेगा। वहीं, उपकप्तान हार्दिक सिंह ने कहा कि हम अपने कौशल और रणनीति को निखाारने के लिये एक टीम के रूप में काफी मेहनत कर रहे हैं। हमें अपनी क्षमता पर भरोसा है। हमें यकीन है कि प्रदर्शन अच्छा होगा।

दूसरा टेस्ट: बांग्लादेश को जीत के लिए चाहिए 243 रन, श्रीलंकाई टीम की झोली में टेस्ट जाना तय

श्रीलंका के गेंदबाजों के नाम रहा चौथा दिन, धड़ाधड़ गिरे विकेट

एजेंसी ▸▸ चटगांव

चटगांव टेस्ट में श्रीलंका क्रिकेट टीम ने जीत की ओर कदम बढ़ा लिया है। बांग्लादेश क्रिकेट टीम ने जीत के लिए मिले 511 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए अपनी दूसरी पारी में 7 विकेट खोकर 268 रन बना लिए हैं। चौथे दिन के खेल की समाप्ति तक तैजुल इस्लाम (10) और मेहदी हसन मिराज (44) क्रीज पर सुरक्षित हैं।

बांग्लादेश को जीत के लिए 243 रन की दरकार है। लगातार गिर रहे विकेटों के बीच मेहदी हसन ने अपना संघर्ष जारी रखा है। वह 49 गेंदों पर 44 रन बनाकर क्रीज पर बने हुए हैं। श्रीलंका से लाहिरू कुमारा, प्रभात जयसूर्या और कामिंदु मेंडिस ने 2-2 विकेट लिए हैं।

इस देश में भारत का 1 हजार रुपए 5 लाख के बराबर, पर्यटन के लिए है बेस्ट स्थान

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

अगर आपके पास विदेश घूमने के लिए ज्यादा बजट नहीं है तो चिंता मत कीजिए। आज हम आपको एक ऐसे खूबसूरत देश के बारे में बताने वाले हैं, जहां जाते ही आपका एक हजार भारतीय रुपया 5 लाख में बदल जाएगा। दुनिया में कई ऐसे देश हैं जहां घूमने का सपना सब देखते हैं। हम जिस देश की बात कर रहे हैं वो भी बेहद खूबसूरत है। इस देश का कल्चर इतना पुराना है कि आप सोच भी नहीं सकते। दरअसल, हम ईरान की बात कर रहे हैं। ईरान में इस वक्त एक भारतीय रुपये की कीमत 507.22 ईरानियन रियाल है। यानी अगर आपके पास एक हजार भारतीय रुपया है तो वहां जाते ही ये पांच लाख ईरानियन रियाल में बदल जाएगा।

अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण हालत खराब

ईरान की हालत अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण इतनी खराब हुई। दरअसल, अमेरिका ने इस देश पर कई तरह के आर्थिक प्रतिबंध लगाए हुए हैं। यही वजह है कि इस देश की आर्थिक हालत बेहद खराब है। बता दें अगर आप ईरान डॉलर लेकर जा रहे हैं तो आपको सावधान हो जाना चाहिए। दरअसल, ईरान में डॉलर रखना जुर्म है। अगर आपके पास वहां डॉलर मिलता है तो आपको इसके लिए सजा हो सकती है।

50 हजार में लग्जरी तरीके से घूम सकते

अगर आप ईरान घूमने जा रहे हैं तो सिर्फ 50 हजार रुपये में लग्जरी तरीके से घूम सकते हैं। इतने पैसे में आप वहां के फाइव स्टार होटल में रुक कर एक से बढ़ कर एक चीजें खा कर और ढेर सारी शॉपिंग कर के भारत वापिस आ सकते हैं। ईरान की मिठाइयां और वहां के सूखे मेवे पूरी दुनिया में लोकप्रिय हैं। इसके अलावा आपको ईरान में एक से बढ़ कर एक एंटीक चीजें मिल जाएंगी, जिन्हें भारत लाकर आप अपने घर की शोभा बढ़ा सकते हैं।

भूपेश के निर्वाचन के खिलाफ़ हाईकोर्ट में याचिका

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बिलासपुर

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के निर्वाचन को गलत बताते हुए हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की गई है। सामाजिक कार्यकर्ता अमोल मालुसारे और निशा देशमुख ने ये याचिका दायर की है। याचिका में फिलहाल कुछ सुधार किये जाने के बाद इस पर हाईकोर्ट की सिंगल बेंच सुनवाई करेगी।

पिछले साल बीएसपी टाउनशिप में लीज पर मकान लेकर रह रहे 4500 हितग्राहियों को मालिकाना हक़ देने की घोषणा पूर्व सीएम ने कर दी थी। इससे इन मकानों में 21 साल से रह रहे निवासियों को मालिकाना हक मिल जाता। लेकिन

याचिकाकर्ता ने बघेल की इस घोषणा को पूर्णतः नियम विरूद्ध बताते हुए उन्हें नोटिस भेज कर स्पष्टीकरण माँगा था। हालांकि, उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया। जिसके बाद कई जगह पर इस नोटिस को देते हुए उनके खिलाफ कार्रवाई की मांग उठाई गई। लेकिन बघेल पर कार्रवाई नहीं हुई थी, उस वक्त वे मुख्यमंत्री पद पर थे।

शराब घोटाला केस में अरविंद सिंह को हाईकोर्ट से जमानत

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ में करीब 2 हजार करोड़ रुपए के शराब घोटाले के केस में बिलासपुर हाईकोर्ट ने कारोबारी अरविंद सिंह को जमानत दे दी है।

मंगलवार को जस्टिस पीपी साहू की बेंच ने यह फैसला दिया है। इससे पहले आरोपी अनवर ढेबर को हाईकोर्ट ने जमानत दी थी। ईडी ने लंबी जांच के बाद उन्हें हिरासत में लिया था। कारोबारी अरविन्द सिंह की तरफ से सीनियर एडवोकेट राजीव श्रीवास्तव ने बहस करते हुए कहा कि यह पूरा मामला आईटी रेड के आधार पर ईडी ने की है, जिसमें मनी लॉन्ड्रिंग केस नहीं बनता। उन्होंने यह भी कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में पहले ही स्टे दे दिया है। वहीं ईडी ने भी केस में चालान पेस कर दिया है। ऐसे में याचिकाकर्ता को जेल में रखना उचित नहीं है। यह संवैधानिक अधिकारों का हनन है। सभी पक्षों को सुनने के बाद हाईकोर्ट ने अरविन्द सिंह की जमानत याचिका स्वीकार कर लिया है।

ये है दुनिया का सबसे गरीब देश, दिनभर काम करने के बाद मिलती है नाममात्र सैलरी

नई दिल्ली। दुनिया में कई ऐसे देश हैं, जहां पर गरीबी है। लेकिन कुछ देश तो ऐसे हैं, जहां पर सच में लोग खाने-पीने के लिए तरसते हैं। इन देशों में दिनभर काम करने के बावजूद नाम मात्र की सैलरी मिलती है। बता दें कि पूर्वी अफ्रीका के बुरंडी की आबादी तकरीबन 1 करोड़ 20 लाख है। लेकिन इस देश में 85 प्रतिशत से अधिक लोग गरीबी का जीवन जी रहे हैं। यहां पर आम आदमी के पास अच्छे से खाने तक की सुविधा नहीं है। जानकारी के मुताबिक गरीबी की स्थिति ये है कि अधिकांश परिवार महीना यहां पर 1 हजार भी नहीं कमा पाते हैं। बता दें कि पूर्वी अफ्रीका में स्थित बुरुंडी में अधकिांश लोगों की आजीविका का साधन कृषि है। लेकिन खेती से भी इन्हें इतना पैसा नहीं मिल पाता कि अपने लिए बुनियादी जरूरतों को पूरा कर सके।

अजीब परंपरा

उत्तरी नामीबिया में पाई जाती है हिम्बा जनजाति

सुंदर दिखने के लिए इस जनजाति की महिलाएं नहाती है धुंए से...

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

आज भी दुनिया भर में कई लोग ऐसे हैं जो अपने सदियों पुराने रीति-रिवाजों के आधार पर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। ऐसे लोगों को आदिवासी या आदिवासी कहा जाता है। आदिवासी सिर्फ हमारे देश में ही नहीं बल्कि दुनिया के दूसरे देशों में भी पाए जाते हैं। आज हम आपको अफ्रीकी देश नामीबिया की एक जनजाति के बारे में बताने जा रहे हैं। इसके बारे में जानकर आप जरूर दंग रह जाएंगे। क्योंकि इस जनजाति के लोग उन नियमों का पालन करते हैं, जिन्हें हमारे समाज में हीनभावना के रूप में देखा जाता है। दरअसल, हम बात कर रहे हैं नामीबिया में पाई जाने वाली हिम्बा जनजाति की।

यह जनजाति उत्तरी नामीबिया में पाई जाती है। ओवाहिम्बा और ओवाज़िम्बा जनजातियां उत्तरी नामीबिया के कुनेने और ओमुसाती क्षेत्रों में पाई जाती हैं। जिन्हें हिम्बा जनजाति के नाम से भी जाना जाता है।

50 हजार बची है आबादी

इस जाति के लोग एक ऐसी संस्कृति का पालन करते हैं, जिसे किसी भी सभ्य समाज में स्वीकार नहीं किया जा सकता है। बता दें कि अब हिम्बा जनजाति की केवल 50 हजार आबादी ही बची है। आदिवासी लोग गाय पालते हैं और महिलाएं अपना दिन बच्चों की देखभाल के साथ-साथ गाय की देखभाल और घर के अन्य कामों में बिताती हैं। जब पुरुष शिकार करने जाते हैं और कभी-कभी शिकार के चक्कर में कई-कई दिनों तक घर नहीं आते हैं।

पालतू जानवर संपत्ति

इन खानाबदोशों की संपत्ति उनके पालतू जानवरों द्वारा निर्धारित की जाती है। उसके पास जितने ज्यादा पालतू जानवर होंगे, वह उतना ही अमीर होगा। इस जाति के लोग एक से अधिक बार विवाह करते हैं। यहां लड़कियों की शादी बहुत ही कम उम्र में उनके पिता द्वारा चुने गए लड़के से कर दी जाती है।

लाल रंग के लिए जई के पेस्ट का इस्तेमाल

इस जनजाति की महिलाओं को खूबसूरत दिखने का बहुत शौक होता है। वहीं पुरुष भी चाहते हैं कि उनकी पत्नियां खूबसूरत दिखें। इस जाति की महिलाएं अपनी सुंदरता को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए नहाती नहीं हैं। इसके बजाय, वह अपने शरीर को धुएं से भूनती है। इन लोगों का मानना है कि नहाने से शरीर से जरूरी तत्व निकल जाते हैं। धूम्रपान करते समय शरीर की सुंदरता बढ़ जाती है। इन लोगों की त्वचा का रंग लाल मिट्टी जैसा होता है, इसलिए यहां की महिलाएं लाल रंग के लिए जई के पेस्ट का इस्तेमाल करती हैं। इससे उनकी त्वचा धूप और कीड़ों के काटने से बची रहती है और लाल भी हो जाती है। इस जनजाति का मानना है कि लाल रंग "पृथ्वी और रक्त" का प्रतीक है।

मुर्गाबाजार में हफ्ता वसूली करने गए हवलदार की ग्रामीणों ने की पिटाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| जगदलपुर

- एसपी ने हवलदार को किया सस्पेंड, विभागीय जांच शुरू

मुर्गाबाजार में हफ्ता वसूली करने गए हवलदार द्वारा बुजुर्ग ग्रामीण की पिटाई के बाद आक्रोशित लोगों ने उसकी जमकर पिटाई कर दी। मामला होली से एक दिन पूर्व का बताया जा रहा है। पिटाई का वीडियो वायरल होने के बाद एसपी ने मामले को गंभीरता से लेते हुए हवलदार को सस्पेंड कर दिया है।

जानकारी के मुताबिक मामला बस्तर थाना क्षेत्र के बागबहार साप्ताहिक बाजार का है। 24 मार्च को

यहां मुर्गाबाजार के दौरान बस्तर थाना में पदस्थ प्रधान आरक्षक लक्ष्मीनाथ बघेल द्वारा सिविल ड्रेस में आकर बुजुर्ग ग्रामीण से रुपए की मांग की जा रही थी। इसी दौरान दोनों में बहस हुई और हवलदार ने ग्रामीण की पिटाई शुरू कर दी।

मुर्गा बाजार में लगता है लाखों का दांव

जिले के लगभग सभी इलाकों में मुर्गा लड़ाई आदिवासी संस्कृति का हिस्सा रहा है। पहले शौकिया खेले जाने वाले मुर्गा बाजार में अब लाखों का दांव हार-जीत के लिए लगाया जाता है। जिले के लगभग सभी साप्ताहिक हाटबाजार में मुर्गा बाजार भी सजता है। जहां मुर्गे के हार-जीत पर लाखों का दाव लगता है। वर्तमान में जिले के बड़ाजीं, लोहंडीगुडा, नगरनार, बकावंड, भानपुरी व बस्तर क्षेत्र के बाजारों में जमकर हफ्ता वसूली की जाती है।

पहाड़ की चोटी पर शानदार होटल, 60 हजार सीढ़ियां चढ़कर पहुंचते हैं मेहमान

नई दिल्ली। आपने दुनिया भर के कई अनोखे होटलों के बारे में सुना होगा। जहां अन्य होटलों से अलग सुविधाएं मिलेंगी। लेकिन आज हम आपको जिस होटल के बारे में बताने जा रहे हैं वह बाकी सभी होटलों से अलग है।

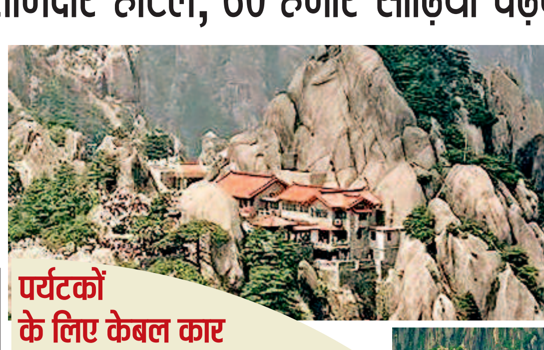

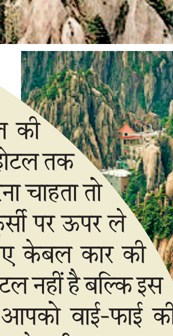

पर्यटकों के लिए केबल कार की सुविधा

इस होटल में आपको स्पा और स्विमिंग पूल की सुविधा भी मिलेगी। इतना ही नहीं, अगर कोई होटल तक पहुंचने के लिए सीढ़ियों का इस्तेमाल नहीं करना चाहता तो उसके लिए कुली की व्यवस्था है। जो उसे कुर्सी पर ऊपर ले जाता है। इतना ही नहीं यहां पर्यटकों के लिए केबल कार की सुविधा भी उपलब्ध है। यह कोई छोटा मोटा होटल नहीं है बल्कि इस होटल में 65 सुइट्स और कमरे हैं। इसमें आपको वाई-फाई की सुविधा मिलेगी। इस होटल तक पहुंचने की सबसे बड़ी समस्या यह है कि अगर आप सामान लेकर होटल में जाते हैं तो आपको अपना सामान अपने कंधों पर उठाना पड़ता है।

1830 मीटर की ऊंचाई

यह होटल जमीन पर नहीं बल्कि प्लेटफार्म पर बना है। वहां तक पहुंचने के लिए आपको 60,000 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। यह होटल चीन के येलो माउंटेन पर बना है। जेड स्क्रीन नाम का यह होटल फोर स्टार है। जेड स्टार होटल जमीन से 1830 मीटर की ऊंचाई पर बना है। शीर्ष पर पहुंचने के बाद, आप हैंगशान पर्वत श्रृंखला का सुंदर और शानदार दृश्य देख सकते हैं। यह होटल दुनिया का एकमात्र ऐसा होटल है, जो इतनी ऊंचाई पर बना है कि वहां तक पहुंचने के लिए लोगों को सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। आपको बता दें कि इतनी ऊंचाई पर होने के बावजूद भी इस होटल में हर तरह की लग्जरी सुविधाएं मौजूद हैं।

हरिभूमि कम्यूनिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक अनिल कुमार द्वारा हरिभूमि पब्लिकेशन्स, टिकरापारा, धमतरी रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़)-492001 से मुद्रित एवं हरिभूमि काम्पलेक्स, टिकरापारा, धमतरी रोड, रायपुर (छत्तीसगढ़)-492001 से प्रकाशित। प्रधान संपादक : डॉ. हिमांशु द्विवेदी, स्थानीय संपादक धनंजय वर्मा, संपादक (समन्वय) ब्रह्मवीर सिंह। RNI No. CHHHIN/2002/07457, फोन : 0771-4242222, e-mail:raipur@haribhoomi.com